

स्वभाव से अलौकिक

यीशु को आपके द्वारा जीवित रखना

मार्क और पैटी विर्कलर

@ प्रतिलिप्यधिकार १९९० मार्क विर्कलर द्वारा आईएसबीएन १-५६०४३-०६०-५

सारे अधिकार रक्षित। यह पुस्तक अमरिकी संयुक्त राष्ट्रों के प्रतिलिप्यधिकार न्यायों द्वारा सुरक्षित है। इस पुस्तक की न प्रतिलिपियां बनाई जाएं और न ही वाणिज्य सम्बंधि लाभ या फायदे के लिए दुबारा छापी जाए। ग्रंथ के छोटे प्रमाण या कोई पत्रे को निजी या सामूहिक पढाई के लिए प्रयोग करने में मनाही नहीं है। निवेदन करने पर अनुमति दी जाएगी। इस पुस्तक में जो पवित्रशास्त्र के वचनों का प्रयोग किया गया है, वह न्यू किंग जेम्स बाईबल @ १९८४ से लिए गए हैं। उपयोग के लिए अनुमति ली गयी है। पवित्रशास्त्र के वचनों में जो विषेश उच्चारण दिया गया है, वह उत्पादक द्वारा जोडा गया है।

डैस्टिनी इमेज पब्लिशर
पी. ओ. बाक्स ३१०
शिप्पन्सबर्ग पी. ए. १७२५७

"इस पीढी के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में बात करना।"

सारी दुनिया में बाँटने के लिए
यू. एस. ए. में छापा गया

पुस्तक पाने के लिए, यू. एस. ए. के अंदर बिना कर का नम्बर है -
१-८००-७२२-६७७४

यह छोटी पुस्तक दोनों लेखकों की मिली जुली मेहनत का नतीजा है। विचार और विशय मिल जुल कर की गयी पढाई और दैवी प्रकाशण का नतीजा है। अनुभव जो बताए गये हैं वह दोनों के लिए सामान्य हैं। सर्वनाम "मैं" का प्रयोग दोनों के विचारों की एकता को दर्शाता है। यह दोनों लेखकों द्वारा लिखी गयी पुस्तक "अबाईडिंग इन क्राईस्ट" (मसीह में वास करना) का आगे बढ़ाया हुआ और जोडा गया अंश है।

Contents

परिचय	- स्वभाव से अलौकिक
अध्याय एक	- नीच मनुष्य के लक्षण
अध्याय दो	- सच # १ - परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है
अध्याय तीन	- सच # २ - मैं एक बर्तन हूँ
अध्याय चार	- सच # ३ - अब मैं जीवित नहीं हूँ
अध्याय पाँच	- सच # ४ - मसीह मेरा जीवन है
अध्याय छः	- सच # ५ - मैं न्याय के लिए समर्पित हूँ
अध्याय सात	- सच # ६ - मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ
अध्याय आठ	- सच # ७ - मैं इस विश्वास में जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।
अध्याय नौ	- स्वभाव से अलौकिक जीवन बिताना
अध्याय दस	- बाईबल के कुछ चरित्रों के उदहारण, इन पाठों को सीखना
अध्याय ग्यारह	- वह कला जो जंगल में सीखी गयी
अध्याय बारह	- नए नियम को दुबारा पढ़ना
अध्याय तेरह	- एक नवीन अध्यात्मविध्या सम्बंधि डिब्बा या दैवी मुकाबले का अनुभव।
परिशिष्ट अ	- आप परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं।

Introduction

स्वभाव से अलौकिक

शुभ कामनाएँ, मित्रो। आज हम एक यात्रा पर जा रहे हैं। वह हमें कहां ले जाएगी, यह बताना कठिन है, क्योंकि मैं केवल बैठ कर आप लोगों को मेरी जीवन कथा का एक अंश बकाने जा रहा हूँ। मेरे पास कोई साफ रूपरेखा नहीं है। यह इस कारण है क्योंकि मेरे जीवन के ढाँचे का कोई साफ रूपरेखा नहीं है। इसे केवल जीया जा सकता है। मैं यह नहीं जानता की मेरा कहानी बताना स्वीकार किया जाएगा या मुझे रूपरेखा बनाकर उस में जीवन को डालना होगा। मुझे नहीं पता। क्यों न हम कोशिश करके पता लगाएँ?

मैं अपनी पूरी जीवन कथा, इस पुस्तक में नहीं बताऊँगा। परन्तु, मैं आप से वह मुख्य बात बताना चाहता हूँ, जो मैंने उस वक्त सीखी जब मैंने मसीही होने के २३ वर्ष जीए थे, एक बदले हुए जीवन के रूप में, या मसीह को उसका जीवन मेरे द्वारा जीने दिया बजाए मैं खुद जीवित रहूँ। मैंने बारह वर्ष तक एक मसीही जीवन जीया, इससे पहले की मैं इस सच को खोज पाता। उस समय "मैं" जी रहा था। इस बात से विचलित मत हो जाईए पर समझीए की मैं एक गैर मसीही था जो केवल धार्मिक कार्य करता था। मैंने १५ वर्ष की आयु में अपने जीवन को यीशु को सौंप दिया था। मैंने उस से कहा था की वह मेरा प्रभु और मुक्तिदाता बने और अपने बहाए हुए रक्त से मुझे साफ करे। मैं कठिनाई से मसीही जीवन जी रहा था और उसे संतुष्ट रखने की कोशिश कर रहा था।

जैसे की बाईबल ने मुझे कहा की मैं अपने दुश्मनों से प्रेम करूँ, तो मैं (मसीह की मदद से) बड़ी कठिनाई से ऐसा करना सीख रहा था। परन्तु, मैं इसे ठीक से नहीं कर पाता था चाहे मैं कितना ही कठिनाई से प्रार्थना क्यों न कर लूँ। मैं यह भेद नहीं बता पाता था की मैं बाईबल की कौन सी आज्ञा मान रहा हूँ। मैं यही संघर्ष, यही कामयाबी, यही नुकसान झेलता रहा। मुझे ऐसा नहीं लगा की मसीहत इतनी अलौकिक है। मैं कठिनाई से कोशिश करता रहा और परमेश्वर से मदद माँगता रहा और हम दोनों मिलकर उतनी ही दूर जाते थे जहाँ तक हम पहुँच सकते थे। मैं यह नहीं कह सकता की मैं अपने दुश्मनों से प्रेम करता था, परंतु मैंने कोशिश आवश्यक करी।

तब दैवी प्रेरणा मेरे हृदय में आने लगी। मैंने यह बात जान ली की अब "मैं" नहीं जी रहा हूँ। मैं सूली पर चढ़ चुका हूँ और अब मसीह जीवित है। इस बात को स्वीकार करना इतना कठिन था, क्योंकि आईने में तो मेरी छवि थी। मेरे मन को इस दैवी प्रेरणा को मानने में

करीब एक वर्ष लग गए की मैं एक बर्तन हूँ, जिस में कोई और रह रहा है। मैं एक बर्तन हूँ जिस में मसीह का जीवन है और मैं वह शाखा हूँ जिस से मय बनाई जाती है। मैं इस बात को मानते हुए जीवित हुआ की "मैं" जी रहा हूँ, परन्तु यह एक ब्रह्म था। यथार्थ में, शैतान जो की इस दुनिया की आत्मा है, मुझ पर काबू पा लिया था। क्योंकि मैं उतना परीक्षानी नहीं था, इसलिए मैं इस बात को मान कर बड़ा हुआ की "मैं" नियंत्रण रखता हूँ। क्योंकि मैं एक मसीह था, मैंने सोचा की "मैं" जी रहा हूँ और मसीह मेरे साथ है, और जो जीवन मैं जी रहा हूँ उस में मेरी सहायता कर रहा है।

फिर से सह एक ब्रह्म था, क्योंकि मसीह न केवल मेरे साथ मेरी मदद करने के लिए था, परन्तु वह मेरा जीवन बनने जा रहा था। "मैं" अब जीवित नहीं रहा। मैं उस में खो जाने वाला था। इतने उलझे शब्द। यह अच्छे धार्मिक बेमतलब के वाक्यों की तरह लग रहे थे। मेरे जीवन में इन का कुछ अर्थ नहीं था। मैंने आँखों में देखा, मैंने देखा की वहाँ कौन था। वहाँ मैं था, मार्क डब्ल्यू. विर्कलर। वहाँ यीशु नहीं था। इसलिए यह सब अच्छे धार्मिक सामान्य विवरण नहीं थे : सामान्य विवरण। यह मेरे हृदय में जलते दैवी प्रेरणा के अज्ञान नहीं थे, जो मेरा जीवन बदल देते। यह अनुभव नहीं थे। यह जीर्णता से कही गयी बातें थीं जो मेरे बीसवीं सदी के मसीह जीवन के लिए ठीक नहीं लग रही थी।

तब परमेश्वर ने उन्हें प्रकाशित किया। उन्होंने अपनी रौशनी को व्याकुल कर देने वाले बिल्कुल ही बेमतलब शब्दों पर डाला और मेरे जीने के तरीके को अंदर से बदल डाला। मैं अलौकिक शक्ति से भर कर अपनी क्षमता से अधिक जीवन जीने के लिए तैयार हो गया। मेरे पास अब कोई सीमा नहीं थी, परन्तु मैं सीमा रहित शक्ति का अनुभव करने लगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की योग्यता को अपने हृदय में अनुभव करने लगा। मैं स्वभाव से अलौकिक बन गया। मसीहत ने एक नया मोड़ लिया। पहले से अधिक सच लगने लगा। मैंने जब नया नियम दुबारा पढ़ी तो वह एक नयी पुस्तक लगने लगी। मैं पहली बार उसे खुली आँखों से देख रहा था और मैं जो पढ़ रहा था उस पर विश्वास नहीं कर पा रहा था।

यह पुस्तक आप को यही कहानी बताएगी की सह दैवी प्रकाशन मेरे जीवन में कैसे आया। यह उस व्यक्ति की कहानी है जो यह समझता था की वह जीवित है परन्तु परमेश्वर ने उसे कैसे बताया की वह मसीह के साथ सूली पर चढ़ चुका है और अब वह नहीं परन्तु मसीह जी रहा है। यह वह कहानी है जो धार्मिक विवरणों और शब्दों से आगे बढ़कर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में सच्चाई पाती है। यह बदले हुए जीवन की कहानी है। यह वह कहानी है जो हमें स्वभाव से अलौकिक में जीवित रहना बताती है। यह साक्षी है इस बात की की यीशु मसीह की कलीसीया होने के नाते हम मसीहत से भरे हुए हैं।

काश पढ़ते समय आप भी बदल जाएँ।

इस पुस्तक का प्रयोग कैसे करे

इस पुस्तक में हर अध्याय के अंत में विचार और विवाद तकने के लिए प्रश्न दिए गए हैं। मैं यह कहना चाहूंगा की आप सप्ताह में एक बार समूह में एकत्रित हो कर इस पुस्तक में से एक या दो अध्यायों पर मनन करें। यह समूह रविवार स्कूल शिक्षाग्रह, घरेलू समूह, स्त्रीयों व पुरुषों के समूह, बाईबल स्कूल शिक्षाग्रह, रविवार या बुधवार शाम में मिलने वाले आराधना सभाएं, हो सकती हैं। इसे पादरी रविवार सुबाह अपनी आराधनाओं के उपदेशों में क्रम के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। जो अध्याय पढ़ने हैं उन्हें सप्ताह से पहले बता दीजिए ताकी सब विवाद करने के लिए पहले से ही तैयार हो कर आएँ ताकी सच को अपने जीवनो में लागू कर सकें। जब आप एकत्रित हो तो प्रश्नों के द्वारा एक अच्छा और स्वस्थ विवाद उत्पन्न हो। आप अपने साथ एक नोट बुक रखीए। इस में पढ़ते समय जो आप के प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं उन्हें लिख सकें और यदि आप कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं तो उसे भी लिख लें।

मैं चाहता हूँ की जो समूह का नेता है, वह अध्याय के अंत में जो दिए गए हैं उन में से मुख्य बातों पर सब का ध्यान केंद्रित करते हुए, शाम का प्रारम्भ करें। हो सकता है वह उस बात पर दबाव डाले जो उसे प्रभावित करती है। वह बाद में बाकी लोगों के विचार भी पूछ सकता है की उन्हें क्या बात दैवी प्रकाशन लगी। यहाँ से आप प्रश्नों पर समूह के रूप में विवाद कर सकते हैं।

मैं प्रार्थना करता हूँ की यह समूह आप के सीखने के अनुभव को तीव्र बनाए, जब आप अनुभव करें की दूसरे लोग भी आप ही की तरहा गहरे आत्मिक मुकाबले में चल रहे हैं। आप की यात्रा के लिए शुभकामना।

1. नीच मनुष्य लक्षण

मैं बिस्तर में लेटा हुआ करवटें बदलता रहा पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। यदि मैं आज रात मर जाऊँ तो क्या, क्या मैं स्वर्गलोक जाऊँगा नहीं मैं जानता था की मैं नहीं जा सकता। मैं बैप्टिस्ट गिरजाघर इतने लम्बे समय से जा रहा था, की मुझे पता था की जिन लोगों ने यीशु को अपने हृदय में अपनाया है, वही स्वर्गलोक जाएँगे। और मैंने ऐसा नहीं किया था। अभी भी मैं अपने रास्ते पर ही चलना चाहता था। और उसकी राह पर चलने के लिए, इन सब को त्याग देना, मुझ से बहुत अधिक उम्मीद रखने के बराबर था। इसलिए मैं इस का विरोध वर्षों से करता आया हूँ, यह जानते हुए की यदी मैं मर जाऊँ तो सीधे नरक में जाऊँगा।

वह रात जब परमेश्वर ने मेरा पीछा किया :

परन्तु आज की रात मेरी रात थी। परमेश्वर ने मेरी ओर इशारा कर के अपनू दूतों से कहा होगा की, "जाओ और उस लडके को लेकर आओ। मुझे उसकी आवश्यकता है।" मैं जितनी ही करवटें बदल लूँ, मुझे नींद नहीं आ रही थी। एक विचार लगातार मेरे दिमाग में आता रहा, "यदि आज रात यह घर जल जाए तो क्या? मैं सीधे नरक में जाऊँगा।" मैं इस से पीछा नहीं छोड़ा पा रहा था। मुझे यकीन है की यह इस कारण होगा, क्योंकि शायद वह दूत मेरे कानों में इसे दोहरा रहा होगा।

आखिरकार, कुछ घण्टों के दूतों के दबाव से मैं तैयार हो गया और अपने कमरे से निकल कर नीचे आ गया। मेरे माता पिता एक गिरजाघर की सभा में गये हुए थे, सो मैं आराम कक्ष में एक कुर्सी पर बैठ गया की जब वे आएँगे, तो मैं उन्हें यह बता दूँगा की, "मैं अपना हृदय मसीह को दे रहा हूँ।"

जब मैंने बपतिस्मा लिया, उस समय मैं पंद्रह वर्ष का था और मैं सनातनी बैप्टिस्ट गिरजाघर से जुड गया। मैंने पश्चताप किया था। मेरा निर्णय दृढ था। यीशु मेरे जीवन का प्रभु था। मैं अब स्वर्ग की ओर दाऊँगा। मेरी आत्मा में मुझे शांति अनुभव हुई। मेरे प्राणों को शांति मिली। मुझे लगा की यह मेरा नया जन्म है। मैं परमेश्वर का पुत्र था।

आत्मिक उन्नति और पवित्रता की खोज :

मुझे एकदम यह इच्छा हुई की मैं अपने आप को परमेश्वर के वचन से भर लऊँ, और मैंने ऐसा ही किया। एक वर्ष के बाद, मैंने यह निर्णय लिया की मैं अपना सारा जीवन, सारा समय प्रचार सेवा में लगाऊँगा। अठारह वर्ष की आयु होते होते, रोचैस्टर, न्यू यार्क, में रौबर्ट्स वैसलीयन कालेज में प्रवेश पा लिया था। यहां पर मैंने पादरी बनने के लिए, चार वर्षों तक प्रशिक्षण पाया। मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को देना चाहता था। मैंने तीन वर्ष युवा पादरी की तरह काम किया और ग्रैडुएशन के बाद अपने गिरजाघर में पादरी की तरह कार्य करने लगा।

मेरा जीवन चलने लगा था। मैं हर रविवार के प्रचार करता, परमेश्वर के वचन में से नयी सच्चाईयों को खोजता, परमेश्वर को कैसे संतुष्ट किया जाए, उसकी सेवा कैसे की जाए, यह सब बताता। हर सप्ताह, मैं अपनी कलीसीया को इस बारे में बताता की वे और अधिक रूप में किस तरह परमेश्वर के लिए अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। हम ने पवित्रता और धार्मिकता, साक्षी और प्रार्थना और दुश्मनों से प्रेम के बारे में सीखा। मैंने दान देना, दस्वां अंश देना और दान दक्षिना कर आर्थिक मुक्ति कैसे पाना है, यह सब उन्हें सिखाया है। हम ने साक्षी समूह बनाए और घर घर जा कर प्रचार किया। हम ने सुबह सवेरे की प्रार्थना आयोजित की और कुछ दिन उपवास के लिए निश्चित किये। मैंने उन्हें सिखाया की मन में शुद्ध कैसे बनें, स्वयं के गुणों को पहचानना, नम्रता के सिद्धांत और परमेश्वर की प्रधानता की उन्नति। हमने सीखा की कैसे जीभ के पापों से मुक्ति पाना और यीशु की तरह बनना, निर्बलता से छुटकारा पाना। घर में मसीही जीवन कैसा हो और सही खाने की आदतों के बारे में भी, मैंने क्रम से पढाया। विश्वासी और न्याय, उदासीन्ता से छुटकारा, चंगाई पाना, मोक्ष, लालसा और व्यभीचार से छुटकारा पाना, आदी सब पढाया। सूची बढ़ती ही गयी।

बोझ भारी होने लगा :

फिर कुछ अजीब हुआ। एक दिन एक हादरी मेरे घर पर आया और मेरे पास बैठ कर उन्होंने कहा, "मार्क, मैं और उपदेश नहीं सुन सकता। जो बातें मुझे नहीं करनी हैं, उन्हें मैं जानता हूँ, पर उन्हें मैं करने से नहीं रोक पाता हूँ और यदी मैंने और अधिक जान लिया की मुझे क्या नहीं करना है, तो मैं और अधिक दोषी अनुभव करने लगूँगा की मैं कितने प्रकार से परमेश्वर को धुत्कार रहा हूँ। मैं उस की समस्या को समझ गया। मैं भी ऐसा ही अनुभव कर रहा था। मैं परमेश्वर के लिए जितना भी करूँवह कम था। पर मैं क्या कर सकता था? मैं एक प्रचारक था, और मुझे प्रचार करना ही था। मैं केवल इस कारण प्रचार करना बन्द नहीं कर सकता था की मेरा दुर्बल शरीर परमेश्वर की उन सब आज्ञाओं को नहीं मान पा रहा था, जिन्हें मैं वचन से खोज कर निकाल रहा था।

नहीं, मुझे प्रचार करना है। परन्तु कुछ तो बदलना चाहिए। बोझ भारी हो गया था। यदी मुझे अच्छा मसीही बनना है, तो मुझे कई बातों का ध्यान रखना होगा। इन सब बातों को याद रखना कठिन था। यदी मुझे वह बात याद आ जाती जिसे मुझे नहीं करना है तो मैं एकदम दोषी अनुभव करने लगता और तुच्छ बन जाता। यीशु ने कहा की उन का वस्त्र आसान और उन का बोझ हलका है, परन्तु मेरे लिए यह न तो आसान था और न ही हलका। मुझे याद आया की जब मैं पहली बार बचाया गया था, तो मुझे बहुत हलका अनुभव हुआ था। परन्तु जब मैं वह सब पढ़ने लगा की परमेश्वर मुझ से क्या उम्मीद रखता है, तो एक दम से सब कुछ भारी लगने लगा। हो सकता है की यीशु यह नहीं समझ सके की मेरे जैसे दुर्बल शरीर वालों के लिए जैसा लगता है वैसे जीवन आसान और हलका नहीं होता। या क्या मैं मसीहत को गलत समझ रहा था, जो आसान और हलका है, उसे भारी और कठिन बना रहा था? मैं सोचता रहा।

नीच मनुष्य लक्षण :

क्योंकि इस में कई बातें थी जिन्हें ध्यान में रखना होता है, इस कारण मसीहत एक बोझ लगने लगी। मैंने यह भी अनुभव किया की जब मैं उन बातों को करने लगा, जो परमेश्वर चाहता है की मैं करूँ, मेरा शरीर इस के विरोध में चिल्लाने लगा: "मुझे बना।" मैं कहता हूँ, "तुम ऐसा करोगे...." और एक दम से निर्जीव हो जाता।

उदहारण के लिए, मेरे दुश्मनों से प्रेम करने को ले लीजीए। कोई मुझ पर आक्रमण करता है (यह न समझते हुए की वह मेरी महानता थी, प्रेम, लगन या शुद्धता थी) मेरे विरुद्ध गलत अफवाह फैला कर। मेरी देह चिल्ला उठती, "ठीक है, श्री. परीपूर्ण, आप समझते हैं की आप इतने योग्य है, परन्तु मुझे कुछ कहने दो।" फिर युद्ध प्रारम्भ हो जाता। मैं अपने आप को यह याद दिलाता की परमेश्वर की आज्ञा यह कहती है की मुझे मेरे शत्रुओं से प्रेम करना है। मैं अपने चैहरे पर एक मुस्कुराहट लाता और कहता, "तुम इस बकवास से प्रेम करोगे, यदी इस बात से तुम मर भी जाओ, तौभी प्रेम करोगे।" अकसर, यह मुझे मार देता था। मेरा शरीर लडता था, चीखता, चिल्लाता था। क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अपनी महीमा से आशीशित किया है, तो मैं जीत जाता था और कम से कम ऊपरी रूप में प्रेम भर कर, दया के शब्द बोलता था। इसलिए, मरे हुए थे, क्योंकि मैंने उन से कहा था की, "तुम इस गुस्से में मर जाओगे।" इस का परिणाम यह हुआ की मैं भीतरी रूप से तो मर गया था, परन्तु, ऊपरी रूप से मैं प्रेम भरे शब्द कहता, और अच्छे कार्य करता। यह वह तरीका नहीं था, जिस पर

मसीहत कार्य करती है। जब मैंने याद किया तो मुझे याद आया की मुझे अपने भीतर, प्रेम, खुशी, शांति और तसल्ली अनुभव करनी है बजाए रुस्से और मौत के।

इच्छा आराधना के आमने सामने होना :

मेरी पत्नी ने मेरी स्थिती और गंभीर बना दिया। एक दिन पैटी ने मुझ से कहा, "मसीहत उन के लिए कार्य करती है जिनके पास कठोर इच्छा शक्ति हो। यह दुर्बल इच्छा शक्ति वालों के लिए नहीं कार्य करती।" आप जान लीजीए की पैटी की इच्छा शक्ति मुझ से दुर्बल लगती थी और वह अधिक शक करती थी और उदासीनता में डूब जाती थी और विपरीत विचारों से भर जाती थी बजाए इसके की वह इन सब को अपने अंदर दबा कर चकना चूर कर दे जैसे की मैं करता था। उस के इस वक्तव्य ने मुझे काट डाला। मुझे यह पता था की मसीहत सब के लिए कार्य करती है, चाहे वह दुर्बल इच्छा के हों या प्रबल इच्छा के हों।

व्याकुल होना :

अब मैं व्याकुल हो गया था, जो की अच्छा है, क्योंकि मैंने यह सीखा है की व्याकुलता, दैवी प्रेरणा की पहली सीडी है। क्या मसीहत की ओर मेरा रास्ता सही था? क्या यह मौलिक रूप में दोषी था? मैं यह मानता रहा की यह सच न हो, क्योंकि मैंने मसीही होने के दस वर्ष इसे बनाने में लगाएँ थे। मेरे दीवन का सार पौलुस की पुकार की तरह था जो रोमियों सात अध्याय में बनाया गया है।

क्योंकि जब हम शारीरिक थे तो पापों की अभिलाशायें जो व्यवस्था के द्वारा थी, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थी। अतः यदी मैं वही करता हूँ जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। इस प्रकार मैं यह व्यवस्था पाता हूँ की जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है, क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ। परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पडती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लडती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बंधन में डालती है, जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा आभागा मनुष्य हूँ, मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा। (रोमियों ७: १५, २०-२४)।

मैं इसी नीच मनुष्य के लक्षण पर पहुँचा था। अपने आप से लड रहा था। लगातार यह प्रयत्न कर रहा था की मैं अच्छा बना रहूँ। हमेशा यही काम करना चाहता था। भीतरी लड़ाई या भीतर से मरा हुआ अनुभव करता था, जिस में प्रेम, संतोष और शांति की कमी थी। मुझे पता था की मसीहत में इस से अधिक कुछ होना चाहिए। क्या यह हमेशा का जीवन था जिस के बारे में परमेश्वर ने बनाया था - मनुष्य लगातार संघर्ष करते हुए स्वयं से भीकरी रूप से लडता रहता है? यदी यही है, तो इसे दूसरों को समझना कठिन था। मैं किसी गैर मसीही को यह समझाते हुए पाता, "आप यीशु को अपना परमेश्वर और मुक्तिदाता हना लीजीए, और मेरी तरह भीतरी लड़ाई, दोष, परेशानी और हीनता से भर लीजीए।" वह यकीनन यही कहता, "नहीं, धन्यवाद, मेरे पास पहले से ही खुद की बहुत परेशानियां हैं।" इसलिए मैंने साक्षी देना छोड दिया क्योंकि मेरा अनुभव किसी और को देने लायक नहीं था। और मैंने कहा, "परमेश्वर मुझे बताईए की मैं क्या गलत कर रहा हूँ।"

दैवी प्रकाशण द्वारा पहचानना की मुक्ति पाते समय क्या हुआ :

परमेश्वर मेरे जीवन में सही पुस्तकें, अध्यापकों और अनुभव लाने लगा और आने वाले कुछ महीनों में मुझे सात सच समझा दिए, जिन्होंने मुझे दोष, नीचता, लड़ाई, बीतरी परेशानी और न्याय से छुटकारा दिलाया। वे सच निम्न दिए गए हैं।

- सच # १ - परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है
- सच # २ - मैं एक बर्तन हूँ
- सच # ३ - अब मैं जीवित नहीं हूँ
- सच # ४ - मसीह मेरा जीवन है
- सच # ५ - मैं न्याय के लिए समर्पित हूँ
- सच # ६ - मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ
- सच # ७ - मैं इस विश्वास में जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।

आने वाले सात अध्यायों में हम यह देखेंगे की परमेश्वर ने इन सात सचों के बारे में मुझे क्या सिखाया, जिन के द्वारा परम प्रधान परमेश्वर की दैवी शक्ति निकलने लगी जब उसकी पवित्रात्मा मेरी आत्मा से मिलने लगी।

अध्याय एक के मुख्य विषय पर दुबारा विचार करना :

- मुक्ति का अनुभव अपने साथ शांति, खुशी और हलकापन लाता है।
- अकसर जब कोई व्यक्ति बाईबल पढ़ना प्रारम्भ करता है और अपने जीवन के लिए उसकी आज्ञाओं को जानता है, तो वह एक भारीपन का अनुभव करने लगता है, जब उसे पता चलता है की वह इन आज्ञाओं का पालन नहीं कर पाएगा।
- अकसर जब पवित्र रहने के लिए मनुष्य का शरीर उसकी आत्मा से लड़ता है, तो एक भीतरी लड़ाई होने लगती है।
- इस का नतीजा वही होता है जिसे पौलुस "नीच मनुष्य के लक्षण" कहता है।
- यदी कोई और विचार आप को मुख्य लगते हैं तो उन को लिख लीजीए।

विचार करें और विवाद करें :

- स्वयं के मुक्ति के अनुभव को याद करीए। कुछ शण निकाल कर इसे अपने समूह के साथ बाँटीए। यदी समूह में किसी व्यक्ति ने मुक्ति का अनुभव किया हो तो उस से पूछीए की क्या वह यीशु को अपना प्रभु और मुक्तिदाता स्वीकार करते हैं। यदी हाँ, तो उन्हें मुक्ति की ओर ले जाईए।
- क्या आप ने भीतरी लड़ाई का अनुभव किया है, जिस के बारे में इस अध्याय में बताया गया है? यदी हाँ, तो अपने अनुभव को अपने समूह के साथ बाँटीए।
- क्या आप ने कभी इच्छा आराधना यानी अपनी इच्छा शक्ति पर निर्भर हो कर किसी कार्य को करना चाहा है? अपने समूह से इस बारे में विवाद करीए। यदी हम अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग कर पाप से दूर रहना चाहें, तो हम इस इच्छा शक्ति को कैसे उपयोग में लाएँ?

- क्या आप हीन भावना का अनुभव करते हैं या आप रोमियों ८:१ में बताए गयी "कोई हीन भावना नहीं" की स्थिति में पहुँच गए हैं? यदि आप हीन भावना का अनुभव करते हैं, तो इस का क्या कारण है? किस रीती से इस पर काबू पा सकते हैं? एक सही जीवन व्यतीत कर के? इस तरह का जीवन व्यतीत करने के कितने अवकाश हैं?
- पौलुस ने रोमियों सात के अन्त में जो नीच मनुष्य के लक्षण के बारे में जो बताया गया है, क्या उस से बाहर निकल पाएँ हैं या आप अभी भी उसी समस्या में उलझे हुए हैं? यदि आप ने बाहर निकलने का रास्ता खोज निकाला है, तो अपने समूह को इस के बारे में बताईए।
- **पत्राचार** - इस प्रश्न को अलग परचे पर लिख लीजिए, "प्रभु, आप इस पाठ की सच्चाईयों के बारे में मुझे क्या बताना चाहते हैं?" यदि आप पत्राचार करना नहीं जानते, तो इस लेखक द्वारा लिखित पुस्तक, "परमेश्वर से बंधुत्व" या "परमेश्वर से बातचीत", पढ़ीए, जो इस बारे में गहराई से बताती है। (परमेश्वर से बंधुत्व, अधिकतर बांये दिमाग यानी तार्किक है और परमेश्वर से बातचीत, अधिकतर दाहिने दिमाग यानी कहानी पर निर्भर है।) पत्राचार का मतलब है की अपनी प्रार्थनाओं और उन के जवाबों को लिखना, जैसे की दाऊद ने भजन संहिता में किया है। परमेश्वर आप से जो कह रहा है, उसे एक विशेष पुस्तक में लिखीए। यदि यह अधिक व्यक्तिगत नहीं है तो इसे समूह के बीच पढ़ कर सुनाईए। यह सुनने वालों में उपदेश का कार्य करेगा और उत्साह पैदा करेगा और आप को यकीन दिलाएगा की यह सच में परमेश्वर की आप के साथ बातचीत है, जब ,समूह के लोग आप के पत्राचार की प्रशंसा करेंगे। इस बात का ध्यान रखीए की आप के पत्राचार का प्रारम्भ प्रश्न को लिख कर होना चाहिए, जो की रिक्त परचे पर लिखा गया हो। परमेश्वर की आवाज सुनने के लिए परिषिष्ट 'अ' देखीए।

2.परमेश्वर सर्वसव है और सब में है

सच # १

हाँ, मसीहत, "नीच मनुष्य लक्षण", जिस के बारे में पौलुस ने रोमियों आठ अध्याय में बताया है, उस से कुछ बढ कर है। पौलुस स्वयं इस से बाहर निकलने के रास्ते के बारे में अध्याय आठ में बताया है। हम उनके रास्ते पर अगले कुछ अध्यायों में चलेंगे।

हम परमेश्वर को किस नजरीए से देखते हैं ?

जो पहला दैवी प्रकाशण हमारे हृदयों में जाग्रित होना चाहिए वह यह है की परमेश्वर कौन है। क्या वह आकाश में कोई महान अधिकारी पुरुष है? क्या वह कोई अकृतक है या वह हमारे जीवन के हर पहलू में उपस्तित है? क्या वह इस संसार को किसी पृथक् दृष्टिकोण से देखता है या वह बारीकी से इस के कार्य में उपस्थित है?

मैं अपने व्याकुलता की अवस्था में यह सोचता था की परमेश्वर वह है जिस के पास शक्ति और बल और प्रेम और शांति है। मैंने उन में वह सब गुण देखे जो मैं चाहता था की मुझ में हो। मैं उन से अकसर यह सब चीजें मांगते हुए कहता, "परमेश्वर, क्या आप मुझे यह दे सकते हैं।" मैं सोचता था की परमेश्वर बहुत दूर है और मैं उससे कहता की आ और मुझ से मिल। मैं अकसर ऐसे अनुभव करता जैसे की मैं उन से अलग हो गया हूँ। वह वहाँ था, मैं इधर था। वह वहाँ ऊपर था, मैं यहां इधर नीचे था। वह पवित्र था, और मुझे उसने बलवान बनाना था।

मसीही मनुष्य जाती की सेवा - मैं जीवित हूँ :

कई बार मैं उस की ओर देखना भी भूल जाता। मैं उन कार्यों को करने के लिए, जिन्हें मैं समझता था की मैं कर सकता हूँ, अपनी शक्ति का उपयोग करता। मैं सोचता, "इन छोटी बातों के लिए परमेश्वर को क्यों परेशान करूँ?" इस कारण यदी कभी किसी विषय पर मैं उन से पूछना चाहता तो भी यह सोच कर नहीं पूछता की उस के पास और भी मुख्य कार्य है करने के लिए, तो इन छोटी बातों से उसे क्यों परेशान करूँ। इस के अलावा, उस ने मुझे

स्वभाविक शक्ति दी थी की मैं इन कार्यों को स्वयं करूँ। इस कारण मैं आगे बढ़ कर इन कार्यों को करता और इस तरह जीवित रहता।

परमेश्वर इन अर्ध सच्चाईयों को और मेरे विचारों को तोड़ने लगा और अपने आप को कई प्रकार से प्रगट करने लगा, जिन के बारे में मैंने कभी सोचा ही नहीं था।

वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है :

जो पहली बात उस ने मुझ पर प्रगट करी वह यह थी की वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। इस बात को मैं कई वर्षों से कहता आया हूँ पर इस पर कभी विचार नहीं किया। इस का अर्थ क्या है की वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है? यह उसे कितना शक्तिमान बनाता है? यह मेरे लिए, शैतान के लिए और दूसरों के लिए क्या मायने रखता है? आप सोचीए। मैं इस निर्णय पर पहुँचा की सर्वशक्तिमान का अर्थ यह है की वह सारे ब्रह्माण्ड में शक्तिशाली है। इस का अर्थ यह हुआ की यदी किसी शक्ति को दर्शाया जाता है तो वह परमेश्वर की शक्ति है। इस का अर्थ यह नहीं है की परमेश्वर बुराई का उत्पादक है। यह कुछ और समस्या है जिस के बारे में हम शण भर में बता सकते हैं। मैं यह कह रहा हूँ की गैर मसीही भी जो साँस ले रहा है वह भी उसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने दी है। यदी परमेश्वर अपनी शक्ति को हटा ले तो इस गैर मसीही के जीवन का अंत हो जाएगा। परमेश्वर सर्वसव है और सब में है।

यदी आप दावा करते हैं की आप शक्तिशाली है, तो आप को शक्तिशाली होना चाहिए, यदी आप झूठे न हों। एक बात जो मैं मानता हूँ वह यह है की परमेश्वर झूठा नहीं है। इसलिए यदी वह कहता है की वह शक्तिशाली है, तो मैं विश्वास करता हूँ की वह सारे ब्रह्माण्ड में शक्तिशाली है।

परन्तु, परमेश्वर ने यह नहीं कहा की वह शक्तिशाली है, क्या उस ने कहा? उत्पत्ती १७:१ को दुबारा पढ़ीए।

जब अब्राहम त्रियान्वे वर्ष का हो गया तब यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ, मेरी उपस्थिती में चल और सिध्द होता जा।"

क्या यह इस बात को सिद्ध करता है की वह सर्वशक्तिमान है? मैं ऐसा नहीं समझता। यह कहता है की वह सर्वशक्तिमान है। क्या ब्रह्माण्ड में सर्वशक्ति पाना और सर्वशक्तिमान होने में कुछ अंतर है? यदी मेरे पास कुछ है तो मैं आप को दे सकता हूँ। यदी मैं वह हूँ जिस की आप को आवश्यकता है तो मुझे अपने आप को, आप के लिए दे देना है।

यह नहीं की परमेश्वर में शक्ति है परन्तु वह स्वयं शक्ति है :

परमेश्वर की, ब्रह्माण्ड में सर्वशक्ति नहीं है। वह स्वयं ब्रह्माण्ड में सर्वशक्तिशाली है। इसलिए यदी मैं शक्ति के दर्शाता हूँ तो मैं किसे दर्शा रहा हूँ? आप ने सही पहचाना - परमेश्वर को। यदी आप अपने जीवन में शक्ति को दर्शा रहे हैं तो तो आप किसे दर्शा रहे हैं? यह सही है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर को, क्योंकि शक्ति के सारे भाव सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति को दर्शाते हैं। जब मैं अपना दाहिना हाथ उठाता हूँ तो किस की शक्ति को दर्शा रहा हूँ, अपनी या परमेश्वर की? क्या मेरे पास स्वयं की कोई शक्ति है? यदी परमेश्वर के पास सब शक्ति है तो नहीं। इसलिए, यह परमेश्वर की शक्ति है जो की दर्शायी जा रही है।

यदी परमेश्वर के पास शक्ति है, तो मैं उस से कुछ शक्ति माँग सकता हूँ, जैसे की कोई वस्तु। "परमेश्वर, मुझे सह वस्तु चाहिए, क्या कृपया आप इसे मुझे दे सकते हैं?" वह वहां रह सकता है और मैं यहां और वह मुझे यह वस्तु जो माँग रहा हूँ, उस में से कुछ दे सकता है। परन्तु यदी परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और मुझे कुछ शक्ति की आवश्यकता है तो मुझे चाहिए की मैं उससे उस अवस्था में उपस्थित होने को कहूँ, ताकी वह उस शक्ति से अभिषिक्त कर सके। मैं यह कहूँगा, "परमेश्वर मैं तुझे इमानुएल मानता हूँ, यानी परमेश्वर मेरे साथ। मैं आप का धन्यवाद देता हूँ की आप का जीवन और आप की शक्ति इस स्थिती में लगातार बह रही है। मैं चाहता हूँ की सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति इस स्थिती में पूर्ण रूप से उपस्थित हो।" आप सोच रहे होंगे की परमेश्वर की उपस्थिती और शक्ति का अभीषेक होना क्यों आवश्यक है। इस का जवाब यह है की परमेश्वर ने स्वयं अपने आप को अपने बच्चों की इच्छा के लिए सौंपा है। अभी हम प्रशिक्षण ले रहे हैं की अपने दुश्मनों पर कैसे काबू पाए और महीमा में परमेश्वर के साथ किस तरह राजा और याजक बन कर राज्य करें।

बुरे आदमियों की शक्ति के बारे में क्या?

यिर्मयाह २५:९ में परमेश्वर कह रहे हैं। "इसलिए सुनो, मैं उत्तर में रहने वाले सब कुलों को भुलाऊँगा और अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलावा भेजूँगा और उन सबों को इस देश और इस के निवासियों के विरुद्ध और इस के आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊँगा और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड़ दूँगा की लोग इन्हें देख कर ताली बजाएँगे वरन यह सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है।"

दुष्ट राजा नबूकदनेस्सर भी परमेश्वर का सेवक था जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहा था। क्या नबूकदनेस्सर ने कभी यह जाना की वह परमेश्वर का सेवक था और परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहा था? नहीं बिल्कुल नहीं। वह समझता था की वह अपने परिश्रम से उन्नति प्राप्त मनुष्य था और वह अपने स्वयं की अधभुत शक्ति का प्रयोग कर रहा है। नबूकदनेस्सर सच्चाई की ओर नहीं झाँक पा रहा था। देखीए की वह क्या कहता है।

"उस ने कहा है अपने ही बहूबल और बुद्धी से मैंने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूँ। मैंने देश देश के सिवानों को हटा दिया और उनके रखे हुए धन को लूट लिया, मैंने वीर की नाई गद्दी पर विराजनेहारों को उत्तर दिया है। देश देश के लोगों की धन सम्पत्ति चिडीयों के घोसलों की नाई मेरे हाथ आई है और जैसे कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैंने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है और कोई पंख फडफडाने वा चोंच खोलने व चीं चीं करने वाला ना था।" यशायाह १०:१३,१४।

इसी कहानी के बारे में परमेश्वर का क्या कहना है?

अब, क्योंकि परमेश्वर सच्चाई जानता है उसने नबूकदनेस्सर के इस घमण्ड का जवाब इस तरह दिया।

"क्या कुलहाडा उसके विरुद्ध जो उससे काटता हो डींग मारे व आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे। क्या सोंटा अपने चलाने वाले को चलाए व छड़ी उसे उठाए जो काट नहीं है, इस कारण प्रभू अर्थात् सेनाओं का प्रभू उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबाला कर देगा और उस के ऐश्वर्य के नीचे आग की सी जलन होगी।" यशायाह १०:१५, १६।

सच्चाई पर परमेश्वर का नजरीया नबूकदनेस्सर से अलग है। परमेश्वर समझते हैं की नबूकदनेस्सर उन के हाथों में केवल एक कुलहाडी है और वे नहीं चाहते की नबूकदनेस्सर अपनी ताकत की बड़ाई करे। इसलिए नबूकदनेस्सर को समझाने के लिए वह उसकी आत्मा

को दुर्बल बनाएगा। सच्चाई का अलग नजरिया कैसे रहा?

अब समय आ गया है की मैं यह जान लूँ की सच्चाई पर मेरी पकड़ कितनी मजबूत है। क्या मैं यह जानता हूँ की हर कार्य परमेश्वर की शक्ति है, या मैं स्वयं को या शैतान को या तकदीर को विश्व पर राज्य करते देख रहे हो? क्या मैं सच में यह मानता हूँ की वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभू, अलफा और ओमेगा, प्रारम्भ और अंत है, या मैं यह जानता हूँ की मेरे पास मेरी स्वयं की शक्ति है और शैतान के पास उसकी शक्ति? आप क्या देखते हैं? सच्चाई पर आपकी पकड़ कितनी साफ है?

शक्ति की समस्या का बुराई में प्रयोग :

वापस उस प्रश्न पर आते हुए की "परमेश्वर कैसे बुराई का राजा है?" मैं चाहूँगा की हम इस बात को देखें की वह राजाओं का राजा है और प्रभुओं का प्रभू है। यदी परमेश्वर सच में इस पृथ्वि के सारे राजाओं का राजा है और प्रभुओं का प्रभू है, तो क्या वह बुराई का राजा नहीं हुआ? क्या इन में से कुछ राजा बुरे राजा नहीं हैं? क्या इन में से कुछ प्रभु बुरे नहीं हैं? यदी कोई मनुष्य उसके भीतर की परमेश्वर की शक्ति को किसी विपरित कार्य के लिए प्रयोग करना चाहेगा, यानी उस का प्रयोग अच्छाई के बदले बुराई के लिए किया जाए, तो उसकी शक्ति कम नहीं हो जाति?

क्योंकी मनुष्य, परमेश्वर की योजना जो उसके जीवन के लिए की गयी है उस के विपरित जाता है तो क्या इस का अर्थ यह हुआ की अब परमेश्वर का उस पर कोई अधिकार नहीं रहा?

मेरा ध्यान यूसुफ के भाईयों की ओर जाता है जो की जलन, गुस्से और दुश्मनि के कारण उसे मिस्त्रियों को बेच देते हैं। क्या उस समय परमेश्वर का उन पर कुछ काबू नहीं था, क्योंकि वे परमेश्वर की शक्ति का विपरीत प्रयोग करने जा रहे थे और अपने दाहिने हाथ का प्रयोग नष्ट करने के लिए प्रयोग कर रहे थे बजाए चंगाई में प्रयोग करने के? आप क्या समझते हैं?

यूसुफ एक भविष्यदर्शी था। वह परमेश्वर की इच्छा को भांप जाता था और जब उसने देखना चाहा तो देखा की उस समय भी परमेश्वर राज्य कर रहा था, जब उसके भाईयों ने परमेश्वर की शक्ति का विपरीत प्रयोग कर रहे थे, उसने कहा,

"यद्यपी तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वे ऐसा करें जैसा आज के दिन प्रगट है की बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।" उत्पत्ति ५०:२०।

क्या आप ुपने जीवन के सफर में चलते हुए ऐसा समझते हैं? क्या आप यह देख सकते हैं की बुरे मनुष्य की शक्ति भी परमेश्वर की शक्ति का कार्य है, जिसका विपरीत प्रयोग किया जा रहा है, परन्तु फिर भी परमेश्वर के नियंत्रण में? आप क्या समझते है की इसे गहराई से कैसे देखा जा सकता है? क्या हम उस प्रकार सोचने लगते हैं? मैं ऐसा नहीं समझता। मेरा दिमाग और समझ उतनी महान नहीं है। यदी मैं इतना बुद्धिमान निकला तो मैं चक्कर खा कर गिर जाऊँगा। इसके बदले मैं प्रार्थना करता हूँ। मैं कहता हूँ, "परमेश्वर क्या आप मुझ से बात करेंगे और क्या आप मुझे बताएँगे की क्या हो रहा है?" और वह मुझ से बात करना प्रारम्भ करता है और ऐसे दैवी दर्शन देता है जिनके बारे में मैने कभी नहीं सोचा। इसलिए, मैं खोजते हुए मन से या दिमाग में महान नहीं बनता। मैं बुद्धिमान बनता हूँ, उस बुद्धिमान और महान व्यक्ति की आवाज सुन कर जो मेरे अंदर रहता है। क्या आप नहीं समझते की यह अधिक आसान है, बजाए परमेश्वर के जैसे बनने के? केवल परमेश्वर को अपने भीतर का परमेश्वर बनाईए। उसकी बाहों में विश्राम करीए। अपने परीश्रम को छोड कर उस के विश्राम में प्रवेश करीए(इब्रानियों ३ और ४)।

अधिक विचार करने के लिए केवल वह दृष्य को ध्यान में लाईए, जहां लोग गिस्से में चिल्ला रहे थे की, "सूली पर चढाओ। सूली पर चढाओ।" और बिना रीढ की हड्डी वाला पिलातुस जो धार्मिका के लिए खडा नहीं रह सका। इस के बाद प्रेरितों के काम ४:२७, २८ में बताया गया सारे दिन का ब्योरा पढीए।

परमेश्वर प्रेम है :

यहां परमेश्वर की एक और देन है। क्या सच में जिस परमेश्वर से हम प्रेम करते हैं, उस के पास हमें देने के लिए प्रेम है, या वह स्वयं प्रेम है? यदी मुझे प्रेम की आवश्यकता है और मैं उस से पेरम मांग रहा हूँ, तो क्या मैं कुछ गलत मांग रहा हूँ या मेरी प्रार्थना सही है? आप क्या समझते हैं?

मैं समझता हूँ की मैं गलत मांग रहा हूँ। मैं समझता हूँ की ऐसी प्रार्थना यह समझने में एक बहुत बडी गलतफैमी पैदा कर सकती है की परमेश्वर कौन है और हम कौन हैं। क्योँकी हम इस अध्याय में यह नहीं देखेंगे की हम कौन हैं, इसलिए सह विवाद हम आगे के लिए

छोड़ते हैं। परन्तु, हम सह बात कर रहे हैं की परमेश्वर कौन है, तो हम यह देखते हैं की यूहन्ना उस के विषय में क्या कहता है।

"और जो प्रेम परमेश्वर हम से करता है, उस को हम जान गए और हमें उस की प्रतीति है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है।" (१यूहन्ना ४:१६)

यदी मुझे प्रेम की आवश्यकता है, तो क्या मुझे कुछ ऐसी चीज चाहिए जो परमेश्वर के पास है या मुझे ऐसी चीज चाहिए जो परमेश्वर स्वयं हैं? यदी मुझे कुछ ऐसी चीज चाहिए जो उन के पास है, तो मैं उल से वह मांग सकता हूँ। परन्तु यदी मुझे कुछ चाहिए जो वह स्वयं है, तो मुझे उन्हें ही मांगना होगा की वे पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे मन में आ जाएँ।

कोई स्वयं सुधार कार्य नहीं, परन्तु एक बदलने का कार्य :

आप स्वयं से कह रहे होंगे, "आप जानते हैं की यह कुछ शब्दों का खेल है, की आप किस तरहा कहते हैं।" नहीं, बिलकुल भी नहीं। यह केवल शब्दों का खेल नहीं है। मैं कभी शब्दों पर विवाद नहीं करूँगा। मेरी लड़ाई यह है की आप पवित्र आत्मा के अनुभवों को देखें जो परमेश्वर दिखाना चाहता है। उपर्युक्त दोनो प्रार्थनाओं में इतना भेद है जितना की रात और दिन में होता है, मसीहत और धर्म में, परमेश्वर और शैतान में होता है।

यदी आप याद करें तो, वह शैतान था जिसने कहा, "तुम परमेश्वर के समान बन सकते हो।" वही है जो मुझ में इच्छा उत्पन्न करता है की मैं परमेश्वर के जैसे गुणों को अपनाऊँ। शैतान कहता है, "तुम परमेश्वर के समान बन सकते हो।" (उत्पत्ति ३:५)। आप जो बनना चाहते हैं उस के लिए मेहनत करीए और प्रार्थना करीए। कोशिश करीए। इन शैतानी विचारों का यही सही जवाब है, "जहां से आया है वहीं वापस चला जा।" क्योंकि यह सब नरक के गड्ढे से निकल कर आते हैं।

यदी परमेश्वर मुझे सुधारने के कार्य के पीछे नहीं है जिस में मैं मेहनत कर के धार्मिक, प्रेम करने वाला और सब कुछ जानने वाला बन सकता हूँ, तो फिर वह कौन सा कार्यक्रम है जो परमेश्वर चला रहा है? यह एक बदल देने वाला कार्यक्रम है जिस में वह मुझे स्वयं से बदल डालेगा, और मैं मसीह में छुप जाऊँगा, जो की मेरा जीवन बन चुका है। वह मेरी स्वयं सचेतता को परमेश्वर की सचेतता में बदल डालता है। दाखलता की एक डाली स्वयं से सचेत नहीं रहती। वह इस बात से सचेत है की वह दाखलता का एक भाग है, और यह की उसके

जीवन की धारा उस :

दाखलता में से लगातार बहती है, जो की उस के जीवन का सार है। हम इस विषय के बारे में हम दूसरे अध्याय में पढ़ेंगे। मुझे बस यही कहना है की हम कोई उलझे हुए शब्दों का खेल नहीं खेल रहे हैं। हम बिलकुल ही भिन्न दो जीवन व्यतीत करने के रासतों के बारे में बात कर रहे हैं।

परमेश्वर प्रेम है, और जब मुझे प्रेम की आवश्यकता होती है तो मुझे परमेश्वर के अनुभवों की आवश्यकता है, जो मेरे अंदर बह रहे हैं। यह बिलकुल आसान है। तो मैं उसे बहने को कहता हूँ, अपनी दृष्टी उस की ओर लगाए रखता हूँ और स्वैच्छिक नदी जो मेरे हृदय में बह रही है उसकी ओर ध्यान लगाता हूँ। और सच में परमेश्वर मेरे जीवन में बह उठता है। यह उससे बिलकुल ही विपरीत है की मैं स्वयं पर दृष्टी लगाऊँ और कहूँ, "परमेश्वर मेरी मदद कर।"

परमेश्वर की शांति या शांति का परमेश्वर :

अब परमेश्वर का एक और चरित्र। परमेश्वर के पास शांति है। या वह स्वयं शांति है (फिल ४:७,९)? मैं जानता हूँ की कई समय ऐसे आते हैं जब मुझे शांति की आवश्यकता होती है, और जब मैं प्रार्थना के समय परेशानि के साथ उसके सन्मुख आता हूँ तो वह मुझ से पत्राचार के माध्यम से बात करता है, "मार्क, शांति रखो, मैं यहां हूँ।" उसने ऐसा मुझ से हजारों बार कहा होगा की शांति रख क्योंकि मैं यहां पर हूँ, और आखिरकार अब मैंने शांति बनाए रखने का सोच लिया है क्योंकि परमेश्वर वहां था। अध्यात्म विध्या के अनुसार मैं जानता हूँ की परमेश्वर इसानुएल है, परमेश्वर मेरे साथ। परन्तु अध्यात्म विध्या के अनुसार सच मानना एक अलग बात है और अनुभव के अनुसार सच पाना दूसरी बात। परमेश्वर को मनुष्य के रूप में अनुभव करने से, लगातार पत्राचार के मुकाबलों से, मैंने आखिरकार अपने आप को अध्यात्म विध्या के सच से निकाल कर, पवित्रात्मा के साथ रहना सीखा है। (२ कुरिं १३:१४)।

यहां पिर, शैतान ही था जिसने हमें ज्ञान के वृक्ष के माध्यम से जीना सिखाया, ताकी हम परमेश्वर की तरहा बन सकें, सच और बुराई का भेद जानते हुए। हम शैतान के रास्तों पर चलते रहे और अब हमारे पास २३०० जातियां हैं जिन्होंने सच और गलत को पहचाना है और अपनी समझ के चारों ओर अपने शिविर लगा रखे हैं। यह २३०० शिविर यह साबित करते हैं की हम जो कर रहे हैं वह गलत है, क्योंकि यीशु ने कहा है की हमें एक बने रहना है। और एक तरीका जिस के द्वारा हम एक हो सकते हैं वह यह है की हम उस पेढ के फल को खाना

छोड़ दें जो परमेश्वर ने हमें मना किया है, यानी सच और गलत जानने का वृक्ष (यानी, अपने दिमाग की समझ के अनुसार जीना छोड़ दें), और जीवन के वृक्ष के फल को खा कर जीना सीख लें, जो की वह स्वयं है, यीशु दाखलता है और हम उसकी शाखाएँ हैं। मैंने परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव में जीना सीख लिया है अपने हृदय के अंदर, जब मैं अपने पत्राचार को लिखने लगता हूँ बजाए अपने स्वयं के विचारों के।

हम इस बारे में अगले अध्याय में और बात चीत करेंगे। इस समय मैं यहां यह कहना चाहूँगा की आप इस बात को जान लें की हम यह नहीं जानना चाहते की परमेश्वर कौन है। हम अपने अंदर, हृदय और आत्मा में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बहाव को कोज रहे हैं। आखिरकार मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ की परमेश्वर सर्वसव है और सब में है, और यह की यीशु मेरा जीवन है।

अध्याय दो के मुख्य विचार :

- जितना मैंने सोचा परमेश्वर उस से भी अधिक बड़ा है।
- परमेश्वर सर्वशक्तिमान है।
- परमेश्वर प्रेम है।
- परमेश्वर शांति है।
- मुझे परमेश्वर की आवश्यकता है।
- मैं यह नहीं चाहता की परमेश्वर मुझे उसके कुछ गुण दे, परन्तु मैं चाहता हूँ की वह मेरा जीवन बनें।
- आप अपने पत्राचार में उन बातों को लिखें जो विषय तोर से आप को बताई गयी हों।

विचार करीए और विवाद करीए :

- आप परमेश्वर को किस रूप में देखते हैं? क्या इस अध्याय ने आपके सोचने के नजरीए को बदला है? यदि हां, तो कैसे? आप जो बदलाव अनुभव कर रहे हैं, उसे विसतार से बताईए।

- बुद्धिमानि के वृक्ष या जीवन के वृक्ष से आप को खाने का क्या प्रशिक्षण दिया गया है? कोई बुद्धिमानि के वृक्ष के द्वारा कैसे जीया जा सकता है? जीवन के वृक्ष के द्वारा कैसे जीया जा सकता है?
- क्या पत्राचार आपके जीवन का लगातार हिस्सा है? क्या आप पवित्रशास्त्र में दाऊद या अन्य लोगों की तरहा हैं, जो वह लिख सकें जो परमेश्वर उन्हें बताता है? ऐसा करना क्या आप के लिए मुख्य बात है? क्या इस से आप के जीवन की आवश्यकता पूरी होगी?
- क्या आप परमेश्वर के बारे में अध्यात्मविध्या सम्बंधी बातों द्वारा जी रहे हैं, या उस के साथ एक अनुभव के द्वारा जी रहे हैं? इन में से कैसा जीवन फरीसी व्यतीत कर रहे थे? क्या यह सही है की हम अनुभव के द्वारा जीए, या हमें अध्यात्मविध्या सम्बंधी बातों द्वारा जीना है? (जो लोग इसे समझने की दुविदा में हैं, वे लोग इसी उत्पादक द्वारा लेखित एक्सपीरीएंसिंग गाड (परमेश्वर को अनुभव करना) पढ़ीए)
- इस अध्याय के सच को सामने रखते हुए निम्न वचनों को पढ़ीए। आप अपनी प्रार्थनाओं को लिखना चाहेंगे। इब्रानियों ११:३; कुलसियों १:११, १७; १ कुरिथियों १:३०; कुलसियों ३:४।
- परमेश्वर को सर्वशक्तिमान मानते हुए पढ़ीए, यशायाह ४५:५-७ (और उसकी आस पास के वचन); भजन संहिता ७५:६,७; नीतिवचन २१:१; रोमियों ८:२८; रोमियों १३:१-५; इफिसियों ५:२०; १ थिसलोनिकियों ५:१८।
- पत्राचार - परमेश्वर से पूछीए की वह आपको इस अध्याय की सच्चाईयों के बारे में क्या बताना चाहता है। वह जो कहता है उसे एक अलग नोटबुक में लिख लीजीए। (यह याद रखीए की आपने अपना प्रश्न पृष्ठ के ऊपर लिखना है ताकी यह आपके दैवी बहाव को खोल सके)। यदी यह अधिक निजी नहीं है तो इसे अपने समूह में पढ़ने के लिए तैयार रखीए। और धन्यवाद दूसरों के साथ अपने हृदय की बातों को बाँटने के लिए। काश परमेश्वर की उत्तम आशीशें आप के साथ रहें।

3.मैं एक बर्तन हूँ

सच # २

आप अपने आप को क्या समझते हैं? क्या आप शक्तिशालि हैं, बुद्धिमान हैं, ज्ञानी हैं, प्रेम करने वाले हैं, ध्यान रखने वाले हैं, दयालू हैं, हिम्मतवाले हैं? क्या आप अपने आप निर्णय ले सकते हैं? क्या आप सफाई से बातों को समझ सकते हैं? क्या आप अपना जीवन अच्छि तरहा व्यतीत कर पा हे हैं? क्या आप अपने इरद गिरद की परेशानियों को समझदारी से निबटा सकते हो? क्या आप ने उन्हें झेलना सीक लिया है? आप अपने आप को कैसे देखते हैं?

मैं कौन हूँ यह पहचान ने के लिए मुझे काफी समय लग गया। बहुत समय तक मैं समझता रहा की मैं बहुत कुछ हूँ: बहुत बुद्धिमान, अकलमंद, शक्तिशाली, स्वयं निर्णय लेने वाला, बुद्धिमानी से विचार कर बुद्धिमानी के निर्णय लेने वाला, जब कुछ करने को कहा जाय तो उसे कर पाने वाला, अपने दोस्त के लिए प्रार्थना करने वाला, अपना जीवन निछावर करने वाला, कार्य करने वाला।

मुझे यह पता है की परमेश्वर को अपना जीवन देने से पहले मैं अपनी इच्छा के मारेग पर चलता था (यशायाह ५३:६)। परन्तु, अब मैं परमेश्वर की राह पर चलना चाहता हूँ। मैं अपना जीवन उसके लिए व्यतीत करना चाहता था। अब मैं उस की सेवा करने जा रहा था, उससे पेरेम करने जा रहा था और उसकी आराधना करने जा रहा था। मैं घर घर जा कर साक्षी देने लगा क्योंकि मैं चाहता था की दूसरों को उस के बारे में बताना चाहता था। मैंने निश्चय कर लीया की मैं पाप पर काबू पाऊँगा और उसके सामने पवित्र रहूँगा।

यदी आपने ध्यान दिया हो तो पिछले परिच्छेद में मैं शब्द हर वाक्य का केन्द्र रहा है। मैं की शक्ति भी महत्वपूर्ण रही है। मैं यह कर रहा हूँ..... मेरे पास शक्ति है.... मेरे पास इच्छाशक्ति है.... मेरे पास ताकत है....।

यह सब कुछ एक गलतफैमी पर निर्भर होता है की मैं कौन हूँ। मैं स्वयं सब कुछ नहीं हूँ। मैं स्वयं पूर्ण नहीं हूँ। मैं इस लिए पूर्ण हूँ क्यों की मैं खाली हूँ। मैं एक बर्तन हूँ।

एक बर्तन?

क्या मैंने एक बर्तन कहा?

परन्तु हमारे लिए वह धन मिट्टि के बर्तनों में रखा है की यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। (२ कुरिं ४:७)।

हाँ, एक बर्तन। अब मुझे इस बारे में कुछ शर्णों के लिए सोचना पड़ेगा। एक बर्तन का क्या मकसद होता है। एक बर्तन का कार्य यह होता है की वह अपने आप में कुछ वस्तु को रख सके। क्या आप यह कहना चाहते हैं की मेरे जीवन का मकसद यह है की मैं अपने आप में कुछ भर के रख सकूँ? क्या मैं केवल बैठा रहूँ ताकी मुझ में कुछ भर जाए? नहीं मैं इसे नहीं मानता। मैं इस उम्मीद में नहीं हूँ की मुझ में से कुछ चमत्कारी शक्तियाँ बह निकले। मैं यह बताना चाहता हूँ की मैं अपने दोनों पैरों पर खड़ा रह सकता हूँ और अपनी शक्ति से मैं क्या कर सकता हूँ। मैं अपने मुख से प्रार्थना कर सकता हूँ। मैं प्रेम कर सकता हूँ। मैं घर्णा कर सकता हूँ, मैं । आप बताईए, मैं उसे करूँगा।

आप समझते हैं की आप कर सकते हैं, क्योंकि आप उस झूठ में फँस गये हैं जो शैतान ने अदन के बगीचे में फैलाये था, जब उस ने आदम और हवा से यह कहा था की वे जीवन के वृक्ष से खा कर जी पाएँगे (यानी दूसरे पर निर्भर हो कर जीना), वे स्वयं जी सकते थे। वे जानते थे की बल उन पर दिया गया है। तुम यहोवा की तरहा बन सकते हो..... आदम और हवा ने इस झूठ को मान लिया और परमेश्वर की बुद्धि से गिर कर स्वयं की बुद्धि पर पहुँच गये। यह समझने के बजाए की वे एक दूसरे की संगति में जीवन व्यतीत करने वालो के बजाए, वे अपने आप में जिने लगे। अब जब परमेश्वर ने उन्हें पुकारा, तो वे छिप गये। दैवी एकता टूट गयी और स्वयं बुद्धि उत्पन्न हो गयी।

मुक्ति की ओर दाने का मतलब है की स्वयं की बुद्धि को हटा कर परमेश्वर की बुद्धि की ओर कदम बढ़ाना। शायद मुझे अपने इस स्वार्थ की यात्रा की, मैं इतना महान हूँ और अदभुत हूँ, से हट कर मुझे यह जान लेना चाहिए की मुझे इस लिए बनाया है की मैं अपने में कुछ समा सकूँ।

कुछ वस्तु को अपने में समाना नहीं, परन्तु किसी को अपने में समाना :

मुझे इस लिए नहीं बनाया गया की मैं अपने में केवल कुछ वस्तु समा सकूँ; मुझे इस लिए बनाया है की अपने में किसी को समा सकूँ। मैं केवल एक बर्तन नहीं, परन्तु असल में मैं एक मंदिर हूँ...।

क्या तुम नहीं जानते की तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो? (१ कुरिं ६:१९)।

मंदिर का एक मात्र कार्य क्या है? क्या मैं यह कह सकता हूँ की इस में परमेश्वर बस्ता है? और इस विषय में हमें इस लिए तैयार किया गया है की हम अपने में इस विश्व के परमेश्वर को समा कर रखें जो सर्व शक्तिमान परमेश्वर है।

हम में कोई और बहता है :

हम केवल मंदिर नहीं जिस में सर्वशक्तिमान परमेश्वर वास करता है, बरन यीशु दाखलता बन गया है और हम उसकी शाखाएँ हैं....।

"मैं दाखलता हूँ, तुम डालीयां हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" (यूहन्ना १५:५)।

एक मंदिर केवल परमेश्वर का घर बन सकता है, परन्तु एक शाखा को जीवन दाखलता से मिलता है। और यह जीवन हमेशा के लिए है। परमेश्वर का बहाव इतना निरुध्योग रहित होता है की मैं इस धोखे में आ जाता हूँ की यह मैं जी रहा हूँ। परन्तु यह ऐसा नहीं है। यह दाखलता में से रस का बहाव है जो जीवन दे रहा है।

मैं केवल तरल पदार्थ से समाया हुआ पात्र नहीं हूँ, परन्तु मुझे एक मंदिर के रूप में बनाया गया है जिस में पवित्रात्मा की नदी वास करती है। परमेश्वर मेरे अंदर एक नदी के रूप में बहता है...।

पर्व के अंतिम दिन जो मुख्य दिन है यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदी कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिए। जो मुझ पर विश्वास करेगा जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उस के जीवन में से जल की नदीयाँ बह निकलेंगी।" उसने यह वचन पवित्रात्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे, क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।

जब मैं अपने जीवन के रास्ते पर चलता हूँ तो मुझे यह नहीं सोचना है की मैं, स्वयं की ताकत या योग्यता के बल पर अकेले जी रहा हूँ। मैं वह हूँ जो अपने अंदर बह रही स्वेच्छिक नदी के कारण जी रहा हूँ। मुझे मेरी ताकत और मेरा जीवन उसी से मिलता है।

मुझे स्वयं बुद्धि से मुक्ति मिल गयी है और अब परमेश्वर की बुद्धि है। मैं अपनी योग्यता और शक्ति का प्रयोग नहीं करता। मैं अपने हृदय और अपने अंदर बह रहे जीविते पानी की नदियों की ओर ध्यान लगाता हूँ। यह मेरी शक्ति का सोता है। जब मुझे इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है तो मैं उस की ओर मुड़ता हूँ जो मेरे अंदर है और मैं अपनी आँखें उस पर लगाता हूँ और कहता हूँ, "यीशु, इस परिस्थिति में मेरी शक्ति बन।" मैं यह नहीं चाहता की वह मुझे तरक्कि दे। मैं यह चाहता हूँ की वह मुझ जैसा बने (यानी इस पस्थिती में मेरा जीवन, और हर पस्थिती में भी)। परन्तु हम इस से एक कदम और आगे जा सकते हैं।

इन्द्रियों सम्बंधि संयोग :

वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है वही आदी है और मेरे हुआँ में से जी उठने वालों में पहिलौठा की सब बातों में वही प्रधान ठहरे। (कुल १:१८)।

जैसे की सर सारे शरीर को आज्ञा देता है, तो उसी तरह यीशु हमें आदेश देता है। मैं लगातार उस पर दृष्टि लगाए रहता हूँ, दैवी प्रेरणा की ओर मन को लगाए रहता हूँ, उसके दर्शन को देखते हुए, उसके शब्दों को सुनते हुए, और उन कार्यों को करते हुए। मैं उसी की तरहा जीता हूँ जैसे वह जीता था, जब वह इस दुनिया में था....।

इस पर यीशु ने उन से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" यूहन्ना ५:१९

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।" यूहन्ना ५:३०

इस तरह मुझे अपना जीवन व्यतीत करना है। जीवन सह नहीं है की मैं अपनी इच्छा अनुसार जीवन व्यतीत करूँ। प्रेम करने वाला मैं नहीं हूँ, जीवन व्यतीत करने वाला मैं नहीं हूँ, या प्रार्थना करने वाला मैं नहीं हूँ। मैं किसी और के साथ जुड़ा हुआ हूँ (१ कुरि ६:१७)। वह मेरा जीवन है। वह मेरी ताकत है। वह मेरे विचारों का मार्ग दर्शन करता है। मैं स्वयं से कुछ नहीं कर सकता। मैं अपना ध्यान केन्द्रित करता हूँ, स्वेच्छिक बहाव जो मेरे हृदय में उमड रहा है, उस पर और यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रखता हूँ, और कहता हूँ, "प्रभु, क्या अपना विचार इस स्थिती में देंगे, ताकी मैं जान सकूँ की मुझे आगे क्या करना है?" और यकीनन, स्वैच्छिकता से, बिना किसी परिश्रम के चित्रों का, विचारों का और चेतनाओं का बहाव मेरे अंदर उमडने लगता है जब पवित्रात्मा की नदी मेरे अंदर अपना बहाव पैदा करती है।

जब मैंने पहले यीशु को अपनाया, तब इस बात को सफाई से नहीं जाना था :

जब मैंने अपना जीवन प्रभु यीशु मसीह को दिया, तो मैंने यह नहीं जाना की मैं एक पात्र हूँ, जिस में कोई और समाया हुआ है। मैंने यह सोचा की मैं इतने सालों से अपना जीवन जी रहा हूँ। मैंने मुक्ति पाने से पहले भी यह नहीं जाना की मैं एक पात्र हूँ। उस समय मैं इस दुनिया की आत्मा में जी रहा था बजाए दैवी आत्मा के। मैंने तब तक अपना हृदय उस के लिए नहीं खोला था, जो सर्वसव है और सब में है। इसलिए, चाहे वह मेरे लिए उपलब्ध था और वह मुझे जीवन दे रहा था, मैं उसका नाम श्राप देने के लिए प्रयोग कर रहा था। मैंने उसे पहचाना नहीं। मैंने सोचा वह बहुत दूर है - स्वर्ग में कहीं है, मेरे जीवन से बहुत दूर। मैंने उसे प्रभु नहीं माना था। मैंने सोचा की मैं ही प्रभु हूँ, क्योंकि मैं अपना जीवन स्वयं वसतीत करता हूँ, और अपने कार्य खुद करता हूँ।

कितनी बेफकुफि और बंद अकल। मैं किसी और आत्मा में फँस चुका था, दुनिया की आत्मा, और स्वभाव से गुस्से वाला बच्चा था।

उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिन में तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। (इफिसियों २:१-३)

मैं अपना स्वयं का स्वामि नहीं था, अपने स्वयं के कार्य करता हुआ। मैं शैतान की आज्ञा के नीचे था और उसके कार्य कर रहा था।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो की तुम जो पाप के दास थे, अब मन से उस उपदेश के मानने वाले होगए, जिस के साँचे में ढाले गए थे, और पाप से छुड़ाए जा कर धर्म के दास हो गए। (रोमियों ६:१७, १८)

मैं हमेशा किसी का सेवक बना रहा। चाहे वह आत्मा, आज्ञा न मानने वाली आत्मा कार्य कर रही हो और मैं पाप का दास बन गया, या मुझ में दैवी आत्मा जो अंदर बसी हुई है, वह हो तो मैं उसकी शक्ति का दास बन गया। मैं वह हूँ जो की दूसरों के आदेश पर चलता हूँ।

जिन के द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकी इन के द्वारा तुम उस सडाहट से छूट कर, जो संसार में बुरी अभिलाशाओं से होती हैं, ईश्वरय स्वभाव के समभागी हो जाओ। (२ पतरस १:४)

यहां सब साफ है। या तो हमें दुनिया की आत्मा निसंत्रण करती है या हम में दैवी आत्मा भरी हुई है। इस के कारण या तो हम पाप के दास बन जाते हैं या धार्मिकता के दास। दोनों ही बातों में हम स्वयं के स्वामि नहीं हैं।

अध्याय तीन के मुख्य विचार :

- हम पात्र हैं।
- हम मंदिर हैं।
- हव शाखाएँ हैं जिन्हें छाँट कर दाखलता में बदला गया है।
- हम मसीह की देह हैं और वह हमारा मुखिया है।
- हम केवल दैवी विचारों के द्वारा जीवित रहते हैं।
- मुक्ति पाने से पहले भी हम पात्र थे।
- मुक्ति पाने से पहले हम संसार की आत्मा के दास थे। अब हम में दैवी आत्मा है।
- इस अध्याय में से यदी कुछ और मुख्य बातें हैं तो उन्हें लिख लीजीए।

विचार कर विवाद करें :

- क्या शैतान भी एक पात्र है (यशायाह १४:१२ -१५; यहिजकेल २८: ११ - १७)? (लुसीफर का अर्थ है ज्योति का ढोहने वाला)।

- मसीह के पास आने से पहले क्या आप जानते थे की आप एक पात्र हैं? आप स्वयं को क्या मानते हैं?
- अब जब आप मसीह के पास आ गए हो तो क्या आप इस बात से सहमत हो की आप एक पात्र हो? क्या आप दैवी विचार के द्वारा जीवित हैं? एक दिन को व्यतीत करते हुए अपने अनुभव के लिखीए। क्या आप हर दिन की योजना बनाते हो, या आप योजना बनाने के लिए, परमेश्वर पर भरोसा करते हो? क्या आप इस बारे में परमेश्वर से बात करते हो, या आप के कार्य स्वयं पर निर्भर हैं? क्या आप अपनी बुद्धि पर भरोसा करते हैं या आप अपने अंदर आत्मा की आवाज पर निर्भर होते हैं जो पवित्र आत्मा से जुड़ी हुई है? क्या आप अपनी शक्ति पर निर्भर होते हैं या आप सर्वसब परमेश्वर की शक्ति के सामने समर्पित हो जाते हैं?
- इस बात से सचेत रहने का की हम पात्र हैं, या मंदिर हैं या मसीह की देह हैं, सब से अच्छा रास्ता कौन सा है? इस बात को भूल जाना कितना आसान है और सोचीए की हम लोग कुछ वस्तु से भरे हुए पात्र हैं। हम इस बात को इतनी आसानी से कैसे भूल जाते हैं? हम इस बात को इतनी आसानी से कैसे मान लेते हैं की हम स्वयं पर निर्भर हैं और स्वाधीन हैं? क्या हम इस बात से बचने के लिए कुछ कर सकते हैं? यदी हाँ, तो क्या?
- क्या आप इस बात को मानते हैं की अदन की वाटिका का पाप एक कारण है की हम परमेश्वर की बुद्धि से गिर कर स्वयं की दुद्धि पर आ गिरे? यदी हाँ तो स्वयं बुद्धि, पाप बुद्धि और हीनता से बचने का क्या उपाय है? आप सारा दिन स्वयं से सचेत रहते हुए व्यतीत करते हैं या परमेश्वर से सचेत रहते हैं? अपने प्रति दिन के अनुभवों को बताईए।

पत्राचार - इस अध्याय के सच पर पत्राचार करते हुए कुछ समय बिताईए। पृष्ठ के ऊपर वह परमेश्वर से पूछीए की वह आप का पात्र होने बारे में क्या कहना चाहता है। उस के जवाब को लिख लीजीए। अपनू समूह को यह पढ कर बताईए। पत्राचार में जो परमेश्वर आप से बात कर रहा, इस बारे में समूह में उत्साह पैदा करीए।

4. अब मैं नहीं जी रहा

सच # ३

मुझे पिछले अध्याय के सच को जानने के लिए दैवी प्रेरणा की आवश्यकता थी की मैं केवल एक पात्र हूँ। मैं इस विचार के साथ बड़ा हुआ की मैं एक गैर मसीही हूँ और स्वयं का स्वामी हूँ, इस कारण मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ। मुझे यह पता नहीं था की शैतान मेरा स्वामी बना हुआ था। मैं कहता था, "मुझे कोई यह नहीं कह सकता की मुझे क्या करना है।" क्या आप शरत लगाना चाहेंगे? शैतान कहता था। उसकी आत्मा भी अपने शरीर में बड़ी आसानी और बिना परिश्रम के बहती है। कई लोग इस बात को नहीं जानते की वह हमारे जीवन में उपस्थित है। वे जो कर रहे हैं वह शैतान के कार्य हैं। वे सोचते हैं की वे स्वयं के स्वामि हैं, परन्तु वे शैतान के कब्जे में हैं। मे सोचते हैं की वे किसी के सेवक नहीं, परन्तु वे पाप के सेवक हैं (रोमियों ६:१७)।

समस्या तब हुई जब मैं मसीह बना। मैं अपने इस विचार के साथ मसीही बना। क्योंकि मसीही बनने से पहले मैं यह समझता था की मैं स्वयं के लिए जीवित हूँ, और मसीही बनने के बाद मैंने यह तैय किया की मैं मसीह के लिए जीयूँगा। परन्तु क्या आप भ्रम को देख रहे हैं? मसीही बनने के पहले के दिनों की तरह मैं स्वतंत्रा से नहीं जी रहा था। न ही मसीही बनने के बाद के दिनों में मैं जी रहा था।

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, अब मैं जीवित न रहा...। (गल २:२०)

आप क्या सोचते हैं की मैं ऊपर के वचन को समझ पाता? कभी भी नहीं। हाँ, मैं उसे कह पाता था। मुझे थोड़ी जानकारी थी की वह क्या है, परन्तु वास्तविकता से नहीं समझ पाता। इस का अर्थ यह था की अब मुझे अपना जीवन नहीं परन्तु मसीह के लिए जीवन बिताना है। मेरे जीने का ढंग एक स्वराज्य व्यक्ति की तरह था। सच से कितना हट के था। परन्तु मैं इसी तरह इसे देखता था। इस धोखे में मैं कई वर्ष तक जीवित रहा।

पंद्रह वर्षों तक मैं एक स्वराज्य व्यक्ति की तरह जीता रहा। मैं इस सच को नहीं पहचान पाया की मैं एक पात्र हूँ, जिस में कोई और समाया हुआ है। अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ तो कितना बेफकुफ लगता है। मेरे लिए यही सच था। कोई भी मुझे कुछ और नहीं बता रहा था।

मसीहत और धर्म का मिलावट :

गिरजाघर मुझे यह बताता था की मुझे मसीह के लिए जीना है। वे मुझे यह नहीं बताते थे की मसीह मेरा जीवन है। इसलिए मैं भ्रम के मार्ग पर चल पडा और मसीह के लिए जीने की कोशिश करने लगा। मैं साक्षी देता था, बजाए इस के की मसीह एक स्वैच्छिक विचार के रूप में बोले। मेरी साक्षीयां सच थीं पर दैवी शक्ति का मुकाबला नहीं थीं। यीशु ने गैर मसीहों को कभी भी याद कर के कुछ नहीं कहा। वे दैवी शक्ति से भरे हुए पात्र थे जो उन के जीवन से निकलती थी, क्योंकि वे वही करते थे जो अपने पिता को करते हुए देखते थे और वही कहते थे जो उन के पिता को कहते हुए सुनते थे। वे बिमारों को चंगा करते और मरे हुएों को जिन्दा करते और कोडीयों के घावों को साफ करते और प्रचार करते जाते। यह मेरे प्रचार के तरीकों से कितना अलग थ। मैं केवल वह कहता जो याद कर के आता। पापीयों को डाँट डपट कर दूर भगा देता। पापी, परमेश्वर की शक्ति देखने के लिए मेरे पास नहीं आते, वे मुझ से दूर भागते, ताकी मैं इन पर अध्यात्म विध्या से वार न कर सकूँ।

मैं प्रेम करना चाहता था, क्योंकि अच्छे मसीही को अपने दुश्मनों से प्रेम करना है। चाहे कुछ भी हो सारे कार्यों का केन्द्र मैं ही था। मैं कोशिश कर रहा हूँ। बाईबल बताती है की मुझे कोशिश से बाहर निकल कर उस की शांति में प्रवेश करना है। (इब्रा ३,४)। इसलिए, अब जब मैं जानता हूँ की मैं जीवित नहीं हूँ, तो मैं मसीह के पास आ कर कहता हूँ, "आप मेरा जीवन हो, और आप इस सृष्टि के प्रेम हो, इसलिए अपने प्रेम को इस समय, पात्र के व्दारा छोडीए।" आपने देखा अब मैं अपने बारे में नहीं बोल रहा। मैं यह नहीं चाहता की परमेश्वर मुझे उन्नति दे। मैं स्वयं पर दृष्टि नहीं डाल रहा या अपनी आवश्यकता पर, क्योंकि अब मैं नहीं जी रहा। मसीह जी रहा है। इसलिए, मैं अपनी आँखें मसीह पर लगाऊँगा और उसे पुकारूँगा ताकी वह अपना जीवन और अपनी आलौकिक शक्ति को इस पात्र के व्दारा जो की उस की देह है छोड सके। सच का बिलकुल ही अलग नजरीया। जीवन का बिलकुल ही अलग दृष्टिकोण। यही दृष्टिकों कार्य करता है। मैंने सब को आजमा कर देखा है। यही मेरे जीवन में कार्य करता है।

आवश्यकता है : नए नियम के आदेशों की गहरी समझ की :

नए नियम में दिए गए आदेशों की गहरी समझ की आवश्यकता थी। उदहारण के लिए, पौलुस कहता है,

जैसा पवित्र लोगों के योग्य है वैसा तुम में व्यभिचार और किसी प्रकार के अशुद्ध काम या लोभ की चरचा तक न हो। (इफि ५:३)।

इस का अर्थ मेरी समझ में यह आया की मुझे व्यभिचार और अशुद्धता से दूर रहना है। यहां एक बार फिर स्वयं के कार्य पर अधिक जोर था बजाए उस दैवी शक्ति के जो मुझ में थी।

नए नियम में कितने सारे आदेश थे। कुछ तो यह कहते हैं की मुझे उन्हें करना है। परन्तु, मैं यह ध्यान देना भूल गया था की "मैं" का अर्थ दुबारा समझाया गया है।

"मैं", जो दुबारा समझाया गया है :

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैं और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।
(गल २:२०)

वह नया "मैं" कौन हूँ जिसके बारे में नया नियम बताता है? यह स्वयं का मैं नहीं हूँ, अब यह मसीह का मैं हूँ। इसलिए, यदी नया नियम कुछ करने को कहती है तो इस का अर्थ यह है की वह कार्य को मसीह ने करना है। यानी, मेरे द्वारा मसीह को उसे करने देना है। इसलिए मुझे इस में को ध्यान में रखना है। यदी मैं, मैं के बारे में सोचूँ, तो इस का मतलब है की मुझे मसीही मैं के बारे में सोचना है। जब मैं जीवित हूँ तो इस का अर्थ यह है की मसीह जीवित है।

फिर से, यदी पौलुस कहता है, "मैं मसीह के द्वारा सब कार्य कर सकता हूँ, जो मुझे शक्ति देता है" (फिल ४:१३), इस का अर्थ यह है की वह दुबारा समझाए गए मसीही मैं के बारे में कह रहा है।

मैं अपने आप को मार कर कह सकता हूँ, "स्वयं, आज से तुम इस तरह अपने बारे में सोचना मत भूलना," जिस का अर्थ यह है की धर्म की ओर वापस जाना, जो कहता है की तू यह कर, तू वह कर। इस के बदलेमें यह कहता हूँ, "मसीह, कृपया मुझे यह सच याद दिलाना यदी मैं इसे भूल कर फिर से स्वयं बुद्धि की ओर लौट जाऊँ।" अब आप के अंदर वास कर रही लवशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर होता है की वह आप को वह बनाए जो आप हैं, बजाए स्वयं की कोशिश कर के स अवस्था को बनाए रखने के।

धर्म, "मैं इसे करने की कोशिश करूँगा" लक्षण :

यह सारे धर्म सम्बंधि लक्षण कितने धूर्त हैं। यह हर जगह हर समय उभर उठते हैं। केवल मसीह इन्हें चंगा कर सकता है। परमेश्वर के पीछे चलने का कपटीपन भी बाहर से इतना सीधा दिखता है की यह मानना कठिन है की यह इतना गलत और शैतानी हो सकता है। परन्तु यह देखीए की मसीह के न होने के बारे में नया नियम क्या कहता है, मसीह जो हमारे मुखिया है, जो हमारी शक्ति है।

कोई मनुष्य आत्माहीनता और स्वर्गदूतो की पूजा करा के तुम्हें दौड के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है, और अपना शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है, और उस शिरोमणी के पकडे नहीं रहता जिस से सारी देह जोड़ों और पट्टों के द्वारा पालन पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है। जब की तू मसीह के साथ संसार की आदी शिक्षा की ओर से मर गये हो, तो फिर क्यों उन के समान जो संसार के हैं जीवन बिताते हो? तुम ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो की 'यह न छूना,' 'उसे न चखना,' और 'उसे हाथ न लगाना?' (ये सब वस्तुएँ काम में लाते लाते नष्ट हो जाएँगी) क्योंकि यह मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार है। इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और आत्महीनता, और शारीरिक योग्याभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु सरीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (गल २:१८ - २३)

मुख्य बात यह है की मैं कुछ नहीं कर सकता क्यों कि अब मैं नहीं जी रहा। मैं प्रेम नहीं कर सकता - यह प्रभु का प्रेम है जो मेरे हृदय से उमड रहा है। मैं प्रार्थना नहीं कर सकता क्योंकि मुझे पता नहीं की कैसे करना है, परन्तु आत्मा वह कार्य करती है जो शब्द नहीं कर सकते। मैं केवल अपने सर को पकड लेता हूँ, जहाँ से मुझे शक्ति मिलती है। मैं स्वयं की इच्छा से कुछ नहीं करता, परन्तु जो देखता हूँ और जो सुनता हूँ (यूहन्ना ५: १९, २०, ३०)। इसलिए मैं वह हूँ जो दैवी विचारों की ओर ध्यान लगाता हूँ। मैं यह चाहता हूँ की परमेश्वर के दर्शन मेरे मन को भर दें। मैं चाहता हूँ के मेरे मन में परमेश्वर के शब्दों को सुन सकूँ। जो वह मुझे कह रहा है और जो दिखा रहा है उसे मैं लिख लेता हूँ और उसे वह कार्य करने देता हूँ जो उसने मुझे बताया है। वह मेरे लिए अलफा और ओमेगा बन गया है, प्रारंभ और अंत। वह सर्वसव है और सब में है। वह मेरा जीवन है।

अध्याय चार के कुछ मुख्य विचारों पर पुनर दृष्टि :

- अब मैं नहीं जी रहा।
- मैं यह मान ने को नहीं तैयार की मैं जीवित नहीं हूँ।
- धर्म यह नहीं मानता की हम जीवित नहीं हैं।
- धर्म हमें प्रोत्साहित करता है की हम कोशिश करते जाएँ।
- मसीहत चाहती है की हम कोशिश करना छोड़ कर विश्राम में प्रवेश करें।
- और कुछ बातें जो आप को मुख्य लगें, उन्हें लिख लें।

विचार करें और विवाद करें :

- आप अपने आप को स्वयं मैं यह मसीह मैं की तरह सोचते हैं? अपने अंदर के स्वभाव के हारे में विवाद करें।
- क्या आप को धर्म ने प्रशिक्षण दिया है की आप मेहनत करें या मसीहत ने की सेहनत करना छोड़ दें? आप की शिक्षा कके वारे में विवाद करें। यदी आप को मेहनत करना सिखाया है तो इस के लिए पश्चताप करें और इसे शेतानी समझ कर त्याग दें, ताकी आप मसीह में नया जीवन पाने के लिए स्वतंत्र हो जाए। अपने छोटे समूह के साथ प्रार्थना में समय बिताएँ।
- **पत्राचार** - "प्रभु, आप इस बारे में मुझ से क्या कहना चाहेंगे की अब मैं जीवित नहीं हूँ? क्या मैं धर्म में जकड़ा गया हूँ? मैं कैसे स्वतंत्र हो सकता हूँ? आप इन प्रश्नों को और परमेश्वर के जवाबों को एक अलग नोटबुक में लिख लें। अपने दिल की बातों को अपने समूह को लोगों को साथ बाँटने के लिए तैयार रहें। यह अच्छा होगा की आप अपना पत्राचार समूह के सामने पढ़ सकें।

5.यीशु मेरा जीवन है

सच # ४

आखिरकार हमने स्वयं से छुटकारा पा लिया है। वह अब न तो बुराई के लिए जी रहा है न ही अच्छाई के लिए। अब वह जीवित नहीं है। हम परमेश्वरके बदले हुए कार्यक्रम के लिए पूरी तरह तैयार हैं। हम इस बात से बाहर आ गए हैं की यह किसी करहा का स्वयं सुधार कार्यक्रम है जिस में परमेश्वर मुझे और बेहतर बनाएगा। परन्तु, यह ऐसा नहीं है। वह मुझे पूरी तरह बदल डालेगा और वह मुझे अदन के अनुभव वापस देगा, जहां मैं दैवी ऐकता में जीवित रहूँगा और जीवन के वृक्ष का फल खाऊँगा। अब मैं अपनी दुध्दि पर विश्वास नहीं करूँगा, क्योंकि वह वृक्ष मना है। अब मैं अपने मन की ओर ध्यान लगाऊँगा, उस बहाव की ओर जो मेरे अंदर उमड़ता है, जब मैं अपना ध्यान यीशु पर लगाता हूँ, जो मेरे विश्वास का उत्पादक और अंत करने वाला है। अब मैं अपने आप कुछ नहीं करता। मैंने यीशु की तरह जीना सीख लिया है, जो स्वयं से कुछ नहीं करता, परन्तु वही जो वह अपने पिता को करते देखता है या सुनता है। (यहून्ना ५:१९, २०, ३०)।

इस तरह का जीवन बिताना सीखने के लिए कुछ समय लग सकता था, क्योंकि मुझे गलता रास्ते की शिक्षा बहुत अच्छि तरह दी गयी है। कई आदते मुझ में इस करह बैठ गयी थीं की जिन्हें तोडना मुश्किल था। क्या मैंने यह कहा कि मुझे तोडना मुश्किल होगा? क्या आप समझ रहे हैं की मैं क्या कहना चाहता हूँ? इस भ्रम से निकलने में कई वर्ष लग जाएंगे। मुझे फिर से कोशिश करने दो। "मेरे अंदर कई वर्षों से कई आदते हैं, जिन्हें मसीह तोडेगा।"

हाँ, यह ठीक है। मुझे इस वक्त जिस की आवश्यकता है, वह है एक सहारा देने वाला समूह, जो मेरी ऐसी गलतीयों को सुधार सके, ताकी हम सब अपने लक्ष्य की ओर तेजी से जा सकें जो है, "यीशु में जीना, जो है हमारा जीवन।"

आप यह साच रहे होंगे की यदी इन सब कार्यों को मैं नहीं कर रहा हूँ, तो मुझे करना क्या है? अच्छा प्रश्न है। मैं चाहता था की आप इसे पूछें।

मानव पात्र का कार्य यह है की वह अपना ध्यान यीशु पर लगाएँ :

मैं अपना ध्यान यीशु पर लगाता हूँ, जो मेरे विश्वास का उत्पादक और अंत करने वाला है। इस का अर्थ क्या है? यूनानी में, आँखों को ध्यान से लगाने का मतलब है की सफाई से देखना, जो इब्रानियों १२:१ में बताया गया है। यह प्रारम्भ के लिए बुरा नहीं है। इस का अर्थ यह है की मैं जहाँ भी देखूँ वहाँ यीशु को पाऊँ। बाईबल भी यही बताती है की यदी मैं किसी भूखे को रोटी देता हूँ तो वह यीशु को देने के समान है, और यदी मैं प्यासे को पानी दूँ तो वह यीशु को देने को समान है। यह सही है, क्योंकि यीशु सर्वसव है और सब में है। उसी में सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं (कुल १:१७)। इस तरह वह स्वयं को सारे विश्व में साबित कर सकता है।

मैं अपने जीवन के रास्ते पर उस से दर्शन माँगता हूँ और कहता हूँ की, "प्रभु, क्या इस स्थिती में आप अपने आप को मुझे बताएँगे?" हर एक स्थिती में मैं भविष्यदर्शि बन जाता हूँ। पुराने भविष्यवक्ताओं की करह, हम उसे हर जगह देखते हैं, जैसे बवण्डर, तूफान, पहाड, पेड, सृष्टि, बच्चा। दाउद केहता है की, "यदि मैं पाताल लोक में जाऊँ, तो भी तू वहां है।" इसलिए, कोई ऐसी जगह नहीं की जहां मैं देखूँ और इमानुएल को न देखूँ। परमेश्वर हमारे साथ।

ठउन दर्शनों को देख कर, जो वह मेरी आँखों के सामने लाता है, मैं उस से कहता हूँ की वह मुझ से बात करे, और मैं अपने स्वैच्छिक विचारों, भावों और भावनाओं की ओर ध्यान लगाता हूँ, जो मेरे अंदर उबलने लगे हैं। अब मैंने मसीह यीशु में जीवन की आत्मा को पहचाना, जिस के बारे में पौलुस रोमियों आठ में बताता है।

तो मैं कैसे जीऊँ? मैं एक प्राप्त करने वाले की करह जी रहा हूँ। मुझे दैवी विचार प्राप्त होता है और मैं उस पर निर्भर रहता हूँ। कार्य करना भी है, परन्तु यह प्राप्ति के बाद आता है। परमेश्वर ने मिस्रियों से कहा था,

"तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूँ, जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है। तू अपना मूँह पसार, मैं उसे भर दूँगा।" (भजन ८१:१०)।

क्या आप रिशत्दारी को देख रहे हो? परमेश्वर मुक्ति देने वाला है। वह शक्ति और ताकत है। मैं अपना मूँह खोलता हूँ और परमेश्वर को उसे भरने देता हूँ। क्या कभी आपने चिडिया के बच्चे को देखा है जब उसकी मां घोंसले में उस के लिए किडे पकड कर लाती है?

आप केवल खुले हुए मुँह देखेंगे। यही हमारी तस्वीर है। हम केवल अपना मुँह खोल कर बैठे रहते हैं ताकी परमेश्वर से सब कुछ प्राप्त कर सकें और उसे अपने कार्यों के द्वारा जीवित रखते हैं। हर कार्य उसकी ताकत से पूरा होता है। यही मैं अपनी सामर्थ से करूँ तो वह मरा हुआ कार्य होता है (इब्रा ६: १,२)।

हमें इश्माएलों को नहीं बनाना है :

क्या आप को वह याद है जब परमेश्वर ने अब्राम से कहा था की वह उसके द्वारा महान कार्य करेगा (उत्पत्ति १२ और १५)? थोड़ी देर रुकने के बाद (ग्यारह वर्ष) की परमेश्वर इसे करेगा और यह जान कर की उसकी मदद के बगैर नहीं कर पाते, अब्राम और उसकी पत्नि एक अच्छे विचार के साथ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने को तैयार हो गयो। उन की मेहनत का नतीजा इश्माएल था, जिसे परमेश्वर ने नाकार कर दिया, यह कह कर की, "सेरा के द्वारा मैं तुझे एक पुत्र दूँगा..." इसी तरह जब मैं अपने तरीके अपनाता हूँ, तो मैं इश्माएलों को उत्पन्न करता हूँ। मैं अपनी ताकत और अपनी बुद्धि के द्वारा परमेश्वर के वचन को पूरा करना चाहता हूँ। मैंने अपने प्रारम्भ के दिनों में, जब मैं मसीही बना था, तब मैंने कई इश्माएल बनाए, ताकी अपनी मेहनत से मैं परमेश्वर को खुश कर सकूँ।

मरे हुए कार्य

इन परिश्रम के कार्यों को परमेश्वर मरे हुए कार्य कहता है। :

इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ कर हम सिधता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, (इब्रा ६:१)।

मरा हुआ कार्य वह है जो मैं करता हूँ, बजाए इस के की दैवी विचारों की ओर ध्यान लगाने के (योनी दर्शन, रेहमा, बोझ और शक्ति)। मेरा प्रारम्भ का मसीही जीवन मरे हुए कार्य की तरहा था। उस समय मैं कार्य कर रहा था। मैं धर्म और फरिसीयों की रीती में इतना फँस गया था की मुझे पता ही नहीं चला। आज का मसीही जीवन भी इसी फन्दे में फँसा हुआ है, क्योंकि हमें यह सिखाया गया है की बुद्धि के वृक्ष से खाओ और जीवन के वृक्ष पर विश्वास मत करो (यानी, हमारी आत्मा के विचार और दर्शन)।

"परमेश्वर के राज्य में उत्पात मचा हुआ है और उत्पात मचाने वाले लोग इसे बलपूर्वक ले लेते हैं।" मैं समझता हूँ की जो लोग हमारे धर्म की इस गलती को उत्पातक ढंग से सुधार लेते हैं वही उस रास्ते में प्रवेश करते हैं जो परमेश्वर ने उन के लिए बनाया है।

क्या आप इन की तरह उत्पादक बनेंगे? क्या आप मसीह के पास आएंगे जो आप के अंदर बसा हुआ है या आप उसे अध्यात्म विध्या सम्बंधि विचारों के साथ अपना कर खुश हैं? चुनाव आप ने करना है।

जीने का नया रास्ता :

मेरी प्रार्थना कुछ इस पिरकार होती है: "परमेश्वर, आप क्या बताना चाहते थे? वह नाम क्या है जो मैं भूल रहा हूँ? मेरे विपरीत आ रही शक्ति को तू तोड़। अपने संदेश के साथ किसी दूत को इस व्यक्ति के पास भेजीए। परमेश्वर, मुझे याद दिलाईए की। परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो की तूने यह विचार मुझे दिया। इसी समय मेरे द्वारा अपनी शक्ति को उण्डेल। अपना प्यार इसी समय मेरे द्वारा उण्डेलिए। मेरे हृदय में आप का प्यार समा जाए। डर और गुस्से को मेरे मन से काट दीजीए। मैं यीशु मसीह के नाम में डर की आत्मा पर काबू पाता हूँ। मैं इस विपरीत विचार को यीशु के नाम में डाँटता हूँ। प्रभु मेरे मन और दिमाग को साफ कर। प्रभु, मेरे हृदय की इच्छाओं को बदल। अपनी इच्छाओं को वहां पर भर। प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद देता हूँ की तूने मेरे साथ अपने आप को जोडा है और अब तुम मेरा जीवन हो। मैं आप का धन्यवाद देता हूँ की आप इस संसार की शक्ति हो। प्रभु मेरे द्वारा अपनी शक्ति को छोडीए....।"

हम दूसरे के द्वारा अपने जीवनों के प्रति सतरक हो जाते हैं। हम अपने दिमागों को उन वस्तुओं पर सगाते हैं जो स्वर्ग की हैं, उन वस्तुओं पर नहीं जो इस धर्ति की हैं, क्योंकि हम मर चुके हैं और हमारे जीवन परमेश्वर में यीशु के पास सुर्क्षित हैं।

अध्याय पाँच के मुख्य विचार :

- अब मैं बुराई के लिए नहीं जीता
- अब मैं अच्छाई के लिए नहीं जीता।
- अब मैं जीवित नहीं हूँ।
- मसीह मेरा जीवन है।
- कुछ करने के लिए मुझे परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं।

- हमेशा मुझे यीशु पर दृष्टि लगाए रहना है।
- यदी कुछ भी कार्य मैं अपनी इच्छा से करता हूँ तो वह मरा हुआ कार्य है, जिस के लिए मुझे पश्चताप करना है।
- परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए यदी मैं स्वयं प्रयत्न करता हूँ, तो इस का नतीजा यह होता है की मैं इश्माएलों को पैदा करता हु, जिस के व्दारा कई परेशानियां होती हैं और इन्हें परमेश्वर दुतकार देता है। मुझे हर इश्माएल के लिए पश्चताप करना है।
- अब मेरी प्रार्थनाओं के व्दारा मैं यीशु को पुकारता हूँ।
- कुछ और विचार जो आप के लिए मुख्य हैं उन्हें लिख लीजीए।

विचार करें और विवाद करें

- क्या जीवन इतना आसान है की हम केवल मसीह पर ध्यान लगा सकते हैं? क्या कुछ और बातें नहीं हैं जिन पर हमें ध्यान लगाना है? क्यों न हम अपना ध्यान सामने के कार्य पर लगाएँ? हम अपना ध्यान मसीह पर और सामने कार्य पर एक साथ कैसे लगा सकते हैं? क्या ऐसा हो सकता है? यदी हाँ, तो कैसे? बताईए की आप कैसे कर सकते हैं। क्या परमेश्वर यही चाहता है?
- क्या हर समय परमेश्वर की बुद्धि के साथ रहा जा सकता है? यदी हाँ, तो बताईए की आप ने इसे कैसे किया - यदी एक दिन के लिए भी किया हो तो बताइए। क्या परमेश्वर की बुद्धि के साथ रहना एक आदत है, जिसे हम सीख सकते हैं? क्या यह आदत स्वंस की बुद्धि में जीने की आदत को बदल सकती है? यदी हम इस पर ध्यान लगाएँ तो कितने समय में हम इसे सीख सकते हैं? यदी हम मसीह से कहें की यह आदत वह हम में डाले, तो कितना समय लग सकता है? क्या यह इस लायक है की हम इस पर इतना समय व्यतीत कर सकते हैं? क्या इस नये जीवन के रास्ते को अपनाने के लिए आप तैयार हैं? क्या आप एक समूह बनाएंगे जो आप को इस नये रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित करे? यदी हां, तो देखते रहीए की आप के जीवन में और आप के समूह में परमेश्वर कितने अचम्बित कार्य करता है।

- जब आप स्वयं को या दूसरों को स्वयं के भ्रम में जीते हुए देखते हैं, तो आप स्वयं को या दूसरों को मसीह के पास ले जाने को लिए क्या प्रोत्साहन दोगे, उन्हें लिख लीजिए। (यानी, हम कुछ समय के लिए अपने आप को मसीह के सामने शांत करें और देखें की इस बारे में मसीह क्या कह रहा है। या अभी हम कुछ समय प्रार्थना में बिताएँ और परमेश्वर से कहें की इस स्थिती पर लह अपनी शक्ति को उण्डेले।)
- **पत्राचार** - आप एक पृष्ठ लीजिए और पत्रे के ऊपर लिखीए, "प्रभु, मेरा जीवन बनने के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं? विशेष रूप से और प्रायोगिक रूप में इस का अर्थ क्या है? मैं प्रार्थना करता हूँ की आप मुझ से बात करें। धन्यवाद हो प्रभु।" फिर स्वैच्छिता पर ध्यान लगाईए, यीशु पर केंद्रित हो और अपने अंदर के बहाव को लिख लीजिए। आपने जो लिखा है उसे अपने समूह के साथ बांटने के लिए तैयार हो कर आईए।

6. मैं न्याय के लिए मर चुका हूँ

सच # ५

आगे बढ़ने से पहले एक बार फ्र देखते हैं: "बुरे व्यक्ति के लक्षण" से बाहर निकलने का रास्ता यह है की इस बात को मान लें की परमेश्वर सर्वसव है और सब में है, और हम केवल खाली पात्र हैं जिन्हें वह भर देगा। हम अपने आप के लिए नहीं जीते परन्तु, मसीह अपना जीवन हमारे द्वारा जी रहा है। क्या आप विश्वास करेंगे की अब तक हम लोगो ने बस इतना ही कहा है? इतनी सी बात कहने के लिए मुझे कितने पन्ने लिखने पड़े। अब हम आगे बढ़ कर एक और मुख्य बात के बारे में जानते हैं जो हमें इस "बुरे व्यक्ति के लक्षण" से छुटकारा दिलायेगा।

मैं अपनी आखों को परमेश्वर की आज्ञाओं पर लगा कर अपना जीवन व्यतीत करता हूँ :

मैंने इस लक्षण के बारे में अध्याय एक में बताया है। जब मैं नए नियम में कोई आज्ञा को देख लेता तो उसे पूरा करने के लिए पूरी कोशिश करता। तब एक और आज्ञा मुझे दिख जाती, और मैं उसे पूरा करने में लग जाता। इस का नतीजा यह हुआ की मेरे पास इतनी आज्ञाएँ हो गयीं की उन के बोझ उठाना कठिन हो गया। मैं दोषी अनुभव करने लगा, और झुनझला कर पुकार उठा, "यह कोई संमपूर्ण जीवन नहीं है।" हाँ, इस बात से परमेश्वर भी सहमत था। यह संमपूर्ण जीवन नहीं था। परन्तु, मैं क्या गलती कर रहा था? क्या यह सच नहीं है की मुझे अपने आप को परमेश्वर की आज्ञाओं की ओर केन्द्रित कर उन्हें पूरा करना है?

तुम्हें जवाब का एक हिस्सा तो मिल गया है। तुम यह जानते हो की तुम्हें कुछ नहीं करना है, बस मसीह के पास जा कर उस से कहना है की वह आप के अंदर कार्य करे। आप यह भी जानते हैं की आप नहीं जी रहे, परन्तु मसीह आप का जीवन है। अब हम यह जानेंगे की एक विश्वासी के जीवन में आज्ञाओं का क्या महत्व है।

आप सिनै पर्वत या कल्वरी की पहाड़ी से उपदेश दे रहे हैं :

पौल योंगी चो ने कहा, "आप या तो सिनै पर्वत से या कल्वरी की पहाड़ी से उपदेश दे सकते हैं।" यदी आप सिनै पर्वत से उपदेश दें तो आप परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में बता

सकते हैं। यदी आप कल्बरी की पहाड़ी से उपदेस दें तो आप एक विश्वासी के हृदय में फिर से जीवित हो उठे मसीह की ताकत के बारे में बता सकते हैं। एक मृत्यु की ओर ले जाता है और दूसरा जीवन की ओर ले जाता है।

जिसने हमें नयी वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं वरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है। यदी मृत्यु की वह वाचा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गये थे, यहां तक तेजोमय हुई की मूसा के मुँह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएली उस के मुँह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे, तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? क्योंकि जब दोषी ठहराने वाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मि ठहराने वाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? (२ कुरिं ३:६-९)।

दण्ड और मृत्यु का प्रचार, या धर्मिता और जीवन का प्रचार :

क्या आप दण्ड और मृत्यु का प्रचार स्वीकार कर सकेंगे? मृत्यु के प्रचार का क्या हो सकता है की आप दौरा करते हुए प्रचार करते हुए, हर जगह जहां पर जाते हो वहां पर दण्ड और मृत्यु को फैला रहे हों। हो सकता है की आपने इस के बारे में अपनी उन्नति के विषय में लिख लिया हो:

"दण्ड और मृत्यु के प्रचार का विशेषज्ञ। मैं वादा करता हूँ के आप के जीवन में दोष और दण्ड भर दूँगा क्योंकि आप इसी के लायक हैं। आप ने पाप किया है और परमेश्वर पापीयों से घृणा करता है। मैं आप का सामना परमेश्वर की आज्ञाओं से करवाऊँगा, जिन्हें आप ने तोडा है, ताकी आप पश्चताप करके दुखित होकर, रोते हुए उस के पास आएं। मेरा उपदेश समाप्त होने तक आप दुख में रोते बिलखते रहोगे।"

आकर्षक है, है न? यदी मैं सच में किसी दोष के तले दबा हुआ हूँ, और सोचता हूँ की परमेश्वर ऐसा ही चाहता है। "ऐ उपदेशक आओ दुबारा मुझ पर वार करो। मेरे लिए यही सही है, यही अच्छा लगता है। आओ, एक और बार। थोडा जोर से।"

दुर्भाग्यवश, धर् इसी करहा की बिमारी से जूझता है, इस कारण वह संसार में अपनी हँसी करवाता है। दण्ड का प्रचारक सिनै पर्वत से प्रचार कर रहा है।

जो दूसरे तरह के प्रचार के बारे में बताया गया है, वह है धर्मिता का प्रचार और आत्मिक जीवन का प्रचार। इस प्रचारक के उन्नति के पत्रचार में यह लिखा हुआ होगा:

"मैं तुम्हें बताता हूँ की मसीह में तुम कौन हो। मसीह ने तुम्हें आज्ञाओं से, उन के दोष और दण्ड से मुक्त किया है, और तुम्हें धार्मिकता का चोगा पहनाया है जो तुम्हारा नहीं है, वह धार्मिकता जो विश्वास से मिलती है। मैं तुम्हें बताऊँगा की उसकी और कैसे जाया जाए, परमेश्वर के बहाव को स्वभाविकता से अपने अंदर बहने देते हुए। आओ और जानों की अब तुम्हारे जीवन में कोई सीमा नहीं है, सिवाए सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सीमा के।"

मैं उम्मीद करता हूँ की आप इस दूसरे प्रचारक की ओर आकरशित हुए होंगे। वह कल्बरी की पहाड़ी से प्रचार कर रहा है। वह नयी वाचा की सच्चाई को प्रस्तुत कर रहा है।

हम आज्ञाओं के लिए मर चुके हैं :

वैसे ही है मेरे भाईयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, की उस दूसरे के हो जाओ जो मरे हुआओं में से जी उठा: ताकी हम परमेश्वर के लिए फल लाए। क्योंकि जब हम शारीरिक थे तो पापों की अभिलाशाएँ जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं परन्तु, जिस के बन्धन में हम थे, उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, की लेख की पुरानी रीती पर नहीं वरण आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं। (रोमि ७:४ - ६)।

कभी न कभी मेरे जीवन में मुझे इस सच को मानना होगा की मैं आज्ञाओं के लिए नहीं जी रहा। इस का अर्थ यह है की मैं अब मैं अपना ध्यान आज्ञाओं पर नहीं लगाता। पुरानी वाचा के समय लोग ऐसा करते थे, अब नहीं करते। मैं मर चुका हूँ और अब मेरा जीवन मसीह में छुप गया है। मसीह ने आज्ञाओं को पूरा किया है, जो मैं एक बलहीन और पापी मनुष्य होने के नाते पूरा नहीं कर पा रहा था। अब मसीह मुझ में जीवित है, जिस के कारण मुझे शक्ति मिली है की मैं आज्ञाओं में बताई गयी पवित्रता से भी अधिक पवित्र जीवन बिता रहा हूँ, यदी मैं अपना ध्यान उसके कार्यों पर रखूँ, जो मेरे भीतर हो रहे हैं। हां, यदी मैं अपना ध्यान यीशु पर न रखूँ, तो मैं पाप में गिर सकता हूँ। इसलिए मैं आज्ञाओं को अपने तले एक सुरक्षा जाल की तरह बिछा कर रखता हूँ, ताकी यदी मैं अपने अंदर की आत्मा से जीवन लेना छोड़ दूँ, तो मैं यदी गिरा तो आज्ञाओं तक ही गिरूँगा, और वे मुझे पकड़ लेंगी ताकी मैं लज्जित न हूँ।

आज्ञा का उद्देश्य :

आज्ञाओं का उद्देश्य क्या था? कई उद्देश्य थे। परमेश्वर ने प्रारम्भ में आज्ञाओं को नहीं रचा था। यह उन की रचना का हिस्सा नहीं थीं। इन को अपराध के कारण जोड़ा गया। जब मैंने, अदन की वाटिका में परमेश्वर पर से अपनी दृष्टि को हटा लिया और उस से साहचर्य

तोड़ दिया, तो परमेश्वर को आज्ञाओं को जोड़ना पड़ा ताकी यह एक सुरक्षा की जाली का काम करे ताकी मैं अपने आप को पूरी तरह न बरबाद करलूँ। यह मुझे बाँद के रखति थी ताकी मैं स्वयं को परमेश्वर की महिमा के आगे बरबाद न करलूँ। यदी मैं आज्ञाओं की थोड़ी सी आवश्यकता को न पूरा कर सकूँ, तो मैं स्वयं को नुकसान पहुँचा सकता हूँ और मुक्ति के बाद परमेश्वर की अनुग्रह की ख़ुबसूरति का आनंद न ले पाता।

पर विश्वास के आने से पहले, व्यवस्था की आधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होने वाला था, हम उसी के बंधन में रहे। (गलतियों ३:२३)।

इस करके परमेश्वर ने आज्ञाओं को जोड़ा ताकी मैं स्वयं को न बरबाद करलूँ। और साथ ही साथ यह आज्ञाएँ मुझे कुछ सिखा भी देंगी। यह एक शिक्षक था जिस के पास सिखाने के लिए विषेश पाठ थे। हम स्वयं परीपूर्ण न हो पाते। कोई भी धर्म नहीं है, एक भी नहीं। इसलिए मुझे यह सीखना था की यदी मैं आज्ञाओं को मानूँ तो भी मैं मसीह की तरह परिपूर्ण नहीं हो पाता।

इसलिए, व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है, की हम विश्वास से धर्म ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे। (गलतियों ३:२४, २५)।

जब मैं मसीह के पास आया तो क्या मैंने अपने पाठ सीखे? क्या मैंने यह सीखा की मुझे अपनी दृष्टि आज्ञाओं से हटा कर मसीह पर लगानी है? नहीं, मैं तो बाईहल में से सारी आज्ञाओं को खोजने लगा, और अपना ध्यान उन्हें पूरा करने में लगाने लगा, ताकी अपने प्रभु को संतुष्ट कर सकूँ। इस का नतीजा यह हुआ की मैं, निराशा, दण्ड और मृत्यु को अनुभव करने लगा, क्योंकि आज्ञा का अंत मृत्यु है।

मैंने यीशु को अपने शब्दों के द्वारा ढूँढ निकाला था (वह मेरा प्रभु और मुक्तिदाता है), परन्तु, मैं अब तक विश्वास को रास्ता नहीं ढूँढ पाया था।

क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, रमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बप्तिस्मा लिया है उन्होने मसीह को पहन लिया है। (गल ३:२६, २७)।

मुझे मसीह को पाने का, मसीह में रहने का, या जीवन की राह में मसीह पर दृष्टि टिकाए रखने का कोई ज्ञान नहीं था। मैं ने अपनी दृष्टि आज्ञाओं पर, वह जो मुझे करना है, उन पर लगा रखी थी और मैंने पहचाना की आज्ञा मेरे लिए मृत्यु थी जो, दण्ड, दोष, निराशा

और अंत में मृत्यु के रूप में प्राप्त हुई थी। इस तरह की बहुतायत के जीवन के बारे में मैंने नहीं सोचा था।

परमेश्वर ने हमेशा साहचर्य को दिया - मनुष्य ने आज्ञाओं को चुना :

परमेश्वर यह नहीं चाहता था की आज्ञाएँ हों। उन्हें, इन्हें जोड़ना पड़ा जब साहचर्य तोड़ा गया और पाप उत्पन्न हुआ (गल ३:१७, १९)। जब उन्होंने इन्हें जोड़ा, तब भी उन्हें इस की इच्छा नहीं थी। मूसा इस कहानी को व्यवस्थाव्हरण में दोहराता है, और आप वहाँ पाएँगे की परमेश्वर, इस्राएलीयों को अपनी आवाज सुना रहा था। साहचर्य की वापसी। अदन की वाटिका की रीती से वापसी। परन्तु, उन्होंने उसे ठुकरा दिया, क्यों कि उन्हें वह आग नहीं पसन्द थी जो उस की आवाज के साथ निकलती थी। इस का नतीजा यह हुआ की परमेश्वर को बल पूर्वक उन्हें आज्ञा देनी पड़ी।

अब परमेश्वर अपनी कलीसीया को एक बार फिर अपनी आवाज देना चाहता है, जब वह अपना घर हमारे मनों में बनाता है और हमें एक नए पर्वत पर लाता है, सीन्ने पर्वत पिछला पहाड़, सीन्ने पर्वत था, आज्ञा की जगह। यह सीन्ने पर्वत है, जहाँ हम पवित्रात्मा के साथ सच में साहचर्य अनुभव करते हैं। और वह हमें केवल एक ही चेतावनी देता है:

"सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुँह न सोडो।" (इब्रानियों १२:२५)।

सब से बुरा नतीजा सह होगा की मैं परमेश्वर की साहचर्य से मुख मोड़ लूँ और आज्ञाओं के साथ जीने लगूँ। उसे हमेशा साहचर्य पसन्द थी, उत्पत्ति में अदन वाटिका से ले कर प्रकाशितवाक्य में दुल्हन की शादी तक। वह हमेशा अपनी रचना के साथ साहचर्य माँगता है। हमेशा हम लोगो ने उसे धुत्कारा है और बुद्धि के वृक्ष से खाया है ताकी हम स्वयं से अच्छा और बुरा पहचान सकें और अपने आप को बचा सकें या मुक्ति पाने के बाद आज्ञाओं को मान सकें।

आप का उत्तर :

आप क्या करेंगे? क्या आप आज्ञा के द्वारा जीवित रहेंगे, उन्हें मानते हुए, सुरक्षा के लिए उन पर व्धास करते हुए? या आप सृष्टि के रचेता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज को सुनते हुए और उस के दर्शन को प्राप्त करके झीवन बिताना चाहेंगे? आप परमेश्वर के वचन में आज्ञाओं पर अपना ध्यान लगाएँगे या पढते हुएयीशु मसीह के पहचानेंगे? क्या आप आज्ञा पालन करने की कोशिश करते रहेंगे या अपने अंदर उसकी ओर देखेंगे जो इन सब आज्ञाओं को रख चुका है और अब आप को शक्ति देता है की आप इन सब से आगे बढ जाएँ?

आप को चुन ना है। या आप पवित्रात्मा की संगति में रहेंगे, दैवि विचारों के माध्यम से परमेश्वर की आवाज को सुनते हुए, दर्शन को देखते हुए और बोझ को

उठाते हुए, या आप स्वयं से जीएंगे, उन आज्ञाओं के साथ जो आपने खोज निकाले हैं और उन्हें मानना चाहते हैं। एक रास्ता जीवन है और दूसरा मृत्यु। "आज ही आप चुन लीजिए की आप किस की सेवा करेंगे।" यदी वह परमेश्वर है तो उसकी सेवा करीए। यदी धर्म हो, तो उसकी सेवा करीए। परन्तु जान लीजिए की वह धर्म ही था जिसने परमेश्वर के पुत्र को इस्राएल के पुत्रों के बीच में नाश किया था।

मैंने परमेश्वर के रिश्तेदारी को चुना। मैं लगातार दर्शन खोजता रहा, उसकी आवाज को लगातार सुनने की कोशिश करता रहा, और विश्वास पूर्वक अपने व्चारों के बजाए, उस पर भरोसा करने लगा। इस चुनाव के लिए मुझे, बचपन से लेकर अब तक जो भी शिक्षा दी गयी थी, उस से बाहर निकलना पडा। यह चुनाव आसान था, परन्तु इसने मुझे वह जगाहें दिखा दीं जहां मैं पहले नहीं गया था, और मेरे जीवन में परमेश्वर की आशिषों को इस तरह से उण्डेला की जिस की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। परमेश्वर मुझे संसार भर में ले गया, ताकी मैं मसीह की देह के सच के बारे में बता सकूँ, जबकी मैं चाहता था की मैं लोविल्ले, न्यू यार्क, में एक खेतिहर बना रहूँ। क्या परमेश्वर ऐसा नहीं है?

क्या आप मेरी तरह पवित्रात्मा की संगति का चुनाव करेंगे बजाए आज्ञाओं के? मैं चाहता हूँ की आप ऐसा ही करें।

अध्याय छः के कुछ मुख्य विचारों पर पुनर विचार :

- हम आज्ञाओं के लिए मर चुके हैं।
- परमेश्वर की रचना में आज्ञाएँ नहीं थीं।
- इन्हें बाद में टूटी साहचर्य और पाप के कारण जोडा गया।
- साहचर्य की वापसी आज्ञाओं को हटा देती है। आज्ञाओं का मकसद है :

अ) परमेशवर के अनुग्रह को पहचानने से पहले, मुझे टूटने से बचाने के लिए।

ब) मुझे यह बताने के लिए की उन्हें रखने पर मैं सम्पूर्ण शक्ति नहीं पा सकता। मुझे

अपने जीवन में प्रतिदिन मसीह की ताकत की आवश्यकता है। :

- परमेश्वर ने हमेशा मनुष्य को साहचर्य दी है।
- मनुष्य हमेशा सेगति को ठुकराता है और आज्ञाओं को अपनाता है, जिस से परमेश्वर का हृदय टूटता है।
- क्या आप आगे बढ़ कर परमेश्वर की पवित्रात्मा की संगति को अपनाएंगे, आज्ञाओं को केवल सुरक्षा के लिए प्रयोग में लाकर ताकी आप लज्जित न हों?
- कुछ और विचार जो आप को मुख्य लगे, उन्हें लिख लीजीए।

विचार करीए और विवाद करीए :

- आज्ञाओं का प्रयोजन क्या है? आप के जीवन में आज्ञाओं ने कौनसी आवश्यकता को पूरा किया है? इस से आप को कैसे मदद मिली?
- आज्ञा की सीमा, आप के मुताबिक क्या है? इस से आप को कितना दुख हुआ है?
- क्या आप इस समय आज्ञाओं पर ध्यान लगाना चाहेंगे, या उस पर जो आप के भीतर की शक्ति है? यदी आप का द्यान मसीह पर और आत्मा पर नहीं है, तो क्यों नहीं है? आप को उस पर ध्यान लगाने से क्या रोक रहा है? इस ध्यान को लगाने के लिए आप के भीतर क्या बदलाव लाना होगा? क्या आप इस समय इन बदलावों को लाओगे?
- क्या आप इस हात से सहमत हैं की चाहे बाईबल में हो या इतिहास में, आज्ञाओं के मानने वालो ने भविष्यवक्ताओं का विरोध किया है। (यानी, जो आज्ञा के अनुसार जीते हैं वे उन का विरोध करते हैं जो आत्मा के अनुसार जीते हैं)। इस में से आप किस ओर हैं? यदी आप उस तरफ नहीं हैं जहां परमेश्वर है, तो क्या आप बदलना चाहेंगे? यदी हाँ, तो अपना समय प्रार्थना में और बदलाव में लगाईए, और परमेश्वर से कहिए की वह आप को भीतर से बदल डाले।
- **पत्राचार** - "प्रभु, मेरे जीवन में आज्ञाओं की स्थिती के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?"

7. मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ (रेहमा और दर्शन)

सच # ६

अद्भुत। अब मुझे आज्ञाओं के तले नहीं जीना है। इस से बहुत राहत पहुँची, क्योंकि मुझे उन्हें मानने में बहुत कठिनाई अनुभव होती थी। परन्तु अब मुझे डर लगता है। मुझे पाप करने से और मुझे और मेरे चारों ओर जो लोग हैं उन के जीवनों को पूरी तरह बरबाद होने से कौन रोकेगा?

पहले, यह आवश्यक है की हम आज्ञाओं को न फेंक दें। यह हमेशा पहारे नीचे सुरक्षा की जाली का कार्य करती हैं। यदी हम आत्मा से दूर हो कर गिर जाते हैं, तो हमारे पास आज्ञाएँ हैं जो हमे संभाल कर वापस आत्मा की ओर ले जाती हैं। क्योंकि हम यह जानते हैं की जिन्हें आत्मा ले कर चलता है उन्हें आज्ञाओं की आवश्यकता नहीं होती।

उत्तर का दूसरा भाग रोमियों ८:१,२, में मिलता है:

अतः अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। (क्योंकि वे यीशु के अनुसार नहीं वरण आत्मा के अनुसार चलते हैं।) क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

कोई दण्ड नहीं। यह अद्भुत है। क्योंकि मैंने यह पहचान लिया है कि मैं मसीह यीशु में जीवित हूँ, तो अब मैं नहीं जीवत हूँ परन्तु अब वह मेरा जीवन है। हम, "मसीह मैं", के बारे में अधिक सफाई से बात कर चुके हैं। परन्तु, नयी आज्ञा की आयत, मसीह यीशु में जीवन की आत्मा की व्यवस्था? क्या हम इस व्यवस्था के बारे में कुछ खोज करें, यह देखने के लिए की वह क्या है और वह कैसे कोम करती है?

मसीह यीशु में जीवन की आत्मा की व्यवस्था :

यह बाईबल का सब से महान व्यवस्था होगी, क्योंकि यह हमें पाप और मृत्यु से मुक्ति दिलाती है, और अध्याय एक के उस बुरे व्यक्ति के लक्षण से भी छुटकारा दिलाता है। व्यवस्था हृदय के अंदर के युद्ध को चंगा करता है और शांति और शक्ति और प्रेम देता है और दण्ड नहीं देता। यह सुनने में तो बहुत अच्छा लगता है, पौलुस। यह व्यवस्था है क्या?

पौलुस रोमियों आठ में पहली बारह आयतों में इस व्यवस्था की परिभाषा बताता है। आयत तान के अनुसार, यह शरीर की दुर्बलता की समस्या को सुधारता है, जो इन व्यवस्था

को नहीं रख पा रहा है। आयत चार में, परमेश्वर कहता है की वह हमें इस लायक बनाएगा की हम व्यवस्था की विधि को पूरा कर सकें, अपने शरीर की ताकत से नहीं, परन्तु उस पवित्र आत्मा की शक्ति से जो हमारे अंदर वास कर रही है।

यदी मैं अपने शरीर की अभिलाशाओं पर काबू पाने के लिए अपने शरीर की ताकत पर ध्यान लगाऊँ, तो मैं बुरे व्यक्ति के लक्षण में फँस जाऊँगा, क्योंकि मेरा शरीर उतना ही शक्तिशाली है जितना की मेरे शरीर का दूसरा भाग, जिस के विरुद्ध मैं लड़ रहा हूँ।

क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु अध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है। (रोमियों ८: ५,६)।

एकमात्र उपाय जो है वह यह है की मैं अपना ध्यान परमेश्वर की आत्मा पर लगाऊँ जो मुझ में वास कर रही है। इस का परिणाम यह होगा की मैं जीवन और शांति पाऊँगा, क्योंकि परमेश्वर की आत्मा में इतना सामर्थ्य है की वह शरीर की अभिलाशा पर काबू पा सकती है। और तो और, इस स्थिति में यह मेरे अंगों की लड़ाई नहीं है। अब, यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आत्मा की जीत है मेरे दुर्बल मिट्टी के ढाँचे पर।

यदी उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा। इसीलिए हे भाईयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं की शरीर के अनुसार दिन काटें, क्योंकि यदी तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदी आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिए की जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। (रोमियों ८: ११ - १४)।

हमारे नाशमान शरीर में जीवन लाने का एक ही तरीका है की हम पवित्रात्मा के कार्यों में शक्ति भरें। इसलिए, मुझे सीखना है की मैं अपने शरीर को पवित्रात्मा से कैसे शक्तिशाली बनाऊँ। मुझे याद करना होगा की क्या मैंने, यह कैसे किया जाता है, उस पर क्या मैंने कोई उपदेश सुना है? मैंने अवश्य सुना होगा, क्योंकि यही नये नियम की तरह जीवित रहने का रास्ता है। इस के बिना नये नियम के तरीके का जीवन नहीं है।

यदी मैं आप को सच बताऊँ तो, जिस गिरजाघर में मैंने मुक्ति पायी थी, वह पवित्रात्मा के बारे में कुछ नहीं जानता था। आखिरकार जब मुझे वह गिरजाघर मिला जहां पवित्रात्मा के बारे में बताया जाता था, तो उन्होंने मुझे केवल यह बताया की मुझे प्राप्त करना है। उन्होंने यह नहीं बताया की कैसे। इसलिए, मुझे यह कभी नहीं सिखाया गया की मैं उस पवित्रात्मा को, जो मुझ से जुड़ा हुआ है, उसे कैसे शक्तिशाली बनाऊँ। इसलिए मैं इतने वर्षों तक इस स्थिति में

था। मैं यह नहीं जान पा रहा था की नये नियम की मसीहत को मेरे जीवन का केन्द्र कैसे बनाऊँ। इसलिए, मैं धर्म में गिर गया।

पवित्रात्मा से अपने शरीर को कैसे शक्तिशाली बनाएँ :

परमेश्वर की आत्मा में, जीवन, शक्ति और सर्वदा कार्य करने वाली ताकत है। जब एक स्त्रि ने चंगाई पाने के लिए यीशु को छुआ, तो यीशु ने कहा की उन को ऐसा लगा जैसे उन में से शक्ति निकल कर गयी है। नये नियम के मुख्य तीन शब्दों में से एक है शक्ति, जिस का अर्थ है ताकत, और असल में इसका अरथ है कार्य करने वाली ताकत। ताकत हमेशा शरीर में बहती रहती है और छूने पर दुसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करती है। एक तसवीर तो यह भी बताती है की, जब एक प्रचारक किसी व्यक्ति के लिए चंगाई की प्रार्थना कर रहा था तो, उस के हाथ में से एक चिंगारी निकल कर उस दूसरे व्यक्ति में प्रवेश कर गयी।

यदी आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। (रोमियों ८:१३)।

दी तरीकों से तुम देह के कार्यों को मार सकते हो। एक, आत्मा की ताकत को शक्तिशालि बना कर। दूसरा, आपकी इच्छा शक्ति और आप के शरीर की ताकत से, जो सच में कार्य नहीं करता। इस का नतीजा, बुरे आदमी के लक्षण या इच्छा आराधना होता है, दोनों में से कोई डी जीवन नहीं दे सकते। तो, हम देखेंगे की हम शरीर के कार्यों को मार कर कैसे आत्मा को शक्तिशाली बना सकते हैं।

सिध्दान्त एक - आत्मा सचेत हो जाईए :

अपनी आत्मा की शक्ति के स्थर को पहचानीए। आपकी आत्मा क्या अनुभव कर रही है, उसे पहचानना साखीए। इसे करने के कई तरीके हैं। मैंने बाईबल में से हृदय और आत्मा पर हर आयत को खोजा और स्वयं से पूछा, "इस आयत में जो बताया गया है, क्या मैंने उसे अनुभव किया है?" यदी हां, तो वह आत्मा का अनुभव था। इस क्रम से मुझे यह जानने में बहुत फायदा हुआ की आत्मा क्या होती है। एक उदहारण जहां आप आत्मा के माध्यम से यह जान पाएंगे की बाईबल क्या कह रही है वह है, पवित्रात्मा के फल: प्रेम, आन्नद, शान्ति....। (गलतीयों ५:२२)। अंदर वास कर रही पवित्रात्मा की मौजूदगी से यह भावुक स्थिती शक्तिशाली बनती है।

सिध्दांत दो - उस पवित्रात्मा पर केंद्रित रहीए जो आपकी आत्मा से जुडी हुई है। :

मैं उसका अनुभव दर्शन व्दारा कर सकता हूँ (वह स्वैच्छिक चित्र जो परमेश्वर के दर्शन को खोजते में उजाग्रित होते है), रेहमा (वे स्वैच्छिक विचार जो परमेश्वर की आवाज

को सुनते वक्त उजग्रित होते हैं), और बोझ (वह स्वैच्छिक अनुभव जो परमेश्वर के संमुख होने पर मिलते हैं, जब मैं उन से पूछता हूँ की वह अपने हृदय के भावों को मेरे साथ बांटे)। मैं आराधना द्वारा या बाईबल की किसी कहानी पर ध्यान लगा कर पवित्रात्मा के समक्ष अपने आप को शांत रखता हूँ। या मैं आत्मा में गीत गाता हूँ या प्रार्थना करता हूँ (इफि ५: १८; यहूदा २०, २१)।

सिध्दांत तीन - पवित्रात्मा की उपस्थिती का स्वागत करें। :

वह एक व्यक्ति है - त्रीमूर्ति में का एक व्यक्ति। उस से बात करीए। उस का स्वागत करीए की वह आप के जीवन का एक हिस्सा है। उसकी उपस्थिती से कहीए की वह आप में और आप के द्वारा बहे। उस से कहीए की आप उसे स्वीकार करते हैं। बाईबल हमें बताती है की हम पवित्रात्मा को दुखी कर सकते हैं। ऐसा करने का एक तरीका यह है की आप उसे पूरी तरह अस्वीकार करीए। मुझे पता है कि यदी मुझे अस्वीकार किया जाता है तो मुझे कितना दुख होता है। मुझे यह भी पता है की जब मुझे स्वीकार कर के इज्जत दी जाती है तो मैं कितना महन अनुभव करता हूँ, और कुल्ले रूप में इस को बताना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ की पवित्रात्मा के लिए भी यही सही है। उदहारन के लिए यदी मैं किसी कक्षा को प्रारम्भ करने से पहले पवित्रात्मा से कहता हूँ की वह स्वतंत्र रूप से बहे, तो उस कक्षा में जो वैसे निर्जीव सी रहती थी, उस में जीवन की आत्मा भर जाती है। मैं विश्वास करता हूँ की यह मसीह यीशु की जीवन आत्मा है जो हम अनुभव कर रहे हैं। यह एक सामान्य कार्य है की हम सब के सामने पवित्रात्मा को स्वीकार करें और उसे आमंत्रित करें की वह हम में स्वतंत्र रूप से हमारे अंदर बहे। इस से बहुत फर्क पडता है।

सिध्दांत चार - जो पवित्रात्मा आप को दिखा रहा है उसके बारे में बताईए। :

अब मैं परमेश्वर के साथ बहने लगा हूँ, वह सब बोलते हुए जो मेरे अंदर उमड रहा है। मैं वह हूँ जो दैवी बहाव से भर गया हूँ।

इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते की प्रार्थना किस राती से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भर कर, जो बयान से बाहर है, हमारे लिए विनती करता है। (रोमियों ८:२६)।

पहले मुझे यह विश्वास नहीं होता था की परमेश्वर यह समझता है की मुझे प्रार्थना करना नहीं आता। मुझे सुनीए तो। मैं परमेश्वर से बात कर सकता हूँ। जैसे हमने पहले देखा है की हर वह कार्य जो मैं करता हूँ, वह मेरे हुए कार्य हैं, और इस में प्रार्थना भी शामिल है। मुझे प्रार्थना नहीं करनी है। मुझे मेरे द्वारा परमेश्वर को बात करने देनी है। यह सही प्रार्थना है।

इसलिए, जब मैं परमेश्वर के संमुख जाता हूँ तो, मैं अपने आप को शांत करता हूँ, दर्शन को खोजता हूँ, स्वैच्छिकता पर ध्यान लगाता हूँ, और आत्मा में, गीत गाने लगता हूँ और प्रार्थना करने लगता हूँ। धीरे धीरे, मैं अपने अंदर एक बहाव को उमडते हुए अनुभव कर सकता हूँ। यह एक जीवन की धडकन की तरह अनुभव होता है। यह जीवन की धडकन है। यह पवित्रात्मा का जीवन है जो मेरी आत्मा को शक्तिशाली बना रहा है। इस का अनुभव, शक्ति, फुरति, शांति, प्रेम, विश्वास, आशा और पवित्रात्मा में आनंद के रूप में होता है।

यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था को वापसी। :

जैसा हमने पहले भी बताया की, हम विश्वास करते हैं की यह नये नियम की मसीहत का केंद्र बिंदु है, यदी सही रीती से कहा जाए तो,

यीशु, वह जो हमारे भीतर जीवित है, रेहमा, दर्शन और बोझ को प्राप्त करते हुए, यदी हम उस पर ध्यान लगाने पर जिस शक्ति का अनुभव होता है, जब वे पवित्रात्मा के साथ संगति रखते हैं, यही यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था है।

यही हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छुटकारा दिलाता है। हल्लेलूईया। अब जब मुझे पता है की मुझे क्या करना है, तो मैं जब भी पवित्रात्मा को शक्ति की आवश्यकता होती है मैं कर देता हूँ। मैं अपना समय आराधना में, आत्मा में गीत गाते हुए, प्रार्थना करते हुए बिताता हूँ और दर्शन और स्वैच्छिकता की ओर ध्यान लगाता हूँ। मैं स्वैच्छिक बहाव को प्राप्त करने के लिए, आत्मा में स्वतंत्रता से गाता हूँ, राजाओं के राजा के लिए प्रेम के गीत बनाता हूँ, और साथ ही साथ उस दर्शन को भी देखता हूँ जो वह मेरे सामने ला रहा है। मैं अकसर उस दर्शन को प्राप्त करता हूँ, जो प्रकाशितवाक्य के चौथे अध्याय में यूहन्ना ने देखा था की हजारों लोग स्वर्ग में सिहांसन के सामने झुक कर आराधना कर रहे हैं। जब मैं आँख उठा कर देखता हूँ, तो यही दर्शन पाता हूँ की मैं भी आराधना करने वालों में से एक हूँ। इस जगह से आत्मा के बहाव को शक्ति दिलाना बहुत आसान हो जाता है।

अंत में तो यह एक बच्चे की तरह लगने लग जाता है। (क्या आप इस का अनुमान लगा सकते थे?) मैं एक आराधना करने वाला हूँ, अपने दिमाग के बदले अपने मन की सुनता हूँ। यह तो एक बच्चा भी कर सकता है। शायद इसीलिए यीशु भी यही चाहते थे की हम बच्चों की तरह बनें।

अध्याय सात के कुछ मुख्य विचार :

- आज्ञाओं को मानने के दो रास्ते हैं।
- एक स्वयं करना।
- दूसरा यह की यीशु मसीह में जीवन की आत्मा के द्वारा।
- नये नियम मसीहत में यीशु मसीह में जीवन की आत्मा मध्य केन्द्र बन जाती है।
- इस व्यवस्था का निरन्तर रूप में प्रचार करना चाहिए।
- यदी इस व्यवस्था पर दबाव नहीं डाला गया तो हम वापस धर्म में गिर जाएंगे।
- इस व्यवस्था को स्पष्ट किया गया है।
- पवित्र आत्मा से हमारे जीवनों को शक्ति पहुचाने के चार मुख्य सिद्धान्त हैं :
आत्मा सचेत हो जाईए।
उस पवित्रात्मा पर केंद्रित रहीए जो आपकी आत्मा से जुडी हुई है।
पवित्रात्मा की उपस्थिती का स्वागत करें।
जो पवित्रात्मा आप को दिखा रहा है उसके बारे में बताईए।
- आप को जो मुख्य लगे उन विचारों को भी लिख लें।

विचार करें और विवाद करें :

- चाहे हम व्यवस्था के साथ नहीं जीते, फिर भी क्या आपने व्यवस्था को अपने नीचे सुरक्षा की जाली बनाया है, ताकी यदी आप आत्मा से गिरें तो स्वयं को नष्ट न कर सकें? बताईए की यह आपके जीवन में कैसे कार्य करता है। उदहारन दीजीए।
- क्या आप अपने देह के कार्यों को स्वयं के परिश्रम से मार रहे हैं या पवित्रात्मा की शक्ति को पुकारते हैं की वह आकर उन पर काबू पाने में मदद करे?
- क्या आपने यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था को कहीं और सुना है? यदी हाँ, तो उसे कैसे समझाया गया? यह कैसे काम करता है? यह आप के जीवन में काम

कर चुका है? क्या आप विस्तार से उद्धारन दे सकते हैं?

- यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था के बारे में उत्पादक के विचार को लिखीए।
- पवित्रात्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए, आप इन चार मुख्य सिद्धांतों के कैसे उपयोग करेंगे, चर्चा करीए।
- **पत्राचार** - "प्रभु, मुझ से यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था के बारे में बात करीए। मैं इस का उपयोग किस तरह कर रहा हूँ? मैं इस का उपयोग करने में कैसे नकामयाब रहा?"
- दूसरा पत्राचार - "प्रभु, मुझ से पवित्रात्मा द्वारा मेरे जीवन को शक्तिशाली बनाने के सिद्धांतों के बारे में बात करीए। इन सिद्धांतों को मेरे जीवन में लागू करने के बारे में आप क्या कहेंगे?"

परमेश्वर आप से जो कहता है, उसे लुख लीजीए और कक्षा में सब के सामने पढ़ने के लिए तैयार होकर आईए। हमेशा की तरह यह आच्छा हौगा की आप इस में से कुछ पढ़ें।

8. मैं इस विश्वास के साथ जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है

सच # ७

अब हम अंत के करीब हैं। अब तक, हम छः अध्यायों से यह सीख चुके हैं की हम बुरे व्यक्ति के लक्षण से कैसे बाहर निकला जा सकता है और बिना भीकरी लडाई के हम कैसे स्वभाव से अलौकिक बन सकते हैं। हम ने यह जान लिया है की परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है, यह की हम पात्र हैं, यह की हम नहीं जी रहे परन्तु मसीह हमारा जीवन है, यह की हम व्यवस्था के लिए मर चुके हैं, और यीशु मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था है जो हमें पाप और मृत्यु से छुटकारा दिलाती है। इस अनुभव को साथ लेते हुए, हम मसीह के लिए जयवंत जीवन जीने के लिए तैयार हैं। हा न? क्या कोई और रुकावट हो सकती है हमारे रास्ते में जिसे हम ने पार करना है? मैं समझता हूँ की हाँ है। यह समस्या है शक की।

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है, और मैं शरीर में अह जो जीवित हूँ, तो केवल उस विश्वास के साथ जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। (गलतियों २:२०)।

इन सब बातों के बारे में शिक्षा के रूप में जान लेना एक बात है। अपना विश्वास, आशा और भरोसा इस पर करना, दूसरी बात है, क्योंकि मुझे अपना विश्वास, आशा और भरोसा, अपनी काबलीयत पर करने की आदत है। नया नियम बताता है की "परमेश्वर के कार्य विश्वास करने योग्य हैं ..."। क्या यह सही है। कई बार ऐसा लगता है की विश्वासी न होना, परमेश्वर के कार्यों में सब से आसान होता।

मैं ऐसे संसार (कई बार ऐसी कलीसीया) में जीता हूँ, जो पवित्रात्मा की संगती पर विश्वास नहीं करती (२ कुरि १३:१४)। कई लोग समझते हैं की मैं पागल हूँ, क्योंकि मैं हर दिन आत्मा से दर्शन पाता हूँ और बातें सुनता हूँ। मेरा दिमाग भी यही कहता है की मैं पागल हूँ। "यह परमेश्वर का दर्शन नहीं है। यह केवल तुम्हारी कल्पना है। वह परमेश्वर की आवाज नहीं है। वह केवल कुछ विचार हैं जो तुम्हारे मस्तिष्क में आ रहे हैं। तुम कहीं उन पर विश्वास तो नहीं करते? तुम कहते हो की वर्षा होगी और सारी दुनिया बाढ़ में डूब जाएगी? सच में ऐसा होगा। तुम पागल हो। तुम कहते हो की परमेश्वर ने तुम से कहा की तुम अपने बेटे की बली चढ़ाओ? मैं नहीं मानता। तुम्हें तो पागलखाने में बंद कर देना चाहिए। मैं धार्मिक लोगों से तंग आ चुका हूँ। अब तुम कहते हो की तुम बीस लाख लोगों को लेकर रेगिस्तान की ओर चले जाओ और वह उन की देखभाल आलौकिक तौर से करेगा? हाँ, उसने किया।

परन्तु, यह तो देखो। हम इस शहर की दिवारों को गिरा डालेंगे, केवल उसके चारों ओर चलते हुए। अब बस हो गया। क्या तुम समझते हो की मैं इन बेफकुफि भरी बातों पर विश्वास करूंगा? मैं सच की दुनिया में रहता हूँ। मैं यह भी नहीं मानता की आज की दुनिया में चमत्कार होते हैं, इस तरह की बातें तो दूर की बात है।"

सच तो यह है की तुम्हारे चाल चलन के कारन, आज की दुनिया में चमत्कार नहीं होते।

और उसने वहां उनके अविश्वास के कारन बहुत से सामर्थ्य के काम नहीं किये। (मत्ति १३:५८)।

यीशु अपने ही शहर में उनके अविश्वास के कारन सामर्थ्य के काम नहीं कर पाया। परमेश्वर के कार्य विश्वास करने योग्य हैं।

अविश्वास एक पाप है। अविश्वास के कारन हम वादा किये हुए देश तक नहीं जा पाते। अविश्वास के कारन हम परमेश्वर की वस्तुओं का आनंद लेने से वंचित रह जाते हैं। और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है। (इब्रानियों ११:६)।

अविश्वास के साथ संघर्ष करते इस्राएलियों का उदहारन :

पुराने वाचा के लोगों की दुखांत यह था की उन्होंने विश्वास नहीं किया, जबकी वे उन के चारों ओर परमेश्वर के आलौकिक शक्ति को देख रहे थे। परमेश्वर ने कहा, "अपनी गलतियों से सीखो। मेरे कहे हुए वचन के साथ विश्वास को जोड़ो, ताकी तुम मेरी बहुतायत में प्रवेश कर सको।" काश हम परमेश्वर के वचन को सुन सकें और जो कहानीयां हमारे लिए लिखी गयी हैं, उन से कुछ सीखें।

जैसे की पवित्रात्मा कहता है: यदी आज तुम उसका शब्द सुनों तो अपने मनो को कठोर न करो, जैसा की जंगल में परिक्षा के दिनों में, तुम्हारे बाप दादों ने मेरी परिक्षा की और मेरे कार्यों को चालीस वर्षों तक देखा। इस कारन मैं उस पीढी से नाराज था और मैंने कहा की वे हमेशा अपने मन में भटक जाते हैं और वे मेरे कार्यों को नहीं जानते। इसलिए मैंने गुस्से में कसम खायी की वे मेरे विश्राम में प्रवेश न होने पाएंगे। ध्यान रहे मेरे भाईयो, कहीं तुम में से किसी के पास अविश्वास से भरा हुआ बुरा मन न हो जो तुम्हें जीवीते परमेश्वर से दूर ले जाए। परन्तु, एक दूसरे को सावधान करते रहो, जब तक की आज है, कहीं ऐसा न हो की तुम पाप की धोकाधडी से कठोर हो जाए। हम परमेश्वर के सहभागी बन जाएंगे, यदी हम शुरू को विश्वास के साथ अंत तक थामें रखें, जैसा की कहा गया है: यदी

आज तुम उसका शब्द सुनों तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा की जंगल में परिक्षा के दिनों में। वे कौन थे, जो सुन कर विद्रोह करने लगे? क्या वे सब वो नहीं थे जिन्हें मूसा मिस्र से निकाल लाया था? वह किन से चालीस वर्षों तक गुस्से था? क्या उन के साथ नहीं जिन्होंने पाप किया था, जिन की लाशें जंगल में गिर गयी थीं? उस ने किस से वादा किया था की वे विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाएंगे, उन के लिए जिन्होंने उस की आज्ञा नहीं मानी थी? वे इसलिए प्रवेश नहीं कर पाए क्योंकि वे अविश्वासी थे। क्योंकि विश्राम में प्रवेश का वादा है, इसलिए हम सदा इस डर में रहें की कहीं हम इस से चूक न जाएं। क्योंकि इंजील हमें भी सिखाई गयी है और उन्हें भी, परन्तु, जो वचन उन्होंने सुना, उस से उन्हें लाभ नहीं हुआ। हम ने क्योंकि विश्वास किया है, हम विश्राम में प्रवेश करेंगे, जैसा की उस ने वादा किया है, इसलिए मैंने गुस्से में कसम खायी की वे मेरे विश्राम में प्रवेश न होने पाएंगे, चाहे कार्य तो दुनिया की बुनियाद डालने के समय ही समाप्त हो चुके थे। फिर से एक बार वह दाऊद के द्वारा आज शब्द पर दबाव डालता है। इतने लम्बे समय के बाद फिर से कहा गया, "आज तुम उसका शब्द सुनों तो अपने मनों को कठोर न करो।" क्योंकि यदी यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उस के बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो की कोई जन उन के समान आज्ञा न मान कर गिर पड़े। (इब्रानियों ४:७-११)।

कितने बहुमूल्य वचन। "परमेश्वर, काश हम बीते हुए युगों के आप के चमत्कारी शक्ति से भरे हुए कार्यों को देख कर आप पर विश्वास कर सकें। काश हम आप को निराश न करें और आप की आच्छाई और महिमा और अपने मनों में आपकी आवाज के विरुद्ध अविश्वास कर के आप के विरुद्ध पाप न कर सकें और अपने हाथों और दिमाग के छोटे कार्यों पर विश्वास करें। काश हम आप पर, जो सच्चा और जीवीता परमेश्वर है, उस पर विश्वास करना सीखें। यदी हम ने आप को निराश किया हो, तो हमें माँफ करीए। हम प्रार्थना करते हैं की तू हमें साफ कर। हम आप के विश्राम में प्रवेश कर सकें। हमारे मनों को शक्तिशाली बनाईए। काश हम विश्वास करें और वही कार्य करें जो आप करते हो, ताकी सारा संसार आप को हमारे द्वारा जान सके। हमें चंगा कर, ताकी हम स्वस्थ हों। हमें अपना अनुग्रह दे ताकी हम शक्तिशाली बन सकें। हमें अपना विश्वास दे और हम तुझ पर अपना भरोसा कर सकें, क्योंकि तुम कार्य कर रहे हो हम में आपकी इच्छा के अनुसार।"

एक कहानी :

व्यवस्थाविवरण २८ के वादों और जिस संसार में मैं रहता हूँ, वहां की मसीह की कलीसीया की स्थिती में जो भेद हैं, उन से मैं बहुत परेशान रहता हूँ। हम उन आशीषों को

देखते हैं, जिन को देने का वायदा परमेश्वर ने किया था और यदी हम उस के वचन के मुताबिक विश्वास से कार्य करें, तो वह हमारी उम्मीदों से अधिक हो जाएंगी।

"यदी तू अपने परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित लगा कर उसकी सुनें, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा, फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण यह सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे।" (व्यवस्थाविवरण २८:१,२)।

कोई ुरा वादा नहीं है। मेरे लिए तो यह एक अविश्वासनीय वादा है, क्योंकि मैं यह समझता था की यदी मैं मसीह बन गया हूँ, तो इस का अर्थ यह है की मैं इस पृथ्वि का दूसरी श्रेणी का नागरिक बन गया हूँ। परन्तु, उसके लोगों के लिए परमेश्वर का वादा यह है की यदी वे उसकी आवाज को सुन कर उसका कहना मानते हैं तो वे न केवल पहली श्रेणी के परन्तु वे इस पृथ्वि के अगुवाह करने वाले राज्य बन जाएंगे।

क्या हमें इस बात के पूरा होने के कुछ आसार दिख रहे हैं? मैं ऐसा ही सोचता हूँ। संयुक्त राज्यों को देखो। हम अपने पैसे के ऊपर छापते हैं, "परमेश्वर पर हमें भरोसा है" और हमारे कानूनी प्रबंध भी यहूदी-मसीही तत्वज्ञान पर आधारित हैं। ऐसा करने से हम सारे संसार में सब से ताकतवर और प्रगतिशाली बन गये हैं। परमेश्वर की आज्ञा में और भी कुछ है।

और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पुरवजों से शत खा कर तुझे देने को कहा था, उस में वह तेरी सनतान की और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढती करके तेरी भलाई करेगा। यहोवा तेरे लिए अपने आकाश रूपी उत्तम भण्डार को खोल कर तेरी भूमि पर समय पर मेह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा, और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा और यहोवा तुझ को पूँछ नहीं किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु उपर ही रहेगा। यदी यहोवा परमेश्वर की आज्ञाओं, जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ, तू उनके मानने में मन लगा कर चौकसी करे। (व्यवस्था २८:११-१३)।

क्या यह इस से यह पता चलता है की पिछले २०० वर्षों में परमेश्वर ने अमरिका के लिए क्या किया है? हम ने कई राष्ट्रों (हमारे दुश्मनों को भी) को उधार दिया है, हमने उधार नहीं लिया है, कम से कम अब तक। पिछले कुछ वर्षों में हम ने परमेश्वर की आवाज को सिनना छोड़ दिया है और इन में से कुछ वादे हमारी भूमि से हट ने लगे हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के शाप में प्रवेश कर रहे हैं, जैसा की व्यवस्थाविवरण २८ में लिखा गया है।

मैं समझता हूँ की सारे संसार के लोगों और राष्ट्रों के लिए आज भी यह वादे जीवीत हैं और कार्य करते हैं। यदी हम सारे संसार की ओर देखें तो हमें पता चल सकता है। परन्तु, मुझे, अमरीका में जो बात बुरी लगती है, वह यह है की मसीही सिर नहीं हैं। कई विषयों में वे उधार देने वाले नहीं परन्तु लेने वाले हैं। गिनती करने पर यह पता चलता है की अधिकतर दूरदर्शन पर प्रदर्शन करने वाले मसीही नहीं परन्तु मनुष्य जाती का अध्ययन करने वाले हैं। मुझे ऐसा लगता है की अधिकतर नेता भी मसीही नहीं, मनुष्य वादी हैं। अधिकतर दूरदर्शन के सितारे भी मसीही नहीं हैं। सूची तो बडती जाएगी। अमरीका में मसीही नेता क्योम नहीं हैं? क्या अचानक परमेश्वर की आशीषें कार्य करना बंध कर दी हैं? क्या बाईबल एक झूठ हैं? नहीं बिलकुल भी नहीं। फिर समस्या क्या है? क्या यीशु मसीह की कलीसीया परमेश्वर की आवाज से इतनी दूर हो गयी है की हम उस की वाचा की आशीषों के तले नहीं चल पा रहे हैं? क्या अब हम उसकी आवाज नहीं सिन रहे हैं और उस के कहे अनुसार नहीं चल रहे हैं?

कुछ पषों पहले जब मैं दूरदर्शन के समाचार सुनाने वालों के आचरण के बारे में बुद बुदा रहा था, तो परमेश्वर ने मेरे मन में मुझ से बात की और कहने लगे, "मार्क, यदी तुम उनके पसन्द नहीं करते हो, तो क्यों न तुम आने वाली पीढी के समाचार सुनाने वालों को प्रशिक्षण दो?" मैंने परमेश्वर से कहा की मैं उतनी दूर का नहीं सोचता। मैं केवल तोडा बहुत बुद बुदाना चाहता था। इस समय मुझे वह याद आया की जंगल में परमेश्वर ने १४,७०० बुद बुदाने वालों का घात किया था। और जब अगले दिन इस के बारे में लोग बुद बुदाने लगे, तो उसने कुछ और लोगों को बी मारा। इस के बाद मैंने अपने जीवन में एक नीती बना ली की मैं कभी भी नहीं बुद बुदाऊंगा।

परमेश्वर विलाप करने वालों को नहीं खोज रहा। वह उन्हें खोज रहा है, जो उसकी आवाज को सुन कर उसके बताए अनुसार चलेंगे और उसकी शक्ति और बुद्धि और अनुग्रह से उस संसार में, जिस में वे जी रहे हैं, बदलाव लाएंगे।

क्या मैं उन लोगों में से एक हूँ? क्या मैं अपने बुद बुदाने को रोक कर परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिए तैयार हूँ और जो परमेश्वर कह रहा है उसे सुन कर, बच्चे के विश्वास के साथ, उस का रहमा और दर्शन पा कर, जिस तरह वह करने को कहे, उस का कार्य कर सकूँ? चलते में क्या मैं उस पर विश्वास कर सकूँगा, या मैं अपने रास्तों को देखूँगा और अपनी यौग्यताओं से उस कार्य को करने की कोशिश करूँगा, जो मेरी पहुँच से परे है? क्या मैं एक विश्वासी बनूँगा? क्या मैं आने वाली पीढी के समाचार सुनाने वालों को प्रशिक्षण दे सकूँगा? मैं नहीं जानता। हमें रूक कर देखना पडेगा। मेरे शरीर को मृत्यु के डर तक पहुचाने के लिए, यह काफी है, वैसे देखा जाए तो, अपने शरीर के लिए यह बुरा नहीं है की हम शरीर का अंत करें।

स्वयं पर अपनाना :

क्या तुम एक विश्वासी बनना चाहोगे? क्या आप अपना शक नरक के गहरे गढ़ में, जहांसे वह आया है, वहां डालोगे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति पर ऋधास करोगे की वह आप के जीवन को रास्ता दिखाए? क्या तुम एक विश्वासी बनना चाहोगे? बनोगे? आप को निर्णय लेना है। आप को या तो जीवन, विश्वास और आशा का मार्ग अपनाना है या डर और अविश्वास का रास्ता। चुनाव केवल आपका है। आप के लिए कोई और निर्णय नहीं ले सकता। वह क्या होगा? अपने पत्राचार में अपना निर्णय लिखीए। इसे लिख लीजीए, ताकी यह परमेश्वर में आप के स्थान को साक्षी बना कर रखेगा। जो विश्वास करते हैं, चम्तकार उन के साथ होते हैं। काश आप का जीवन चम्तकारों भरा हो।

अध्याय आठ के कुछ मुख्य विचार :

- विश्वास से परमेश्वर की शक्ति और अनुग्रह मिलता है।
- परमेश्वर का कार्य विश्वास करना है।
- संसार शक से भरा हुआ है।
- मैं अपनी सीमा और शक की और देखता हूँ।
- धर्म यह विश्वास करता है की परमेश्वर अब आलौकिकता में नहीं प्रगट होता।
- परमेश्वर चाहता है की हम ऐलौकिकता में शिर बनें, पूँछ नहीं।
- परमेश्वर चाहता है की हम आगे चलें, पीछे नहीं।
- परमेश्वर चाहता है की हम उधार दें, उधार ले नहीं।
- क्या कलीसीया विश्वास में उठेगी और परमेश्वर से कहेगी की उसे भर दे?
- क्या आप?
- आप को विषेश लगा, उन मुख्य विचारों को भी लिख लीजीए।

विचार करीए और विवाद करीए :

- अविश्वासनीय वादे जो परमेश्वर ने तुम्हें दिये हैं, उन को लिख लीजीए। वे क्या बातें हैं, जो वह तुम्हारे द्वारा करवाना चाहता है? क्या वे तुम्हारी योग्यताओं से बढ़ कर हैं? क्या यह कुछ मसने रखता है? परमेश्वर उन्हें तुम्हारी योग्यताओं के द्वारा पूरा करना चाहता है या उसकी?
- परमेश्वर ने जो तुम्हारे हृदय में सपने भरे हैं, क्या आप उन को मानते हो? क्या तुम ने उन्हें परमेश्वर के सामने रखा है, यह जानने के लिए की इन्हें पूरा करने के लिए वह क्या चाहता है की आप हर दिन करें? क्या आप वह कर रहे हैं, जिस का आदेश उसने दिया है? परमेश्वर ने जो वादे आप के साथ किये हैं, क्या आप उन पर विश्वास करते हैं? क्या आप इस बात पर विश्वास करे हैं की, यदी आप उसके कहे अनुसार चलें तो, वह इन के पूरा करेगा?
- आप बुद बुदाने वालों में हैं, या विश्वासी हैं? आप चंगाई और वापसी के लिए क्या पश्चताप की प्रार्थना करना चाहेंगे? पश्चताप, बदलाव की बुनियाद है। यदी मैं बुद बुदाता हूँ, तो मैं परमेश्वर की योग्यता के बारे में क्या कह रहा हूँ? वह इस के बारे में क्या अनुभव करता है? क्या बुद बुदाने वाले परमेश्वर के आलौकिक शक्ति को समाझ में पहचानते हैं या वे केवल समाझ को देख कर परमेश्वर की योग्यता की समाझ में दखलअंदाजी की आलोचना करते हैं? यदी आप परमेश्वर होते तो इस के विशय में आप कैसे अनुभव करते?
- परमेश्वर मूसा से गिस्से हो गया था, क्योंकि वह बार बार परमेश्वर से यही कहता की, क्योंकि उसकी बोली लडखडाती है, वह उसके जीवन में परमेश्वर के कार्य को पूरा नहीं कर पाएगा। जब मूसा परमेश्वर से यह सब बातें बोल रहा था, तो क्या वह परमेश्वर की योग्यता के बारे में सोच रहा था, की वह अपना सर्वशक्ति से उस के इस बोलने के ढंग को बदल सकता है? परमेश्वर मूसा से यह कार्य मूसा की शक्ति के द्वारा करवाना चाहता था, या अपनी शक्ति से? यदी परमेश्वर इस संसार में आप के द्वारा कुछ कार्य करवाना चाहता है तो वह आपकी शक्ति से करवाना चाहता है या

उस की शक्ति से? आपके जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए आप स्वयं की ओर देखते हैं या परमेश्वर की ओर?

- हमारे राष्ट्र पर मसीही क्यों नहीं राज्य कर रहे? क्या हमें करना चाहिए? इस स्थिती को बदलने के लिए किस बात की आवश्यकता है? क्या आप बदलाव का एक हिस्सा बनना चाहेंगे? परमेश्वर जो करने को कहेगा, उसे पूरा करने के लिए क्या आप सेवक नेता बनने के लिए तैयार हैं? परमेश्वर ने आप के जीवन के लिए जो इच्छा जताई है, उसके बारे में अपने समूह को बताएं। फ्र इस के बारे में प्रति दिन लिखना प्रारम्भ करीए। इसे पग दर हग पूरा करने के लिए परमेश्वर को आगुवाह बनाईए।
- **पत्राचार** - "प्रभु, मेरे जीवन में आप की इच्छा के बारे में बताईए। आप मुझ से क्या करवाना चाहते हैं? आज मुझे क्या करना है? हमारे देश के लिए आपकी क्या इच्छा है? जो आप ने बताया, उसके लिए आप का धन्यवाद हो।" आप ने जो लिखा उसे अपने समूह के साथ बाँटीए।

9. स्वभाव से अलौकिक जीवन बिताना

अब हमारे पास वह सभी भाग प्रस्तुत हैं, जो हमें नीच मनुष्य लक्षण छोड़ स्वभाव से अलौकिक जीवन जीने में हमारी मदद करेगा, जिस से हमारा जीवन अलौकिक और शक्ति से भरपूर और भीतरी शांति और विश्राम मिलेगा। हम हमारी पुस्तक के अंत में पहुँच चुके हैं, परन्तु मैं यहां रुकने वाला नहीं। नहीं, मैं आने वाले अध्यायों में इन सच्चाईयों के बारे में बार बार बताऊंगा। मैं जानता हूँ की जब तक इन सच को बार बार न बताया जाए, हम इस पर चलने वाले नहीं हैं। कई वर्षों पहले जब मुझे एक ऐसी पुस्तक मिली जिस में इन सच्चाईयों के बारे में बताया गया था, तो मैंने सारी कीताब तीन हार पढ़ ली। मैं उस पुस्तक में बताए सच पर चलना चाहता था। यह सच बहुमूल्य है की इस पर न चला जाए। इस सच को बताने वाली कुछ और पुस्तकों के नाम परिशिष्ट में बताए गये हैं।

वे सात सच जो आप को महीमा से जीवन बिताने में आप का साथ देंगे :

- सच # १ - परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है
- सच # २ - मैं एक बर्तन हूँ
- सच # ३ - अब मैं जीवित नहीं हूँ
- सच # ४ - मसीह मेरा जीवन है
- सच # ५ - मैं न्याय के लिए समर्पित हूँ
- सच # ६ - मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ
- सच # ७ - मैं इस विश्वास में जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।

प्रलोभन से बचने के लिए इन सात सचों का प्रयोग :

अब हम इन सचों को एक साथ रख कर यह देखेंगे की प्रलोभन से बचने के लिए इन सात सचों का प्रयोग कैसे करें। यह अच्छा होता यदी हमारे मसीही बनने के बाद प्रलोभन न होते, परन्तु ऐसा नहीं है। हर मसीही यही कहेगा की हमारे पास अभी भी हैं। परन्तु, जयवंत होने का एक रास्ता है की उन पर कैसे काबू पाया जाए, जैसा की यीशु ने उदहारण दिया है, जब कई जगाह पर वे प्रलोभन से घिरते थे, परन्तु फिर भी उन्होंने पाप नहीं किया (इब्रा ४:१५)।

कैसे जाने दें और परमेश्वर को करने दें :

कई बार मुझे जीवन में बताया गया की जाने दें और परमेश्वर को करने दें, परन्तु मुझे पता नहीं था की कैसे किया जाए, जब तक मुझे यह सात सच नहीं मिले। एक उदहारन यह है। एक बुरा व्यक्ति आकर तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारता है। (वह एक बुरे चाल चलन वाला व्यक्ति होगा, जो आप जैसे इतने अच्छे व्यक्ति के साथ इस तरह का व्यवहार करे।) आप तुरन्त चाहेंगे की उस व्यक्ति की गरदन तोड़ दे या पलट कर उसे एक थप्पड़ मार दें। परन्तु, आप बाईबल के एक वचन को याद करते हैं,

परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ की बुरे का सामना न करना, परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। (मत्ति ५:३९)।

तो, मुझे उस से प्रेम करने की कोशिश करनी है। मैं कोशिश करता हूँ। फिर कोशिश करता हूँ। पूरी कोशिश करने के बाद भी मुझे उसे मारने का मन करता है। रोमियों ७:१९ में बताए गए नीच मनुष्य लक्षण याद आता है, जहां मैं पाता हूँ की मैं वही नीच काम करना चाहता हूँ जो मुझे नहीं करना है। मैं उस व्यक्ति के प्रति अपने मन में गुस्सा भरे हुए हूँ, चाहे मैं उसे प्रेम करने और माफ करने की कितनी ही कोशिश क्यों न कर लूँ।

तब मुझे गलतियों ३:३ याद आता है। :

क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो की आत्मा की रीती पर आरम्भ करके अब शरीर की रीती पर अन्त करोगे? (गलतियों ३:३)।

मुझे पता है की मुझे ऐसा नहीं करना है। मैंने मुक्ति पायी है, मेरे परिश्रम से नहीं परन्तु पवित्रात्मा के कार्यों के द्वारा। तो क्या मैं अपने परिश्रम से स्वयं को निपुण कर सकता हूँ, बिना पवित्रात्मा की मदद के? बिल्कुल नहीं। "प्रभु, मैं ऐसी निर्बुद्धि के लिए माफी माँगता हूँ। मैं पश्चताप करता हूँ।"

अब मुझे पता चला :

तुम किसी ऐसी परिक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परिक्षा के साथ निकास भी करेगा की तुम सह सको। (१करिंथियों १०:१३)।

"प्रभु, आपने निकासी का राल्ता भी दिखाया है, और मुझे पता है की वह क्या रास्ता है।"

मैं समीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैं। और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। (गलतीयों २:२०)।

"आप ने मुझे यीशु से बदल डाला है, इसलिए अब इस स्थिती में यह यीशु का जीवन है, मेरा नहीं।"

और विश्वास के करता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें...।
(इब्र १२:२)।

"प्रभु यीशु, मैं आप के पास आता हूँ। मैं अपनी आँखें तुझ पर लगाता हूँ। कृपया आप मुझे दर्शन दीजिए की आपने इस स्थिती को सम्भाले रखा है।"

"मेरे बेटे, याद कर जब मेरे दुश्मनों ने बेवजहा मुझे दोषी ठहराया, मुझे मारा और मुझ पर कोड़े बरसाए और क्रूस पर मुझे नंगा और चोटों समेत लटकाया। याद कर की मैंने कैसे उन की ओर क्रूस पर से नीचे देखा और कहा, 'पिता, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते की वे क्या कर रहे हैं।' इसी तरह, मेरे बेटे, तुम सभा में बेवजहा दोषी ठहराए गए हो, फिर भी मेरा लहू तुम्हारे हृदय में बह रहा है, ताकी तुम अपने उपर दोष लगाने वालों को माँफ कर सको। अपने आप को क्रूस पर लटके हुए देखो, नीचे देखते हुए, तुम पर दोष लगाने वालों के लिए मेरे वचनों को दोहराओ। जब तुम मेरे वचनों को कहोगे तो देखो की किस तरह मेरा प्रेम तुम्हारे हृदय में बहता है। आप पूर्ण बन जाओगे। मेरे बेटे।"

"हाँ, मेरे प्रभु, आप के खून को मेरे दोषी तक बहते हुए मैं अनुभव कर सकता हूँ और उस जगह जब आप के साथ क्रूस पर लटका कर, उन वचनों को फिर से कहता हूँ: "पिता, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते की वे क्या कर रहे हैं।"

"प्रभु, अपने अंदर एक बदलाव अनुभव करता हूँ। कठोरता को तोड़ कर मेरे अंदर अपने प्यार को भर दे। धन्यवाद हो प्रभु। आपकी अधभुत शक्ति के लिए आप का धन्यवाद हो। मैं आप को दण्डवत करता हूँ।"

अब मुझे पता चला। सारा क्रम एक साथ लगाते हुए। जो कुछ भी हमने इस कहानी में कहा है उसे इस आखरी कहानी में नाटकीय रूप में पेश किया गया है। क्या आपने सारे भागों को समझा है? वे थे:

१. मैं एक दर्द अनुभव कर रहा हूँ।
२. मुझे एक आज्ञा यह बताती है की मुझे कैसे जवाब देना है।
३. मैं इस आज्ञा को मानने की कोशिश कर रहा हूँ और पहचान जाता हूँ की मैं नहीं कर पा रहा हूँ।
४. मैं याद रखूँगा की मैं शरीर के द्वारा नहीं करना चाहता परन्तु आत्मा की ओर देखता हूँ।
५. मैं जानता हूँ की यीशु मसीह के द्वारा बचने का रास्ता है।
६. मैं जानता हूँ की मसीह ने मुझे बदल जाला है और मेरे द्वारा जीवित है।
७. मैं अपनी आँखें यीशु पर लगाता हूँ और उसे जवाब देना को कहता हूँ।
८. वह दर्शन, रेहमा और शक्ति के द्वारा जवाब देता है।
९. मैं वही कहता हूँ जो वह करने को कहता है और उसकी शक्ति को अपने हृदय में बहते हुए अनुभव कर सकता हूँ।
१०. मैं अराधना करने लगता हूँ।

न्याय और स्वंस पश्रम के के द्वारा कोशिश करना गलत है। आप पवित्रात्मा के पास तुरन्त जा सकते हैं और खह सकते हैं, "प्रभु, मुझे चोट लगी है। क्या आप मुझ से बात करके मुझे चंगाई देंगे?" इस तरह आप २-६ क्रम को छोड़ देंगे और एक दम से क्रम १ से क्रम ७ पर जाएँगे। यदी परमेश्वर का अनुग्रह आप को आज्ञाओं को लाँघ कर सीधे आत्मा की ओर जाने को कहता है, तो यह जीने का सही तरीका है।

एक उदाहरण :

मुझे दूसरे तरीके से बताने दो: क्योंकि मसीह संसार की ज्योती है और पाप की तुलना अंधकार से की गयी है, तो हम यह चाहेंगे की मसीह की तुलना ज्योति से करें और मेरा प्रलोभन अंधकार है। आप अंधकार से कैसे निबटेंगे? उसे कमरे से बाहर धक्का दे कर? बिलकुल नहीं। इसी तरह हम में से कई अपने पापों से निबटते हैं। हम उसे लात मारते हैं और पीचते हैं और उससे छुटकारा पाना चाहते हैं। कितना पागलपन। यदी तुम मुझे अंधेरे कमरे में देखो की मैं लात मार रहा हूँ और उसे चला जाने को कह रहा हूँ, तो तुम मुझे पागलखाने में बंद कर दोगे।

इसके बदले परमेश्वर चाहता है की हम बत्ति जला लें। कैसे? परमेश्वर के पास आकर, जिस ने हमारे अंदर घर बना लिया है और उस से कहें की वह हमें बताएँ की इस स्थिती में वह हमें दर्शन दे। उस के शब्द क्या है? इस स्थिती के बारे में उस का दर्शन क्या है? यीशु ने कहा, "जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।" (यूहन्ना ६:६३)। उसके वचनों और दर्शनों के साथ आत्मिक जीवन का बहाव आता है जो आप को पाप और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त करता है और आप को अलौकिक महीमा में जीवित रखता है।

दूसरा उदाहरण :

यह कहने के बजाए, "प्रभु, मैं उस व्यक्ति से प्रेम करना चाह रहा हूँ। कृपया मेरी मदद करें," आप कहेंगे, "परमेश्वर, मैं उस व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता, परन्तु आप कर सकते हैं। आप इस भ्रमाण्ड के प्रेम के सोत्र हो और आप मेरे अंदर जीवित हैं। मैं चाहता हूँ की आप मुझ में से होते हुए आप अपने अलौकिक प्रेम से उस व्यक्ति को प्रेम करें।" अपनी आँखें यीशु के उस दृष्य पर रखें जब वह क्रूस पर लटके हुए, अपने दुश्मनों को प्रेम करता है, तो आप भरपूर प्रेम को अपने अंदर अनुभव कर सकते हैं, जो आप को अंदर से शक्ति देता है और अंदर से आप की इच्छाओं को बदल देता है। हल्लेलूईया। जब परमेश्वर का प्रेम आप के रोम रोम से बहने लगेगा तो आप अराधना करने लगेंगे। सच में मसीहत अलौकिक है।

अध्याय नौ के कुछ मुख्य विचार :

- सात मुख्य विचार जिन के द्वारा आप महीमा में भरे रह सकते हैं:
परमेश्वर सर्वसर्व है और सब में है।
मैं एक पात्र हूँ।
अब मैं जीवित नहीं हूँ।
मसीह मेरा जीवन है।
मैं आज्ञाओं के लिए मर चुका हूँ।
मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ (रेहमा और दर्शन पर ध्यान लगाते हुए)।
- मैं इस विश्वास से जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।
- इन सात मुख्य विचारों के कार्य करते हुए कई उदाहरण हैं।
- कुछ और मुख्य विचारों को लिख लीजिए।

विचार करें और विवाद करें :

- पिछले सप्ताह की किसी प्रलोभन को जाँचीए। आपने उसका सामना कैसे किया? इस अध्याय में जो १० क्रम बताए गये हैं, उन में से किस रीति से आपने उसका सामना किया? क्या आप हर क्रम को समझा पाएँगे? क्या आपने किसी प्रलोभन का सामना किया है, जहाँ आपने क्रम २-६ को लाँघ कर क्रम १ से सीधे क्रम ७ पर गये हों? इसे अपने समूह के साथ बाँटीए। इस स्थिति में परमेश्वर के अनुग्रह का उत्साह मनाईए।
- क्या आप अपने जीवन से अंधकार को हटाने का प्रयत्न करते हैं, या आप ज्योति को लाना चाहेंगे? बताईए की आप क्या करते हैं। नतीजों को बाँटीए। क्या होता है?
- **पत्राचार** - "प्रभु, जिस तरह से मैं प्रलोभन से निबटता हूँ, आप उसके बारे में क्या कहेंगे?" वह जो कहता है, उसे लिख लीजिए। अपने समूह के साथ इसे बाँटने के लिए तैयार हो कर आईए।

10. बाईबल के कुछ चरित्रों का इन पाठों को सीखते हुए उदहारण

बाईबल ऐसे लोगों की कहानीयों से भरी हुई है जो परमेश्वर के पास आए और स्वयं को पहचानने के लिए इसी क्रम को हूरा करना पड़ा, इन्हीं पाठों को सीखते हुए, जो हम ने इस पुस्तक में सीखा है। अक्सर किसी और को इस क्रम को अपने से पहले करते हुए देखना मददगार होता है। वे हमारे गुरु बन जाते हैं। वे हमें बताते हैं की हम कहाँ जा रहे हैं और हमें कदम कहाँ रखना है। हम चार व्यक्तियों की कहानीयां देखेंगे, दो पुराने नियम से और दो नये नियम से। वे हैं अब्राहम, मूसा, पतरस और पौलुस।

अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा और स्वयं पर नहीं (उत्पत्ति १२:२३)

अब्राहम की कहानी उत्पत्ति १२ में प्रारम्भ होती है, जब उसे अब्राम कहा जाता था। यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों और अपने पिता के घर को छोड़ कर, उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाती बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष के मूल होगा। जो तुझे आशिर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा, और जो तुझे कोसें, उसे मैं शाप दूँगा। और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे। यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला, और लूत भी उसके संग चला। और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था।

परमेश्वर ने अब्राम से बात की और उस ने उसकी आज्ञा मानी। यह परमेश्वर के चले की तरह लग रहा है। यह तो मुझे परमेश्वर के शिष्य की तरह लग रहा है। यदी वह नये नियम के समय में रहता तो उसे "बचा हुआ" कहा जाता। परन्तु वह मसीह से पहले जी रहा था, इसलिए उसके पास भी 'मुझे तुम्हें कुछ देना है' था, जो की कल्वरी पर चुकाया गया।

अब्राम परमेश्वर का मानने वाला है। क्या उस ने यह जाना की परमेश्वर सर्वसव है और सब में है, और यह की वह केवल एक पात्र है जिस में परमेश्वर बहता है, या वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कार्यों को करने के लिए स्वयं की योग्यता पर भरोसा करता है? आईए देखते हैं।

उस देश में आकाल पड़ा, इसलिए, अब्राम मिस्र देश को चला गया की वह परदेशी होकर रहे, क्योंकि देश मे भयंकर आकाल पड़ा था। फिर ऐसा हुआ की मिस्र के निकट पहुँच कर उसने अपनी पत्नि सारे से कहा, सुन, मुझे मालूम है की तू एक सुन्दर स्त्री है, और जब मिस्री तुझे देखेंगे तब कहेंगे, यह उसकी पत्नी है, इसलिए वे

मुझ को मार डालेंगे, पर तुझ को जीती रख लेंगे। अतः यह कहना, मैं उसकी बहन हूँ, जिस से तेरे कारण मेरा कल्याण हो, और मेरा प्राण तेरे कारण बचे। फिर ऐसा हुआ की जब अब्राहम मिस्र में आया, तब मिस्रियों ने उसकी पत्नि को देखा की वह अती सुन्दर है। और फिरौन के हाकिमों ने उस को देख कर फिरौन के सामने उसकी प्रशंसा की। इसलिए वह स्त्री फिरौन के घर में पहुँचाई गयी। और फिरौन ने उस के कारण अब्राहम की भलाई की। और उसको भेड बकरी, गाय बैल, दास दासीयां, गदेह गदहियां, और ऊँट मिले। परन्तु यहोवा ने फिरौन और उसके घराने पर, अब्राहम की पत्नि सारे के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां डालीं। तब फिरौन ने अब्राहम को बुलवा कर कहा, तूने मेरे साथ यह क्या किया। तूने मुझे क्यों नहीं बताया की वह तेरी पत्नी है। तूने क्यों कहा की वह तेरी बहन है। मैंने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिए लिया। परन्तु अब अपनी पत्नि को ले कर सहां से चला जा। और फिरौन ने अपने आदमियों को उस के विषय में आज्ञा दी और उन्होंने उस को और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति सहित जो उसकी थी, विदा कर दिया।

(उत्पत्ति १२:१०-२०)

अब्राहम अपनी पहली परिक्षा में असफलता मिली। चाहे उसे विश्वास का पीता कहा जाना था, उन की शुरूआत विश्वास में असफलता से हुई और स्वयं के विचारों पर भरोसा करने से। वह परमेश्वर की अयोग्यता से इतना डर गया था की उसने अपनी पत्नी से कहा की वह कहे की वह उसकी पत्नि नहीं है। इस में मुझे विश्वास नहीं दमखाई देता। यह मुझे मेरी तरह लगता है, जो अभी विश्वास में आगे बड रहा है। परन्तु, परमेश्वर का अंत नहीं हुआ है। यह कहानी तो अभी प्रारम्भ हो रही है। इसलिए परमेश्वर दुबारा अब्राहम से बात करते हैं।

और उसने उसको बहार ले जा कर कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है। फिर उसने उस से कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। उसने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इस बात को उस के लेखे में धर्म गिना। (उत्पत्ति १५:५,६)

अब ऐसा लगता है जैसे अब्राहम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति के विश्वास में आगे बड रहा है। परमेश्वर ने न केवल उसे रेहमा का शब्द दिया, परन्तु उसे दर्शन भी दिया, जिस से अब्राहम का विश्वास और गहरा हुआ। अब हमें कुछ नतीजे पता चलेंगे। परन्तु, परमेश्वर के वचन को पूरा होने के लिए, ग्यारह वर्षों के इंतजार के बाद, अब्राहम परमेश्वर के वचन को पूरा करने के लिए, कुछ और रास्ता खोजने लगा। क्या यह ऐसा कुछ लगता है की आपने भी ऐसा ही कभी किया है।

अब्राहम की पत्नी सारे के कोई संतान ना थी। उसके हाजिरा नाम की एक मिस्रि दासी थी। सारे ने अब्राहम से कहा, देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बंद कर रखी है, इसलिए, मैं तुझ से विनती करती हूँ की तू मेरी दासी के पास जा। सम्भव है की मेरा घर उस के द्वारा बस

जाए। सारे की यह बात अब्राम ने मान ली।

(उत्पत्ति १६:१, २)

हाजिरा गर्भवति हुई और उसने एक लडके को जन्म दिया, जो वंश को आगे बड़ा सकता था। इस से ऐसा लगता है की जब निराशा हो तो, मनुष्य भी परमेश्वर की मदद कर सकता है। यहां एक लडका बड रहा है जो वंश को आगे बड़ा सकता है जिस से मसीह भी पैदा हो सकते थे। अब्राम के लिए परमेश्वर के अगले वचन को सुनीए।

जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उस को दर्शन दे कर कहा, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ। मेरी उपस्थिती में चल और सिध्द होता जा। (उत्पत्ति १७:१)।

दूसरे शब्दों में, "मेरे साथ चल और पाप करना छोड दे।" क्या यह सच में इतनी बुरी बात थी, परमेश्वर? मैं तो केवल आप की सहायता कर रहा था। मैंने जो आप के लिए किया क्या आप उसे स्विकार नहीं कर सकते? अब्राम की विनती को सुनीए।

और अब्राहम ने परमेश्वर से हा, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे। यही बहुत है। तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम इसहाक रखना, और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बाँदूंगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के लिए युग युग की वाचा होगी। (उत्पत्ति १७:१८,१९)

यह तो दिल को चीर देने वाली बात है। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में मैंने जी जान लगा कर मेहनत करी और अब परमेश्वर उसे स्विकार नहीं कर रहा है। यह अच्छा समय है की हम पीछे हटें ऐर पूछें, "ठीक है प्रभु, आखिरकार आप क्या चाहतेहैं? मैंने अपना सब कुछ तुम्हें दे दीया परन्तु तुम्हें वह पसन्द नहीं आया।"

इस पुस्तक को पढ कर आप समझ गये होंगे की वह क्या चाहता है। उसे मेरे अच्छे प्रयासों की या मेरे अच्छे विचारों की आवश्यकता नहीं है। वह चाहता है की मैं उस की बातों को सुनूँ और वही करूँ जो वह चाहता है। वह मेरी दुर्बलता में अपनी शक्ति भरना चाहता है और मेरी न समझी में अपनी बुद्धि डालना चाहता है। वह यह नहीं चाहता की मैं अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से खाऊँ। जब तक उसकी आत्मा मेरे अंदर से मुझे न कहे, तब तक मुझे कुछ कार्य नहीं करना है। हम वापस अपनी कहानी की ओर जाते हैं।

फिर अब्राहम वहाँ से निकल कर दक्खिन देश में आकर कादेश और शूर के बीच में ठहरा, और गरार में रहने लगा। और अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के विषय में कहा, वह मेरी बहन है। इसलिए गरार के राजा अबिमेलेक ने दूत भेज कर यारा को बुलवा लिया। रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबिमेलेक के पास आकर कहा, सुन, जिस स्त्री को गूने रख लिया

है उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है। (उत्पत्ति २०:१-३)

हम इस पाप को पहले भी देख चुके हैं। अभी भी अब्राहम परमेश्वर पर भरोसा नहीं करता की वह उसकी रक्षा करेगा। वह स्वयं की योजनाओं पर डरोसा करता है। विश्वास में महान बनने के लिए और शारीरिक कमजोरी को दूर करने के लिए, कुछ समय लग सकता है। यह एक रात में नहीं हो जाता। जब तक की हम उस पर भरोसा नहीं करते, परमेश्वर हमारे जीवन में परिक्षा पर परिक्षा लाते रहता है।

आखिरकार जब अब्राहम १०० वर्ष का था तो परमेश्वर ने सारै द्वारा उसे एक पुत्र दिया। अब्राहम को हरण छोड़े २५ वर्ष हो चुके थे, जब यह हुआ।

सारा अब्राहम से गर्भवति हुई, और उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था, एक पुत्र उत्पन्न हुआ। (उत्पत्ति २१:२)

जब अब्राहम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब अब्राहम एक सौ वर्ष का था। (उत्पत्ति २१:५)

इस से मैं एक बात सीखता हूँ, वह यह है की परमेश्वर उस कार्य को करने के लिए मुझ से अधिक समय लेता है। मुझे अधीरता से बचना है। अब जब प्रतिज्ञा किया हुआ बेटा उत्पन्न हो गया, और अनुग्रह का उपहार मिल चुका, अब एक आखरी परिक्षा बाकी है। अब हम देखेंगे की क्या अब्राहम ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करना सीखा की नहीं या वह अभी भी स्वयं की योग्यताओं पर भरोसा करता है। हम यह भी देखेंगे की क्या अब्राहम उस उपहार को जो परमेश्वर ने उसे दिया है, स्वीकार करता है या वह परमेश्वर को स्वीकार करता है। जब परमेश्वर हमें कोई उपहार देता है तो हम उसे पकड़े रहते हैं बजाए उसे पकड़े रहने के।

इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ की, परमेश्वर ने अब्राहम से यह कह कर उसकी परिक्षा की, हे अब्राहम। उसने कहा, देख मैं यहां हूँ। उसने कहा, अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरियाह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबली कर के चढ़ा। अतः अब्राहम सवेरे तडके उठा और अपने गदेह पर काठी कस कर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया और होमबली के लिए लकड़ी चीर ली तब निकल कर उस स्थान की ओर चला जिस की चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी। तीसरे दिन अब्राहम ने आँखें उठा कर उस स्थान को देखा और उसने अपने सेवकों से कहा, गदहे के पास यहीं ठहरे रहो, यह लडका और मैं वहां पर जा कर और दण्डवत करके फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे। तब अब्राहम ने होमबली की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी और आग और छुरी को

अपने हाथ में लिया और वे दोनों एक साथ चल पड़े। इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा हे मेरे पिता, उस ने कहा, हे मेरे पुत्र क्या बात है। उसने कहा देख आग और लकड़ी तो है पर होमबली के लिए भेड कहाँ है। अब्राहम ने कहा, हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबली की भेड का उपाय आप ही करेगा और वे दोनों संग संग आगे चलते गये। जब वे उस स्थान को जो परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे, तब अब्राहम ने वहाँ वेदी बना कर लकड़ी को चुन चुन कर रखा और अपने पुत्र इसहाक को बांध कर वेदी पर ही लकड़ी पर रख दिया। फिर अब्राहम ने हाथ बढाकर छुरी को ले लिया की अपने पुत्र को बली करे। तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उस को पुकार के कहा, हे अब्राहम, उसने कहा देख मैं यहाँ हूँ। उसने कहा, उस लडके पर हाथ मत बढा। और न उस से कुछ कर, क्योंकि तूने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र, को भी नहीं रख छोडा, इससे मैं अब जान गया की तू परमेश्वर का भय मानता है। तब अब्राहम ने आँखें उठाई और क्या देखा की उसके पीछे एक मेढा अपने सींगों से एक झाडी में फंसा हुआ है। अतः अब्राहम ने जाके उस मेढे को लिया और अपने पुत्र के स्थान पर उसे होम बली कर के चढाया। अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवायिरे रखा, इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है की यहोवा के पहाड पर उपाय किया जाएगा। फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को पुकार कर कहा, यहोवा की यह वाणी है, की मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ की तूने यह जो काम किया है की अपने पुत्र वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोडा। इस कारण मैं निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करूँगा और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा और पृथ्वि की सारी जातीयों अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी। क्योंकि तूने मेरी बात मानी है। (उत्पत्ति २२:१-१८)

रोंगटे खडा कर देने वाली कहानी है। क्या आप अब्राहम के विश्वास के स्तर को देख पा रहे हैं? जब उसने अपने बेटे को वेदी पर चढाया परमेश्वर के लिए बलीदान देने को, तो वह क्या सोच रहा था? इब्रानियों हमें बताता है।

विश्वास ही से अब्राहम ने परखे जाने के समय में इसहाक को बलीदान चढाया और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना था, और जिस से यह कहा गया था इसहाक से तेरा वंश कहलाएगे, वही अपने एकलौते को चढाने लगा क्योंकि उस ने मान लिया की परमेश्वर सामर्थी है की उसे मरे हुआओं में से जिलाए, अतः उन्हीं में से दृष्टांत की रीती पर वह उसे फिर मिला। (इब्रानियों ११:१७-१९)।

अब्राहम का यह विश्वास था की परमेश्वर उस के बेटे को मृत्यु से भी उठा लाएगा। अब वह महन विश्वासी बन गया, जो जीने के लिए अपनी शक्ति पर नहीं भरोसा करता, परन्तु सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करता है। अब वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की

आवाज और दर्शन द्वारा जीवित है। काश हम भी उसी के पदचिह्नों पर चलें।

मूसा स्वयं के बजाए, परमेश्वर पर भरोसा करना सीखता है, परन्तु इस्राएल की संतान फूल ने फलने लगी और वे लोग अत्यंत सामर्थी बनते चले गये और इतना अधिक बड़ गये की सारा देश उन से भर गया। (निर्गमन १-७)

मूसा की कहानी निर्गमन २:१० से प्रारम्भ होती है।

जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गयी और वह उसका बेटा ठहरा। और उसने यह कह कर उसका नाम मूसा रखा, मैंने इस को जल से निकाला था। (निर्गमन २:१०)

विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इनकार किया, इसीलिए की उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना अधिक उत्तम लगा। उस ने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।

(इब्रानियों ११:२४-२६)

हम देखते हैं की चाहे मूसा फिरौन के राजभवन में पैदा हुआ, फिर भी उस ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर का शिष्य बनना चाहा, चाहे इस के लिए उसे परेशानी भी क्यों न झेलनी पड़ी। चाहे उसने सब कुछ परमेश्वर को दे दिया हो, क्या उस ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा? आईए, देखते हैं।

ऐसा हुआ की जब मूसा जवान हुआ और बहार अपने भाई बंधुओं के पास जाकर उन के दुखों पर दृष्टि करने लगा तब उसने देखा की एक मिस्रि जन उसके एक इब्रि भाई को मार रहा है। उसने इधर उधर देखा की कोई नहीं है, तो उसमिस्रि को मार डाला और बालू में छिपा दिया। फिर दूसरे दिन बाहर जाकर देखा की दो इब्रि पुरुष आपस में मार पीट कर रहे हैं, उसने अपराधी से कहा, तू अपने भाई को क्यों मारता है। उसने कहा, किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया। जिस भांती तूने मिस्रि को घात किया क्या उसी भांति तू मुझे भी घात करना चाहता है। तब मूसा यह सोच कर डर गया निश्चय वह बात खुल गयी है। (निर्गमन २:११-१४)

मूसा को क्योंकि यह पता चल गया था की उसने अपने लोगों को मुक्ति दिलानी है, उसने इसे एक ही करीके से करना चाहा जिसे वह जानता था: तलवार। जब परमेश्वर ने चाहा

की मूसा यहूदीयों को मुक्ति दिलाए, तो उन्होंने ऐसा कभी नहीं सोचा था। परमेश्वर यह कार्य अलौकिक तौर से करना चाहता था, ताकी सारी दुनिया यह जान सके की परमेश्वर उन के बाच में है। क्या परमेश्वर आप की पीडी के साथ ऐसा करना चाहता है? हम कहानी को आगे बढाते हैं।

जब फिरौन ने यह बात सुनी, तब मूसा को घात करने की युक्ति की तब मूसा फिरौन के सामने से भागा और मिथ्यान देश में जा कर रहने लगा और वह वहां एक कुएं के पास बैठ गया। (निर्गमन २:१५)

मूसा की शक्ति ने उसे असफल कर दिया था। उस की ताकत टूट चुकी थी। वह डर के मारे भाग कर छिप जाता है। क्या मुक्ति दिलाने वाला है। वह तो कुछ भी नहीं है। अब वह जंगल के पीछे अंधकार में चला जाएगा, उस स्थान पर जहाँ, परमेश्वर अकसर उन लोगों को ले जाता है जिन्हें वह महान बनाने के लिए प्रशिक्षण देता है। क्या मूसा जाने के लिए तैयार है या वह परमेश्वर की सहायता को मना कर देता है और मुख्य स्थान खोजता है? सुनिए और देखीए।

और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को तैयार हुआ। उसने उस से अपनी बेटी सिप्पोरा का विवाह कर दिया। (निर्गमन २:२१)।

जब परमेश्वर हमें अंधकार, टूटी परिस्थिती और असफलता की ओर ले जाता है, तो हमारे पास दो रास्ते रह जाते हैं। हम लात मार सकते हैं और चिल्ला सकते हैं और विरोध कर सकते हैं या हम इच्छा पूर्वक जा कर देख सकते हैं की परमेश्वर हमें क्या दिखाना चाहता है। मूसा इच्छा पूर्वक गया, और रेगिस्तान में परमेश्वर ने उसे महीमा दिखाई।

और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया और उसने दृष्टि उठा कर देखा की झाड़ी जल रही है पर भस्म नहीं होती। तब मूसा ने कहा मैं उधर जा कर बड़े आश्चर्य को देखूंगा की वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। जब यहोवा ने देखा की मूसा देखने को मुडा चला आता है तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उस को पुकारा हे मूसा, मूसा ने कहा, क्या आज्ञा। उस ने कहा, इधर पास मत आ और अपने पांवों से जूतीयों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खडा है, वह पवित्र भूमी है। फिर उस ने कहा मैं तेरे पिता का परमेश्वर और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर देखने से डरता था, अपना मूँह ढाँप लिया। फिर यहोवा ने कहा मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उन के दुख को निश्चय देका है

और उन की जो चिल्लाहट जो परिश्रम करवाने वालों के कारण होती है उस को भी मैंने सुना है। और उन की पीडा पर मैंने चित लगाया है, इसलिए अब मैं उतर आया हूँ की उन्हें मिस्त्रियों के वश से छुड़ाऊँ। और उस देश से निकाल कर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधू की धाराएँ बहती हैं, अर्थात् कनानी, हित्थी, ऐमोरी, परिजी और हिब्बी और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊँ। इसलिए अब सुन, इस्राएलीयों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है और मिस्त्रियों का उन पर अंधेर करना भी मुझे दिखाई पडा है। इसलिए आ मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ, की तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्त्र से निकाल ले आये। परन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ और इस्राएलीयों को मिस्त्र से निकाल ले आऊँ। उस ने कहा निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा और इस बात का की तेरा भेजने वाला मैं हूँ, तेरे लिए यह चिन्ह होगा की जब तू उन लोगों को मिस्त्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड पर परमेश्वर की उपासना करोगे। मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं इस्राएलीयों के पास जा कर उन से कहूँ, तुम्हारे पित्रों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदी वे मुझ से पूछें उस का क्या नाम है, तब मैं उन को क्या बताऊँ। परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलीयों से कहना, जिस का नाम मैं हूँ, उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। फ़ परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा की, तू इस्राएलीयों से यह भी कहना, तुम्हारे पित्रों का परमेश्वर, अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा। और पीडी पीडी में मेरा स्मर्ण इयी से हुआ करेगा। इसलिए अब जा कर इस्राएली पुराणीयों को इकट्ठा कर और उन से कह तुम्हारे पित्र अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर यहोवा ने मुझे दर्शन दे कर मुझे कहा है की मैंने तुम पर और तुम से जो बरताव मिस्त्र मे किया जाता है, उस पर भी चित लगाया है, और मैंने भी ठान लिया है की तुम को मिस्त्र के दुखों में से निकाल कर कनानी, हित्थी, ऐमोरी, परिजी, हिब्बी और यबूसी लोगों के देश में ले चलूँगा, जो ऐसा देश है कि जिस में दूध और मधू की धारायें बहती हैं, तब वे तेरी मानेंगे और तू इस्राएली पुरानीयों को संग ले कर मिस्त्र के राजा के पास जाकर, उससे यूँ कहना, इब्रानियों के परमेश्वर यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है, इसलिए अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दें की अपने परमेश्वर यहोवा को, बलीदान चढाएँ। मैं जानता हूँ की मिस्त्र का राजा तुम को जाने न देगा, वरन् बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। इसलिए मैं हाथ बडा कर उन सब आश्चर्य कर्मों से जो मिस्त्र के बीच करूँगा, उस देश को मारूँगा। और उस के पश्चात वह तुम को जाने देगा तब मैं मिस्त्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। वरन् तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पडोसिन और उन के घर में रहने वाली से सोने चाँदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहनाना। इस प्रकार तुम मिस्त्रियों को लूटोगे। तुब मूसा ने उत्तर दिया वे मेरे विश्वास नहीं करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन् कहेंगे, यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया। यहोवा ने उस से कहा, तेरे हाथ में वह क्या है। वह

बोला, लाठी। उस ने कहा, उसे भूमी पर डाल दे। जब उस ने उसे भूमी पर डाला तब वह सर्प बन गयी, और मूसा उस के सामने से भागा। तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढा कर उसकी पूँछ पकड ले, ताकी वे लोग विश्वास करें की तुम्हारे पित्रों के परमेश्वर अर्थात अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है। जब उसने हाथ बढ कर उसको पकडा तब, वह उसके हाथ में पिर लाठी बन गयी। फिर यहोवा ने उस से यह भी कहा, अपना हाथ छाती पर रख कर ढाँप। अतः उस ने अपना हाथ छाती पर रख कर ढाँप लिया। फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा की उस का हाथ कोड के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है। तब उस ने कहा, अपना हाथ छाती पर फिर रख कर ढाँप। उसने अपना हाथ छाती पर रख कर ढाँप लिया। और जब उस ने उस को छाती पर से निकाला तब क्या देखता है की वह फिर सारी देह के समान हो गया। तब यहोवा ने कहा, यदी वे तेरा बात का विश्वास न करें, और पहले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह का विश्वास करेंगे। और यदी वे इन दोनों चिन्हों का विश्वास न करें और तेरी बात को न मानें तब तू नील नदी से कुछ जल ले कर सूखी भूमी पर डालना, और जो जल तू नदी से निकालेगा वह सूखी भूमी पर लहू बन जाएगा। मूसा ने यहोवा से कहा हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा, मैं तो मूँह और जीभ का भद्धा हूँ। यहोवा ने उस से कहा, मनुष्य का मूँह किस ने बनाया है। और मनुष्य को गूँगा या बहरा, या देखने वाला या अंधा मुझे यहोवा को छोड कौन बनाता है। अब जा मैं तेरे, मुख के संग हो कर जो तुझे कहना होगा, वह तुझे सिखलाता जाऊँगा। उसने कहा हे मेरे प्रभु, कृपया किसी और को तू भेज। तब यहोवा का कोप मूसा पर भडका और उस ने कहा, क्या तेरा भाई लेवीय हारूण नहीं है। मुझे निश्चय है की वह बोलने में निपुण है। और वह तुझ से भेंट के लिए निकला आता है। और तुझे देख कर मन में आनंदित होगा। इसलिए तू उसे यह बातें सिखाना और मैं उस के मुख के संग और तेरे मुख के संग हो कर जो कुछ तुम्हें करना होगा, वह तुम के सिखलाता जाऊँगा। वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा। वह तेरे लिए मूँह और तू उसके लिए परमेश्वर ठहरेगा। और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा और इसी से इन चिन्हों को दिखाना। (निर्गमन ३:२ - ४:१७)

क्या नाटक है। रेगिस्तान में अकेले - यहीं पर हम परमेश्वर की शक्ति को खोज सकते हैं। मूसा ने वहीं पर परमेश्वर के दैवी प्रकाशन को पाया, उसी तरह पौलुस ने भी, और यीशु ने भी अपना अलौकिक प्रचार, ४० दिनों तक रेगिस्तान में अकेले रहने के बाद प्रारम्भ किया। यदी परमेश्वर तुम्हें रेगिस्तान में ले जाए, तो क्या तुम इच्छा पीर्वक जाने को तैयार हो?

परमेश्वर उसे शक्तिशाली रूप से इस्तेमाल करना चाहता था, परन्तु मूसा की अइच्छा को देखीए। मूसा अभी भी अपनी सीमाओं को देख रहा है: बोलने में निपुण नहीं था,

अविश्वासनीयता। परमेश्वर उस से नाराज हो गये क्योंकि वह इस बात को नहीं मान रहा था की परमेश्वर उसके द्वारा बात करेगा और उसका मूँह बनेगा। परमेश्वर यह नहीं चाहता की हम अपनी सीमाओं को देखें। यदी हम उसकी ऐत्मा और शक्ति और बुद्धि के द्वारा जी रहे हैं तो हमारी सीमा केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जिसकी कोई सीमा नहीं। परमेश्वर चाहता है की हम ऐसे पुरुष और महिलाओं की पीढी को उत्पन्न करें, जो केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज को सुने और उस के दर्शन को देखे, और वही करे जो वह करने को कहे, ताकी उन के द्वारा वह इस संसार को बदल सके। वह केवल लोगों को मांगता है। क्या तुम इन लोगों में सो एक बनना चाहोगे जो परमेश्वर की आवाज को सुन सके और उस के दर्शन को देख सके, जो अपनी बुद्धि पर निर्भर न हों परन्तु हर कार्य में उसको स्वीकार करें? यदी हाँ, तो इस संसार को बदलने में परमेश्वर आप को शक्तिपूर्वक प्रयोग करेगा। उसे बुद्धिमान या शक्तिशाली लोगों की आवश्यकता नहीं है। उसे उन लोगों की आवश्यकता है जो यीशु की तरह दैवी विचार पर निर्भर रहते हैं। यह वे लोग हैं जो उस दुनिया को बदल डालते हैं, जिस में वह रहते हैं।

अब देखीए की मूसा के लिए परमेश्वर क्या करता है। :

तब यहोवा ने मूसा से कहा, सुन मैं तुझे फिरौन के लिए परमेश्वर सा ठहराता हूँ, और तेरा भाई हारूण तेरा नबी ठहरेगा। (निर्गमन ७:१)।

जब हम अपने जीवनो द्वारा परमेश्वर की अलौकिक शक्ति को छोडते हैं तो सारी दुनिया के लिए हम परमेश्वर नजर आते हैं। नये नियम का वाक्य है, "मसीह की देह"। अब मूसा अलौकिक मुक्ति देने वाला है, वह दुश्मन को हराने के लिए अपने दाहिने हाथ का प्रयोग नहीं करता, परन्तु परमेश्वर की अलौकिक शक्ति के बहाव पर भरोसा करता है जो उस में से हो कर निकलती है ताकी लाखों लोगों को मुक्ति दिलाए।

यदी हम परमेश्वर की दैवी शक्ति का प्रयोग करते हैं, तो हम अपने आस पास के लोगों को लिए परमेश्वर की तरह लगने लगते हैं, या यदी हम धार्मिक क्रम का प्रयोग करें तो हम हंसी का जरीया बन जाते हैं। चुनाव आपने करना है।

पतरस, परमेश्वर पर विश्वास करना सीखता है, स्वयं पर नहीं। :

अब हम नये नियम की ओर मुडते हैं, जहां हम पतरस को देखते हैं, जिसने यीशु के पीछे चलने के लिए सब कुछ छोड दिया।

पतरस उस से कहने लगा, देख हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे हो लिए हैं।
(मरकुस १०:२८)

यह फिर ऐसे लगता है जैसे यीशु मसीह की मृत्यु और पुणरुत्थान से पहले मुक्ति मिल गयी हो। परन्तु, क्या पतरस ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर भरोसा करना सीख लिया था, या वह राज्य को स्थापित करने के लिए स्वयं की ताकत पर भरोसा कर रहा था? लूका २२:३१-६१ में पतरस की स्वयं इच्छा के टूटने की कहानी है। हम उस के अंशों को पढ़ेंगे।

शमौन, हे शमौन, देख शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है, कि गेहूँ के समान पटके। परन्तु मैंने तेरे लिए विनती की की तेरा विश्वास जाता न रहे, और जब तू फिरे तो अपने भाईयों को स्तिर करणा। उस ने उस से कहा, हे प्रभु मैं तेरे साथ बंदि ग्रह जाने वरन् मरने को भी तैयैर हूँ। उस ने कहा, हे पतरस मैं तुझ से कहता हूँ, की आज मुर्ग बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा की तू मुझे नहीं जानता। (लूका २२:३१-३४)

इस पर पतरस ने उस से कहा, यदी सब तेरे विषय में ठोकर खायें तो खायें, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा। (मत्ति २६:३३)।

यहां पर हम देखते हैं की, पतरस कुछ घमण्डी और स्वयं साहासी और अपने को बचाने के लिए स्वयं पर विश्वास करने लगा था। चाहे वह यीशु का चेला था, और उस के पीछे चलने के लिए सब कुछ त्याग दिया था, फिर भी वह 'मैं' को नहीं छोड़ पा रहा था। अब परमेश्वर उसे तोड़ने के क्रम से ले कर चलेगा। जब यहूदा ने यीशु को विश्वासघात किया था,

तब शमौन पतरस ने तलवार जो उस के पास थी खींची और महायाजक के दास पर चला कर उसका दाहिना कान उड़ा दिया। उस दास का नाम मलकुस था। तब यीशु ने पतरस से कहा, अपनी तलवार मयान में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ।
(यहून्ना १८:१०,११)

यह किसी विश्वासी को बहकाने के लिए काफी था। यहां पर मैं परमेश्वर को पूरी शक्ति से बचा रहा हूँ, और वह मेरे विरूध कार्य कर रहा है और उन की तरफदारी कर रहा है जो उस का अंत करना चाहते हैं। इस से भी बुरा यह है की यीशु समझते हैं की उन का इस तरह बरबाद होने के पीछे परमेश्वर का हाथ है। इस बात का कोई अर्थ नहीं है।

यदी आप दैवी विचार की ओर अपने आप को नहीं मोड़ते, तो हमारे लिए जीवन का कोई अर्थ नहीं निकलता, क्योंकि परमेश्वर के रास्ते हमारे रास्ते नहीं और परमेश्वर के विचार हमारे विचार नहीं। यह एक उलटे पलटे राज्य की तरह है, जहां जो पहले हैं वह पिछड़े हो जाएंगे और जो पिछड़े हैं वे पहले हो जाएंगे, और यदी तुम अपनी जान बचाओगे तो उसे खोओगे और अपनी जान खोओगे तो बचाओगे। मैं कभी परमेश्वर की योजनाओं या मकसद को नहीं समझ पाया। अच्छि हात यह है की मुझे समझना भी नहीं है। परमेश्वर उन्हें अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा बताता है। और गिरजाघर में तो हम सभी, उस सब से उच्च परमेश्वर के, भविष्यवक्ता, पादरी और राजा बन गये हैं। इसलिए हम परमेश्वर से पूछ सकते हैं की क्या हो रहा है और वह हमें बताता भी है।

रात समाप्त होने से पहले पतरस ने तीन बार यीशु को अस्विकार किया और बाहर निकल कर रोने लगा। कुछ दिनों के पश्चात वह सब कुछ छोड़ कर दुबारा मच्छलि पकड़ने निकल जाता है। अब वह तैयार है की गुरु उस का प्रयोग करे। अब वह स्वयं के अंत में पहुँच चुका है। अब वह जान गया है की परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए उसकी बुद्धि और शक्ति नाकाम रही हैं। बुद्धि के वृक्ष का कोई प्रयोजन नहीं। अब वह टूट चुका है, इसलिए उस का प्रयोग किया जा सकता है।

यीशु, पतरस को यहून्ना २१ में चंगा करते हैं और दुबारा उसे प्रचार में प्रवेश करते हैं: "मेरी भेड़ों को चरहा।" तब पतरस उपरी शक्ति का इंतजार करता है, इस से पहले की वह आगे बड़े।

जब पित्तुकुस्त का दिन आया तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फंटती हुई दिखाई दीं। और उन में से हर एक पर आ ठैहरीं। वे सब पवित्रात्मा से भर गये और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। (प्रेरितों २: १-४)

अब पतरस अलौकिक प्रचार के लिए तैयार है। उसकी दिनचर्या पर ध्यान दीजीए। पतरस और यहून्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मंदिर में जा रहे थे। (प्रेरितों ३:१)

उस ने प्रार्थना से अपना दिन प्रारम्भ करना सीख लिया है। वह दैवी विचार और दैवी बहाव को खोजता है, ताकी वह अलौकिक शक्ति और बुद्धि को तैयार कर सके। परमेश्वर

पाठ पढ़ा चुके थे। परमेश्वर ने पतरस को स्वयं को साबित कर के टूटे और अप्रोत्साहित अवस्था से उठा लिया। परमेश्वर ने फिर पतरस को चंगा किया, उसे दुबारा तैयार किया, शक्ति से अभिशिक्त किया और तब भेजा। वह, हम में से हर एक के साथ इसी क्रम का प्रयोग करता है। इस क्रम में आप कहा हैं?

पौलुस परमेश्वर पर भरोसा करना सीखता है और स्वयं पर नहीं :

अब हम पौलुस पर आते हैं, हमारी इस पढ़ाई का अंतिम व्यक्ति। आईए देखते हैं की किस तरह परमेश्वर ने पौलुस को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अलौकिक शक्ति पर भरोसा करना सिखाया, बजाए मनुष्य की सीमित सोचों पर विश्वास करने के।

फिलिप्पियों तीन में पौलुस हमें उसके बचपन की शिक्षा और स्वयं को परमेश्वर को सौंपने के बारे में बताता है।

पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूँ, यदी किसी और को भरोसा रखने का विचार हो तो मैं उस से भी बड़ कर रख सकता हूँ। आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएली के वंश और बिनयामीन के गोत्र का हूँ, इब्रानियों का इब्रानी हूँ, व्यवस्ता के विषय में यदी कहो तो फरीसी हूँ, उत्साह के विषय में यदी कहो तो कलीसीया का सताने वाला और व्यवस्ता की धार्मिकता के विषय में यदी कहो तो निर्दोष था। (फिलिप्पियों ३:४-६)

यदी कोई परमेश्वर को समर्पित था, तो वह पौलुस था। उसे धर्म की सब से उच्च शिक्षा प्राप्त हुई, वह उत्सुक था, उसने आज्ञाओं को माना और अपना जीवन पाखण्डियों को क्लेश पहुँचाते हुए काटता था। उसने परमेश्वर की व्यवस्था को पूरी उत्सुक्ता और धार्मिकता से पढ़ा और उन को अपने जीवन में भी अपनाया। परन्तु, फिर भी वह मानव विचार और समझ और ताकत और शक्ति के साथ कार्य करता था। वह भले और बुरे वृक्ष को खा कर जी रहा था। वह दैवी प्रकाश में नहीं जी रहा था। उसने परमेश्वर की आवाज को नहीं सुना और न ही परमेश्वर के दर्शन पाए। वह बाईबल के न्याय पर जीवित था। जिस तरह मैं अपने प्रारम्भ के मसीहत के दस वर्षों में जी रहा था, वह भी मेरी ही तरह था, बाईबल की आज्ञाओं को मानते हुए। मैं परमेश्वर की आवाज ना सुन पा रहा था और न दर्शन देख पा रहा था। मैं मानव शक्ति और बुद्धि से काम करता था। मैं जिन से सहमत नहीं था, गिरजाघर में उन को दोषी ठहराता। मैं एक फरीसी का स्वरूप था।

तब परमेश्वर ने कहा, "अब बहुत हो गया। मैंने पौलुस का हृदय देखा है। वह मुझे खोज रहा है, चाहे वह मेरी कलीसीया के विराध में आ रहा है। वह थोड़ा सा व्याकुल और बहक गया है। मैं उस से मलता हूँ और उसे ठीक करता हूँ।" और क्या वह मिले। वे दमिश्क के रास्ते पर मिले।

शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया और उस से दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभीप्राय की चिट्ठियां मांगी की क्या पुरुष क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंत पर पाये, उन्हें बांध कर यरूशलेम ले आये। परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एका एक आकाश से उस के चारों ओर ज्योती चमकी, और वह भूमी पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है। उस ने पूछा, हे प्रभु, तू कौन है। उस ने कहा की मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठ कर नगर में जा और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा। जो मनुष्य उस के साथ थे, वे अवाक रह गये, क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु कियी को देखते न थे। तब शाऊल भूमी पर से उठा, परन्तु जब आँखें खोली तो उसे कुछ दिखाई न दिया। और वे उस का हाथ पकड़ कर दमिश्क में ले गये। वह तीन दिन तक न देख सका और न खाया और न पीया। दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था। उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हनन्याह। उस ने कहा हाँ प्रभु। तब प्रभु ने उस से कहा, उठ कर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुसवासी को पूछ। क्योंकि देख वह प्रार्थना कर रहा है और उस ने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकी फिर से दृष्टि पाए। हनन्याह ने ऊत्तर दिया, हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है की इसने यरूस्लेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयां की हैं। और यह भी इस को प्रधान याजकों की ओर से अधिकार मिला है की जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बांध ले। परन्तु प्रभु ने उस से कहा, तू चला जा, क्योंकि वहां तो अन्य जातीयों, और राजाओं और इस्राएलीयों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिए, मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊँगा की मेरे नाम के लिए, उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा। तब हनन्याह उठ कर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रख कर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है की तू फिर दृष्टि पाए, और पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाए। और तुरन्त उसकी आँखों से छिलके से गिरे और वह देखने लगा। और उठ कर बपतिस्मा लिया और फिर भोजन कर के बल पाया। वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा, जो दमिश्क में थे और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, की वह परमेश्वर का पुत्र है। (प्रेरितों ९:१-२०)।

कितना अविश्वासनीय कहानी है। हम धर्म से अलौकिक मसीहत में आ गये। हम बुद्धि के वृक्ष से जीवन के वृक्ष पर आ पहुँचे, मानव ताकत से दैवी ताकत तक, अपनी योग्यताओं के बल पर जीवन बिताने से दैवी मुकाबले तक। यह बदलाव हर मसीही के जीवन में आना चाहिए। मेरे जीवन में आना चाहिए। आपके जीवन में आना चाहिए। क्या आप के जीवन में यह बदलाव आ चुका है?

मैं पहले भी कह चुका हूँ की व्याकुलता, दैवी प्रकाश की ओर पहला कदम है। पौलुस भी इसी व्याकुलता से गुजरा था, जब उसने जाना की जिस पर उस ने विश्वास किया और जो उस ने किया वह सब गलत था, और अब उस को वापस लौट कर दुबारा पढाई करनी है और अनुभव करना है। पौलुस हर जगह से हट जाता है केवल परमेश्वर के।

और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे। पर तुरन्त अरब को चला गया। और फिर दमिश्क को लौट आया। फिर तीन वर्षों के बाद मैं, कैफा से भेंट करने के लिए यरूशलेम गया और उस के पास पन्द्राह दिन तक रहा। (गलतीयों १: १७, १८)।

हम में से हर एक को चाहिए की वह स्वयं को अकेला कर ले और परमेश्वर को अपनी आत्मा में खोज निकाले। वह उस आत्मविध्या से कुछ अधिक है, जिसे मैं दूसरों के द्वारा सीख सकता हूँ। वह एक व्यक्ति है जो मुझ में जीवित रह कर मेरे साथ चलना फिरना चाहता है। और उसे खोजने का सब से अच्छा तरीका यही है की हम कुछ समय निकाल कर अपने अंदर उसकी हरकतों को अनुभव करें। इसे अनुभव सम्बंधि शिक्षा कहते हैं। यह कोई पुस्तक की पढाई नहीं है। इसे अनुभव द्वारा सीखना कहते हैं। मैं परमेश्वर की उपस्थिती और शक्ति को अनुभव करता हूँ। मैं उसकी आवाज सुनता हूँ। यह किसी पुस्तक में नहीं मुलता। यह तब मिलता है, जब मैं अपने मन की गहराईयों में डूबता हूँ।

तीन वर्षों के बाद पौलुस दुबारा समाज में प्रवेश करता है। पहले वह यरूशलेम गया, जहां उसने अपनी नयी समझ और परमेश्वर के साथ अपने अनुभव को, माने जाने कलिसीया के अगुवों के सामने रखा। जब उसने अपने नये अनुभवों और समझ को आत्मिक अधिकारीसों के सामने रख दिया, तो वे शक्तिशाली रूप में प्रचार करने लगे।

फिर तीन वर्षों के बाद मैं, कैफा से भेंट करने के लिए यरूशलेम गया और उस के पास पन्द्राह दिन तक रहा। परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से कियी से न मिलना। जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, देखो परमेश्वर को उपस्थित जान कर कहता हूँ की वे झूठी नहीं। इस के बाद मैं सीरीया और किलिकिया के प्रान्त में आया। पर यहूदीया की

कलीसीया ने जो मसीह में थी मेरे मुँह कभी नहीं देखा था। परन्तु यही सुना करती थी, की जो हमें पहले सताता था, जिसे पहले नष्ट करता था और वे मेरे विषय में परमेश्वर की महीमा करती थी। (गलतीयों १: १८ - २४)

अपनी अध्यात्म विध्या को पेश करने के बाद, पौलुस प्रचार करने लगा। परन्तु उसका नया प्रचार अलौकिक था। वह बिमारों को चंगा करता है और मरे हुएों को जिलाता है। अब वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का पात्र बन चुका था जिस से अलौकिक शक्ति निकल रही थी।

परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हें को मैंने मसीह के कारण हानी समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु यीशु मसीह की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानी समझता हूँ। जिस के कारण मैंने सब वस्तुओं की हानी उठाई और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उस में पाया जाऊँ, न की अपनी उस धार्मिकता के साथ जो व्यवस्ता से है वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने से मिलती है, ताकी मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानऊँ, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ की मैं किसी भी रीती से मरे हुएों में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।

(फिलिप्पियों ३: ७ - ११)

पौलुस स्वयं मृत्यु और पुणरुत्थान से गुजरा है। वह जान गया है की अब वह जीवित नहीं है, परन्तु, उस में मसीह जीवित है, जो उस में अपना जीवन बिता रहा है। हल्लेलूईया। पौलुस अब उसके अंदर पवित्रात्मा की शक्ति के बहाव के द्वारा जीवित है। वह अपनी बुद्धि से नहीं जी रहा। अब वह अपने हृदय के द्वारा, और उसके हृदय में जो जीवन का वृक्ष है, उसके द्वारा जीवित है। वह महीमा में लीन हो कर जी रहा है।

मसीही जीवन में बदलाव लाने वाले दो मुख्य विचार :

मसीही जीवन में बदलाव लाने वाले दो मुख्य विचार होते हैं। एक तो मुक्ति है, जब आप मसीह को पा लेते हैं (असल में वह आप को खोजता है)। दूसरा वह है जब आप अपने जीवन में गलतीयों २:२० को अनुभव करते हैं। क्या आपने दोनों का अनुभव किया है? यदी नहीं, तो रेगिस्तान में जाईए और उसे खोजीए, वह जो आप के अंदर बिना परिश्रम के बह रहा है।

हमारे मुक्ति के अनुभव के बाद, एक संघर्ष और असफलता का दौर आता है। आखिरकार हमें पता चलता है की हम मसीह के साथ मर चुके हैं और उस के साथ जीवित

भी हुए हैं। यह आसे लगता है जैसे मेरे पास जमा खाते में \$50,000 थे, परन्तु मुझे ऐसे लगता था जैसे \$5,000 हों। मैं इस \$5,000 के स्तर पर ही जीवित रहता हूँ, जब तक मुझे पता नहीं चलता। पर जब मुझे पता चलता है तो मैं अपना दूसरा चेक पेश करता हूँ - जेसे कि कुछ लोग इसे दूसरी आशीष कहते हैं।

अध्याय दस के कुछ मुख्य विचार :

- बाईबल में ककई पुरुष और महिलाओं की कहानीयां हैं, जो हमें बताती हैं की हमें स्वयं पर नहीं परन्तु परमेश्वर पर भरोसा करना है।
- यह सबक हम सब को सीखना चाहिए।
- इस सबक को सीखने पर हम अर्म से अलौकिक मसीहत की ओर जाते हैं।
- हम परमेश्वर की शक्ति को रेगिस्तान में पाते हैं।
- हम में रेगिस्तान में जा कर परमेश्वर के बहाव को खोजने की इच्छा होनी चाहिए।
- एक बार जब स्वयं टूट जाता है, तो हम महीमा में लीन हो कर जीते हैं। हम में अलौकिक शक्ति बहने लगती है।
- कुछ और विचार जो आप को मुख्य लगे, उन्हें लिख लीजिए।

विचार करीए और विवाद करीए :

- क्या अह इस बात से सहमत हैं की व्याकुलता दैवी प्रकाशण की ओर ले जाती है? क्या आप कभी व्याकुलता के दौर से गुजरे हैं, जिस के द्वारा महान दैवी प्रकाशण हुआ हो? यदी हाँ, तो उस अवसर को याद करीए। इसके मध्यनजर, क्या आप समझते हैं की हमें व्याकुलता का जश्न मनाना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर इस के द्वारा हमारे जीवन में नया बदलाव ला रहा है?
- क्या आप कभी उन पदचिन्हों पर चलें हैं, जिस पर इस अध्याय में बताए गए हमारे चार बाईबल के चरित्र चले थे? यदी हाँ, तो अपने जीवन के क्रम को याद करीए, जैसे वह इस अध्याय से मेल खाते हैं। अब आप कहाँ हैं? आप किस क्रम में हैं? कौन सा

अगला कदम परमेश्वर चाहता है की आप लें? क्या आप परमेश्वर की आवश्यकता और शक्ति के बहाव के साथ बह रहे हैं या आप इस का विरोध कर रहे हैं? मूसा की तरह, क्या आप अपने जीवन को इच्छा पूर्वक परमेश्वर की आवश्यकताओं के लिए सौंप रहे हैं?

- **पत्राचार** - "प्रभु, कृपया मेरे मसीही जीवन की राह के क्रम के बारे में मुझ से बात कर। मैं कहाँ हूँ? आप मुझे कहाँ ले कर जा रहे हैं? आप क्या चाहते हैं की मैं, इस समय किस तरह से जवाब दूँ?" परमेश्वर जो आप से कह रहा है उसे लिख लीजीए, और अपने समूह के सामने पढ़ने के लिए तैयार हो कर आईए।

11. वह कला जो विराने में सीखी गयी

यह जान कर अचम्बा होता है की किस तरह परमेश्वर जिन्हें तैयार करना चाहता है, उसे प्रशिक्षण देने के लिए कुछ समय तक विरान में ले जाता है। वह ऐसा क्यों करता है? क्या विराने में ऐसा कुछ है जो हम समाज में नहीं पाते? यदी हाँ, तो क्या? क्या परमेश्वर हमें वहा इसलिए ले जाता है की हम दुःखी हों? हमारी सारी इच्छाओं और आशाओं का नाश करने के लिए? वह हमें विराने में क्यों ले जाता है?

क्या परमेश्वर आप को विराने में ले गया है? यदी हाँ, तो कब? आपने वहां पर क्या सीखा? वह जो पूरा करना चाहता था, क्या उसने उसे आप के हृदय और प्राणों के साथ पूरा किया? हम इन प्रश्नों का जवाब जानना चाहते हैं, ताकी हम इस विराने के अनुभव से हट कर वादा किए गए देश में प्रवेश करें।

परमेश्वर हमें विराने में ले जाता है :

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों की अगुवाई की, तो वह उन्हें जंगल की ओर ले गया। यीशु के लिए भी सही सच है:

फिर यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा, और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा। (लूका ४:१)

मैं जंगल में केवल घूमता नहीं हूँ। परमेश्वर सही समय को चुन कर, मुझे विराने में ले जाता है। उसके दिमाग में कुछ आवश्यकताएँ हैं। वह जानता है की मुझे इस की आवश्यकता है। शरीरिक रूप में मुझे इन सब को देख पाना कठिन है। मैं समाज में खुश था। मेरा जीवन स्थिर था। मेरे पास खाने को भोजन, पहनने को कपडा और आवश्यकता की हर वस्तु मौजूद थी। एक ऐसी जगह जाना जहाँ मेरे हाथों की यह सब वस्तुएँ नहीं मिल पाएँगी, डरावना लगता है।

विरान वह जगह है जहाँ स्वयं पर निर्भर होना टूट जाता है :

मैं इस बात के आमने सामने होता हूँ की जंगल में मैं इन आवश्यक वस्तुओं को कैसे पूरा सकूँगा। यह कोई मूलार्थक जंगल था या परमेश्वर मुझे एक स्थापित नौकरी से हटा कर, मुझे एक परिवर्तन समय में ले आया है जहाँ उस पर भरोसा करने के लिए वह दबाव डालेगा। चाहे जो भी बो, यह वह जगह है, जहाँ स्वयं पर निर्भर होना टूटता है। यह वह जगह है जहाँ मुझे सिखाया जाता है की मुझे मेरे दाहिने हाथ की ताकत के बजाए स्वशक्तिमान परमेश्वर की ताकत पर भरोसा करना है, जो मेरा देनेवाला और रखवाला है। इस्राएली जब दिन ब दिन जंगल में चलते जाते थे, तो परमेश्वर ही उन को भोजन देता था। वहाँ पर उन्होंने सीखा की परमेश्वर के बच्चों के लिए दुर्बलता ही शक्ति है।

मैं कई बदलाव के दौर से और जंगल के अनुभव से गुजरा हूँ, और जब मैं पत्राचार करता हूँ तो परमेश्वर मुझे बताता है की वह मेरा देनेवाला और रखवाला है, और मुझे उस पर विश्वास करना है। वह बार बार यही कहता है। निम्न एक उदहारण दिया गया है:

११-२६-८९

"शुभ दिवस, यीशु। मैं समझता हूँ की आप मुझे आज बदलना चाहते हैं। मैं समझता हूँ की आप ने रात ही में बदलाव का क्रम प्रारम्भ कर दिया है।"

"हाँ, मेरे बेटे, मैंने शुरू कर दिया है। मैंने इसे रात में ही प्रारम्भ कर दिया था। मैंने दूतों को भेजा है की वह तुम्हारी सेवा करें। और आज दिन में भी मैं दूतों से कहूँगा की वह तुम्हारी देखभाल करें। तुम मेरे प्रिय पुत्र हो जिस से मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"परन्तु प्रभु, मैं तुम्हें बहुत निराश करता हूँ।"

"मार्क, मैं तुम से ऐसी परिक्षा लूँगा, जैसी तुम ने पहले कभी नहीं दी। जिस काम के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है, उस काम को मैं और बड़ा रहा हूँ। इसलिए तुम असफलता अनुभव कर रहे हो, क्योंकि तुम अपने विश्वास को आगे बढाना चाहते हो, जैसा की मैंने तुम को पहले करने को कहा था।"

"हाँ, प्रभु, मैं जानता हूँ की आपने मुझे विश्वास को बढाने के लिए चुना है। मैं समझता हूँ, की मैं इस बात को भूल गया था।"

"और पुत्र, तुम्हारे बाकी की खोज बस वही है - खोज। यह ठीक है। मैंने मनुष्य को ऐसा ही बनाया है। परेशान मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

"मार्क, अपना विश्वास बढाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे जीवन से अधभुत कार्य करवाऊँगा। मैं न तो तुझे छोड़ूँगा और न तुझे अकेले रखूँगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ. विश्राम कर और मुझ पर भरोसा कर। लिखते रह और परिक्षण करते रह और उपजेश देते रह.... तू मेरे लिए बहुत मुख्य है। इसलिए मैं तुम्हें छांट रहा हूँ और शक्तिशाली बना रहा हूँ, क्योंकि मैंने कई महान वस्तुएँ तेरे लिए बचा रखी हैं। हम दोनों मिल कर महान कार्य करेंगे। परन्तु, तुम्हें शुध्द और शक्तिशाली बनना है। इसलिए, मेरे बेटे, इस क्रम का जश्न मना, क्योंकि क्रम वही है जिस में तुम हो। तुम दिन के अंत के गोल का जश्न नहीं मना सकते क्योंकि तुम अंत के गोल को देख भी नहीं सकते। इसलिए, क्रम का जश्न मनाओ। मैं फिर से कहता हूँ की क्रम का जश्न बनाओ।"

"इस समय मैं दूसरों को भेजूँगा की वह तुम्हें ताकत दे। मेरा शरीर ऐसे ही काम करता है। आप दूसरों को उस वक्त ताकतवर बनाते हैं, जब आप गोल देखते हैं, वे तुमहें ताकतवर बनाते हैं जब वे गोल देखते हैं। मैं जिन्हें तुम्हारे पास भेजता हूँ, उन्हें स्वीकार कर लो।"

"ठीक है, मेरे प्रभु।"

"तुम फिर से चौड़े रास्तों पर और छोटे रास्तों पर जा कर सारी दुनिया को बताओ। परन्तु, इस समय मैंने तुम्हें इसलिए घर बुलाया है की मैं तुम्हें पात्र बनाना चाहता हूँ उस दुनिया के लिए बोलने के लिए कहूँगा। इन सारी बातों के पूरा होने के लिए प्रार्थना कर और मैं उन्हें जल्द से जल्द तेरे रास्ते भेजूँगा। इस बीच मैं तेरी सारी आवश्यकताओं को पूरा करूँगा। रुक कर देखो।"

परमेश्वर ने तब मुझे बताया की मैं अपनी पत्नि से पूर्ण रूप से कैसे प्रेम कर सकता हूँ और अगला कार्य जो वह करवाना चाहता है।

आप देख रहे हैं, परमेश्वर मुझे बड़ा रहा है। वह मुझे उस पर विश्वास करना सिखा रहा है और उस स्थान को समझा रहा है जहां मैं जीवन में इस वक्त हूँ और उस जगह रहने की आवश्यकता, और मुझे उस स्थिति का सामना कैसे करना है। जब मैं पत्राचार करता हूँ तो तो इस तरह की बुद्धि और ताकत मुझ में बहती है। यह केवल गुप्त बुद्धि है। उन्होंने हर दिन किस तरह बिताया जाए, वह बता कर अंत किया।

जंगल वह जगह है जहां आप बुद बुदाना छोड़ देना सीखते हैं :

गिनतीयों ११ से १८ तक पता चलता है की मूसा और लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध कई बार बुद बुदाया है। इस से परमेश्वर गुस्से में आ गये और कड़ा परिणाम भी देखने को मिला। इन कहानीयों को जानने के लिए आप इन वचनों को पढ़ना चाहोगे। परमेश्वर अपने लोगों के हृदयों से बात कर रहा था। वह उन के बीच से धमण्ड, दुश्मनी, लालच, ईर्ष्या, अविश्वास और हर बात के लिए धन्यवाद न देना, जैसी बातों को निकाल रहा था। एक दिन मैं परमेश्वर ने १४,७०० लोगों को मारा जो बुद बुदा रहे थे (गिनती १७:४९)। जब मैंने इस बात को जाना तो मैंने जीवन भर के लिए बुद बुदाना छोड़ दिया। परमेश्वर बुद बुदाना नहीं पसन्द करता। उसने हमें हर समय खुश रहने का आदेश दिया है, और हर बात में धन्यवाद देने को कहा है, क्योंकि वह सब चीजों का प्रभु है। जब हम बुद बुदाते हैं तो हम उसे हर चीजों के प्रभु होने से इनकार करते हैं, और अविश्वास और लालच में फँस जाते हैं।

अपना हिसाब सही रने के लिए मैं कहूँगा की कई बार मैं अब भी बुद बुदाता हूँ। यह तब होता है जब मैं परमेश्वर के सामने से हट जाता हूँ और स्वयं की बुद्धि पर निर्भर करने लग जाता हूँ। इसलिए बुद बुदाना मेरे लिए परमेश्वर की उपस्थिति का नापदमंड है। मूसा भी कई समय निराश हो जाता था।

और जो तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, की तू मेरे प्राण एकदम लेले, जिस से मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।
(गिनती ११:१५)।

मैं इसे समझा सकता हूँ। "परमेश्वर मुझे उठा ले ताकी तेरे सामने से हटूँ तो अपनी दुर्दशा ना देख सकूँ।" यह मैं कैसा हूँ, उस बात को याद दिलाता है। यह अच्छी बात है की मैं महीमा में जीवित रहता हूँ।

परिक्षा के समय जो हमारे दिमाग में विपरित विचार आते हैं, वह शैतान की तरफ से होते हैं। जब यीशु जंगल में थे (लूका ४), उन्होंने शैतान से वार्तालाप किया। शैतान ने उन से कहा की वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करें। "इन पत्थरों से कह की वे रोटी बन जाएं।" शैतान की आवाज में दोष था: "यदी तू परमेश्वर का पुत्र है तो..." शैतान ने उसके घमण्ड और आत्मा सो विनती की: "मैं यह सब अधिकार, और इनका वैभव तुझे दूँगा..।"

"तू अपने प्रभु परमेश्वर की परिक्षा न लेना।" शैतान ने अपने हमले में पवित्र वचन का उपयोग किया।

इसलिए, जंगल में जो हो कहा है वह यह है की हम अपने हृदय और दिमाग के शैतानी, विपरीत, दोषी, घमण्ड, लालची विचारों से सामना करते हैं। हम पहचान जाते हैं की यह शैतान की आवाज है, और हमें इसे हटा कर परमेश्वर की आवाज में बदल देना है। विरान, हमारे जीवन में वह स्थान और समय है जब हम अपने अंदर की शैतानी आवाज को हटा देते हैं और अंदर की दैवी आवाज और बहाव को पहचानते हैं।

जंगल वह जगह है जहाँ हम परमेश्वर की आवाज को सुनते हैं। :

व्यवस्थाविवरण ५: २२ - ३१ में, मूसा वह कहानी दौहरा रहा है, जहां परमेश्वर उसकी आवाज को ठीक कर रहा है और अपने वाचा के बच्चों के साथ संगति खोज रहा है। उसने मनुष्य को इसलिए बनाया की वह उन के साथ संगति कर सके। उसने कुछ समय तक आदम और हवा को साथ संगति रखी, परन्तु पाप ने इस संगति को तोड़ दिया। अब जंगल में परमेश्वर अपने बच्चों के साथ संगति खोज रहा है, इस्राएलियों के साथ बात चीत करके। परन्तु उसकी आवाज के सात आग निकलती है, जो हम जानते हैं की पवित्रात्मा है, जो हमारे जीवन के पापों को जला कर हमें शुद्ध करता है, जिस के द्वारा हम शारीरिक रूप से मर जाते हैं और आत्मा में जीवित रहते हैं। इस्राएलीयों को यकीन नहीं था की वे इस मृत्यु के क्रम से गुजरने के लिए तैयार थे की नहीं। यह दर्दनाक हो सकता है। इसलिए उन्होंने परमेश्वर की आवाज को ठुकरा कर बाईबल की व्यवस्था के तैहत रहना मंजूर था। बाईबल की व्यवस्था के लिए एक स्थान है, जैसा की हम पहले भी बता चुके हैं। यह मुझे तब तक काबू में रखती है जब तक मैं परमेश्वर की आवाज को सुन नहीं लेता, और यह मुझे सिखाती है की शरीर में ताकत नहीं की वह मुझे सही कर सके।

इसलिए, इस्राएलीयों ने परमेश्वर की आवाज को ठुकरा दिया। इसलिए वे वादा किए हुए देश में परवेश नहीं कर पाए, और जंगल में मर गए। वादा किया हुआ देश, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज सुनने और दर्शन देखने का फल है। जब उन के बच्चे वादा किये हुए देश के शहरों को जीतते रहे, वे ऐसा केवल इसलिए कर पाए, क्योंकि वे परमेश्वर की आवाज के द्वारा दैवी आदेश पा रहे थे।

रेगिस्तान वह जगह है जहां हम परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं और उसके मानना सीखते हैं। यदि आप इस पाठ को नहीं पढ़ते, तो आप जंगल में से कभी बाहर नहीं निकल पाओगे। यदि आप ने परमेश्वर की आवाज को सुनना नहीं सीखा, तो मैं आप से कहूंगा की आप मेरी साक्षी, परमेश्वर से बातचीत पढ़ीए। यदि आप परमेश्वर की आवाज सुन रहे हैं और केवल सुन रहे हैं और उस पर यकीन नहीं कर रहे हैं, तो कृप्या, पश्चताप करें और एक नयी शुरूआत करें, ताकी आप अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

अध्याय ग्यारह के मुख्य विचार :

जंगल, हम सब के जीवन में एक मुख्य भाग है।

- कई मुख्य पाठ हैं, जिन्हें हमें जंगल में सीखना है।
- जब समय सही होता है, तब परमेश्वर हमें जंगल में ले जाता है।
- जब हम उन पाठों को पढ़ लेते हैं, जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किये हैं, तो परमेश्वर हमें जंगल से बाहर निकाल लाता है।
- यदि हम उन पाठों को नहीं सीखते जो परमेश्वर हमें सिखाना चाहता है, तो हम जंगल से कभी भी बाहर नहीं निकल पाएंगे, और हो सकता है की वहीं पर मर जाएं।
- जंगल के दूसरी ओर वादा किया हुआ देश है।
- कुछ और विचार जो आप को मुख्य लगते हैं, उन्हें लिख लीजिए।

विचार करें और विवाद करें :

- क्या आप जंगल गए हैं? क्या आप ने वह सबक सीखे जो परमेश्वर आप को सिखाना चाहते थे? वे क्या थे? इन सबक को मानने के नतीजे से आप के जीवन में क्या बदलाव आया है? अपने समूह के साथ इसे बांटीए।

- क्या आपने अपने हृदय में परमेश्वर की आवाज को पहचाना है? क्या आपने दोष लगाने वाले को हटा कर, तसल्ली देने वाले को अपनाया है? क्या आप परमेश्वर की आवाज को सुन कर उसे मानते हैं?
- जब परमेश्वर आप को जंगल में ले जाना चाहता था, तो क्या आप इच्छापूर्वक गये थे? क्या आपने अपने आप को उसको सौंपा है, ताकी आप उसकी महीमा में जीवित रहो? अपने अनुभव को अपने छोटे समूह के साथ बांटीए।
- **पत्राचार** - "प्रभु, मेरे जंगल के अनुभव के विषय आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं? वह कहां था? वह क्या था? आप मुझे क्या सिखाना चाहते थे? क्या मैंने सीखा? क्या मैं इच्छा पूर्वक आप के पीछे आ रहा हूँ, या जब आप मुझे थामते हैं, तो क्या मैं इस का विरोध करता हूँ? आप जो बता रहे हैं, उसके लिए आपका धन्यवाद हो प्रभु।" हमेशा की तरह इन प्रश्नों को अलग पत्रे पर लिख लें और अपना आप को परमेश्वर की उपस्थिती में शांत करें और स्वैच्छिता की ओर ध्यान लगाएं। जो वह आप से कहता है, उसे लिख लीजिए। अपने पत्राचार में से कुछ पढ़कर सुनाने के लिए तैयार हो कर आईए।

12. नये नियम को दुबारा पढ़ना

जब मैंने उन सात सचों के मध्यनजर जब नये नियम को दुबारा पढ़ा, तो मुझे वह बिल्कुल ही नयी किताब लगने लगी। यह बिल्कुल ही नये तौर से उभर कर आयी, और गहरे दैवी प्रकाश के साथ उभर कर आई, जैसे पहले मैंने कभी अनुभव ही नहीं किया था। आईए हम मिल कर उसके कुछ भागों को पढ़ते हैं, और देखते हैं की हमें क्या मिलता है। यह करने से पहले हम, उन सात सचों को जो इस पुस्तक में बताए गए हैं, दुबारा देखते हैं।

- सच # १ - परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है
- सच # २ - मैं एक बर्तन हूँ
- सच # ३ - अब मैं जीवित नहीं हूँ
- सच # ४ - मसीह मेरा जीवन है
- सच # ५ - मैं न्याय के लिए समर्पित हूँ
- सच # ६ - मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ
- सच # ७ - मैं इस विश्वास में जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।

सात और आठ को पढ़ते हुए रोमियों छः, सात और आठ :

हमें मसीही जीवन के तीन स्तरों को बताते हैं। रोमियों छः हमें हमारे मुक्ति के अनुभव को बताता है। रोमियों सात, हमें उस संघर्ष के बारे में बताता है जो हम मसीह में जीवन बिताने के बाद सामना करते हैं। और रोमियों आठ हमें उन शांति और शक्ति के अनिभवों को बताता है, जिन का अनुभव हम उस समय करते हैं, जब हम यह जान लेते हैं की हम मर चुके हैं और हमारा जीवन परमेश्वर मसीह में सुरक्षित है।

रोमियों ६:४ में पौलुस मुक्ति के अनुभव को बताता है।

अतः उस मृत्यु का बप्तिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गये ताकी जैसे मसीह पिता की महीसा के द्वारा मरे हुआओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें। (रोमियों ६:४)।

अब जब हमने पानी का बप्तिस्मा ले लिया है, मैं मसीही जीवन को प्रारंभ करने के लिए तैयार हूँ। मैं जानता हूँ की मेरा पुराना जीवन उस के साथ क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है (६:६)। मैं अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ और मसीह यीशु में जीवित मानता हूँ (६:११), और मैं उसके अनुसार काम करता हूँ। अब मेरे पार्थिव शरीर में पाप की कोई जगह नहीं। यह आसान लगता है, हैना? उसे जानीये, विचारिए और उसके अनुसार कार्य करीए। यह काफी होगा। मैं खुश हूँ, ...केवल यह कौन सी लड़ाई है जो मैं अनुभव कर रहा हूँ?

क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता हूँ, वही किया करता हूँ। इस प्रकार मैं यह व्यवस्ता पाता हूँ की जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है, क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्ता से तो बहुत प्रसन्न रहता हूँ। परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्ता दिखाई पड़ती है। जो मेरे बुद्धि की व्यवस्ता से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्ता के बंधन में डालती है, जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा आभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ायेगा। (रोमियों ७:१९, २१-२४)

जानने, विचार करने और कार्य करने से भी कु अधिक इस में होना चाहिए। मैं लड़ाई अनुभव कर रहा हूँ। मैं उस नीच मनुष्य लक्षण को अनुभव कर रहा हूँ। कोई मदद करो। हां, कुछ और भी है।

क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्ता ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्ता से स्वतंत्र कर दिया। (रोमियों ८:२)।

एक और व्यवस्था को मैं भूल रहा हूँ (या उस के बारे में अभी सीखा नहीं है)। यह व्यवस्था मसीह यीशु में आत्मा का जीवन है। यह उत्तेजित लगता है। अब मैं, जानने, विचारने और कार्य करने के आगे जा रहा हूँ। अब मैं आत्मा के स्तर पर हूँ। मैं मसीह की आत्मा को छू रहा हूँ, जो मेरी आत्मा से मिल चुकी है, और उसके जीवन के बहाव को अनुभव कर रहा हूँ। मैं अपना ध्यान अपनी आत्मा के अंदर, आत्मा की शक्ति के बहाव पर लगा रहा हूँ (८:५,६), और अपने सारे शरीर में एक शक्ति के बहाव को अनुभव कर रहा हूँ (८:११)। जब परमेश्वर को अपने हृदय के अंदर अनुभव करता हूँ तो एक अपनापन का आभास होता है (८:१५, १६)। अब वह मुझे मेरे हृदय में से अगुवाई करता है। जब प्रार्थना करता हूँ, तो अपनी आत्मा में गहरे भावों को अनुभव करता हूँ, जो मुझे निर्देश देते हैं (८:२६)। मैं अपने विचार या शक्ति से कुछ नहीं करता। मैं अपने अंदर देखता हूँ और हमेशा उसकी शक्ति और जीवन को पाता हूँ, और उस से मैं अपना जीवन व्यतीत करता हूँ। परमेश्वर की महीमा हो।

उस ने मुझे मुझ से स्वतंत्र कर दिया है। स्वयं बुद्धि से परमेश्वर बुद्धि की ओर मुझे ले गया है।

कुलसीयों को दुबारा पढ़ना :

जब पहले मैं पौलुस की पुस्तक पढ़ता था तो, सीधे आधी पुस्तक छोड़ कर पिछले भाग को पढ़ने लगता, जहां वह सब लिखा रहता की मुझे कैसे जीना है, क्या करना है और क्या नहीं करना है। मेरे लिए वह उस पुस्तक का मटन था। और शुरू में तो मसीह बने रहने के लिए बहुत सी ऐसी बातें थीं जो मेरी समझ में नहीं आती थीं।

अब मेरी समझ में यह आया की पहला भाग न पढ़ कर मैं बुनयादी सच्चाई से दूर भाग रहा था। मैं उन्हें नहीं करता, परन्तु मसीह मुझ में रह कर करता है। उदहारण के लिए हम कुलसीयों की पुस्तक को देखते हैं। पहले तीन अध्यायों को पढ़ीए।

कुलसीयों एक से तीन अध्याय पर जो मेरे विचार हैं वे निम्न दिये गए हैं। जब सच्चाई अधिक निजी हो जाती है तो बातचीत बदलने लगती है।

पहले हम देखते हैं की पौलुस, जीवन की स्थाई सच्चाईयों को जो विश्वास, आशा और प्रेम है, उन्हें बार बार दोहराता है (कुल १:४,५; १ कुरि १३:१३)। यह इस बात के नापडण्ड हैं की मैं कितना मसीह में जी रहा हूँ। जब मैं उस की उपस्थिती में रहता हूँ, तो मैं, विश्वास, आशा और प्रेम से भर जाता हूँ। जब उस से दूर हो जाता हूँ यह सब भी मुझ में से दूर हो जाती हैं। अब हम १० आयत देखते हैं।

ताकी तुम्हारा चाल चलन प्रभु के योग्य हो और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे और तुम परमेश्वर की पहचान में बढते जाओ। (कुल १:१०)।

मैं कहता था की अब मेरे पास एक और आज्ञा है जिस का मुझे पालन करना है। मैं प्रभु के योग्य चलने की कोशिश कर सकता हूँ। क्या ज्ञान और सच्चा ज्ञान भी होता है? क्या यह कुछ ऐसे होगा जैसे सिर का ज्ञान और हृदय का ज्ञान या ज्ञान का वृक्ष या जीवन का वृक्ष? यह सब सोचने का मेरे पास समय नहीं है, मेरे पास अब एक आज्ञा है जिस को मैंने मानना है। मुझे प्रमेश्वर के योग्य चलना है। अब अगली आयत देखते हैं।

उसकी महीसा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहां तक की आन्नद के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको और पिता का धन्यवाद करते रहो जिस ने हमें इस योग्य बनाया की, ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मिरास में सहभागी हो। (कुल १: ११,१२).

शायद परमेश्वर की शक्ति है जो मुझे शक्ति देती है की मैं उसके योग्य बनूँ। वह है जो मुझे इस योग्य बनाता है।

उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ा कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। (कुल १: १३)।

मैंने इल पर कभी ध्यान नहीं दिया। यह सब परमेश्वर के कार्य के इर्द गिर्द होता है मेरे नहीं।

जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (कुल १: १४)।

यहाँ फिर, मेरी मुक्ति मेरे परिश्रम से नहीं परन्तु, परमेश्वर के परिश्रम से मिलती है। क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है की उस में सारी परिपूर्णता वास करे।

(कुल १ : १९)।

परमेश्वर ने पूर्णता अपने बेटे यीशु में डाली है। यीशु में सारे भ्रमाण्ड की शक्ति है।

उस ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकी तुम्हें, अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष बना कर उपस्थित करे। (कुल १: २२)।

मसीह के कार्य के कारण मैं परमेश्वर की दृष्टि में निष्कलंक ठहरा हूँ। इस का अर्थ यह है क्या की जो मैं करता हूँ वह निष्कलंक नहीं है? मेरी खुबसूरती मसीह के कार्य पर निर्भर है। मुझे मसीह के कार्य में शायद आराम करना चाहिए।

यदी तुम विश्वास की नीव पर दृढ़ बने रहो, और उस सूसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिस का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया और जिस का मैं पौलुस सेवक बना। (कुल १: २३)।

मुझे पता था की कहीं न कहीं, यदी, होना चाहिए। यह सच के लिए बहुत ही अच्छा है। यदी मैं धार्मिकता में चलूँ तो मैं निष्कलंक हूँ, सही? नहीं, तुम निष्कलंक उस वक्त हो जब तुम मसीह के पूर्ण कार्य पर अपने हृदय में विश्वास करते हो। विश्वास? हाँ? केवल विश्वास? विश्वास किस पर?

अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा की उन्हें ग्यात हो की अन्य जातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है। और वह यह है की मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। (कुल १: २६, २७)।

मुझे महान भेद पर विश्वास पर करना है। वह महान भेद क्या है? वह यह है की मसीह तुम में जीवित है और महिमा पाने की वही एक हमारी उम्मीद है। महिमा पाने के लिए मुझे अपनी ताकत पर नहीं परन्तु उसकी ताकत पर विश्वास करना है।

जिस का प्रचार कर के हम हर एकक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, की हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिध्द कर के उपस्ति्त करें। (कुल १:२८)।

उसके बारे में हम प्रचार करते हैं। मैं पहले स्वयं के बारे में प्रचार करता था, और मैं पवित्र रहना चाहता था, और मेरे परिश्रम थे, और मेरे दोष थे, और मेरी असफलताएँ थीं, और मेरे...। मैं हमेशा स्वयं के लिए प्रचार करता था और मुझे क्या करना चाहिए, परन्तु अब स्वयं जीवित नहीं है। इसके बदले हम ऐसे व्यक्ति के बारे में प्रचार करते हैं, जो विश्वासी के हृदय में जीवित है - यीशु। हमें तब तक प्रचार करना है जब तक हर कोई यह न जान जाए की वह मसीह में क्या है, और उसकी शक्ति को पहचाना है और जाना है। हमे यही प्रचार करना है।

इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगा कर परिश्रम भी करता हूँ। (कुल १: २९)।

"देखा, यीशु, मैं जानता था की पौलुस यही कहेगा की तुम परिश्रम करते हो। इस में अभी भी स्वयं परिश्रम है जिसे हमने इस गुत्ति को सुलझाने के लिए काम करवाना है।"

"हाँ, मार्क, परन्तु तुम पौलुस का बाकी का वक्तव छोड दिया है। वह कहता है, "मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।"

मैं समझता हूँ की पौलुस ने ऐसा ही कहा है, है न? इसका मतलब तुम अपनी ताकत से परिश्रम नहीं कर रहे?"

"हाँ, मार्क। तुम परिश्रम कर रहे हो पर उसकी मदद से जो तुम्हारे अंदर बह रहा है।" "ठीक है। और तुमने इस बहाव को कैसे पहचाना?"

"यह एक आत्मा का बहाव है। इसे शांति के रूप में अनुभव कर सकते हैं और ताकत जो तुम्हारे अंदर उभर रही है।"

"क्या तुम इस का अनुभव कर सकते हो?"

"हाँ। यह प्रेम, आनंद, शांति, सहनशीलता, विश्वास, आशा का अनुभव दिलाती है। यह आप के अंदर एक शक्तिशाली बहाव की तरह अनुभव होता है। यह भारीपन, शक, डर, को दूर करता है और अलौकिकता से धो देता है। जब भी तुम परमेश्वर को यह करने के लिए बुलाओगे, वह आकर इसे करेगा।"

यीशु, तुम क्या यह कह रहे हो की यह इतना आसान है।
हाँ।

परन्तु, क्या इस के लिए तुम को कुछ कार्य या परिश्रम नहीं करना पड़ता? हाँ, तुम्हें परिश्रम करके विश्राम में प्रवेश करना है। परन्तु, एक बार जब आराम करने लगो, और अपनी ताकत का प्रयोग नहीं करते हो तो तुम्हारी स्थिरता से बहाव उत्पन्न होता है। सच में आकर्षक।

मैं चाहता हूँ की तुम जान लो की तुम्हारे और उन के लिए जो लौदिकिया में है और उन सब के लिए जिन्होंने मेरा शारीरिक मूँह नहीं देखा, मैं कैसा परिश्रम करता हूँ ताकी उन के मनो में शांति हो और वे प्रेम से आपस में गटे रहें। और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें। और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह को पहचान लें, जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हों। (कुल २: १-३)।

देखा मार्क, कोई इसलिए लड़ता है की किसी और के मनो को प्रोत्साहन मिले। मैं सच में चाहता था की मैं मसीह प्रेम से लोगों को माँरूँ, ताकी वे पश्चताप करें। मार्क, मैं उन्हें प्रेम से बांधना चाहता हूँ और मसीह में एक्ता का अनिभव करवाना चाहता हूँ।

मसीह का बहाव जो उनके हृदय में बिना परिश्रम के बह रहा है, उस में वह सब है, जो उन के लिए आवश्यक है। यदी वे इस बहाव पर ध्यान लगाएंगे तो, वे अलौकिक बुद्धि और शक्ति को प्राप्त करेंगे।

मैं समझता हूँ की मुझे अपने उपदेशों में विश्वासी के हृदय में दैवी बहाव के बारे में बताना चाहिए।

यह ठीक है।

यध्यपी मैं शरीर के भाव में तुम से दूर हूँ, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता देख कर प्रसन्न होता हूँ। (कुल २:५)

मैं जानता हूँ, प्रभु की आप चाहते हैं की मैं अपने जीवन को दृढ़ बनाऊँ। मैं दृढ़ता पर उपदेश देने जा रहा हूँ।

मार्क, तुम ने फिर वक्तव्य का आधा भाग छोड़ दिया है। जो दृढ़ता यहा पर बताई गयी है वह विश्वास की जो मसीह में है, दृढ़ता देखकर प्रसन्न हूँ।
हाँ, ठीक है।

मार्क, मैं चाहता हूँ की तुम इस बात का प्रचार करो की मसीह की शक्ति में दृढ़ विश्वासी कैसे बन सकते हैं ताकी सारी परेशानीयों से हट कर, हर व्यक्ति के हृदय में उसके राज्य को स्थापित कर सकें।

यदी मैं हर समय विश्वास के बारे में प्रचार करता रहूँ, तो मैं भी स्वल्लर या अन्य विश्वास पर शिक्षा देने वाले अध्यापकों की तरह बन जाऊँगा।

पर अब विश्वास, आशा, प्रेम यह तीनों स्तायी हैं, पर इन में सबसे बडा प्रेम है।
(१ कुरिंति १३:१३)

हाँ, मैं समझता हूँ की हमने ऐसा ही किया था। आपका क्या मतलब है की मैं इन तीन विश्यों पर लगातार उपदेश देता रहूँ।
वे राज्य के हृदय हैं।

अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु कर के ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।
(कुल २: ६)।

मार्क तुम ने मसीह यीशु को कैसे स्वीकार किया?

मैंने सारी परेशानियों का सामना किया और इस के बाद..."

नहीं तुम ने कुछ नहीं किया। एक दूत था जो लगातार तुम्हारे कानों में फुस फुसाता रहा जब तक तुम ने इन को त्याग न दिया और मेरी शक्ति के तले आ गयो।

हाँ, यह सच के करीब है।

मार्क, तुमने मसीह यीशु को केवल विश्वास में ग्रहण किया है। वह विश्वास जो मैं तुम्हारे मनो में डालता हूँ और तुम उस विश्वास को बहने देते हो, केवल इस विश्वास के साथ कि मैंने यह किया है और तुम को केवल मेरे मुक्ति के अभिषिक्त कार्य को अपनाना है। मैं चाहता हूँ तुम इस विश्वास को आगे बढ़ाओ। अपने आप कुछ कार्य करने का प्रयत्न न करो। मैं अलफा और ओमेगा हूँ, प्रारम्भ और अंत, पहला और आखरी। यदी तुम्हें कुछ चाहिए तो अपने अंदर मुझे देखो, वह जो आपके हृदय और आत्मा में रहता है। वह जो मांगने पर उदारता से देता है। अपनी शक्ति पर भरोसा मत करो। आप अपनी शक्ति से मुक्ति नहीं पा सकते। आप अपनी ताकत पर निर्भर रह कर अपना जीवन सुरक्षित नहीं रख सकते। इस लिए मेरे पास आओ और मैं तुम्हें चंगा करूँगा और तुम्हें उच्च पहाड़ी पर स्थापित करूँगा, एक पहाड़ी, जिसे सिने प्रवत कहते हैं।

और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ, और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो। (कुल २: ७)।

देखा मार्क, तुम्हें कार्यों या स्वयं परिश्रम को नहीं स्थापित करना है। तुम्हें उस बहाव में स्थापित होना है जो मेरा विश्वास बन कर तुम्हारे अंदर उमड़ रहा है, जीवन के पानी की तरह और जो तुम्हें अंदर से बदल डालता है। तुम्हें इसी की आवश्यकता है। आओ, और मेरे बहाव में अपने आप को स्थापित करो।

हाँ, मेरे प्रभु, मैं आता हूँ।

तुम्हें केवल मेरी आराधना करनी है। मैं सर्वसव हूँ और सब में हूँ। मैं पहला और आखरी हूँ। मैं तुम्हारा जीवन और तुम्हारी साँस हूँ। इसलिए तुम्हें केवल धन्यवाद देते रहना है और परिश्रम और पसीना बहाने की आवश्यकता नहीं। क्या तुम इस बात को समझ रहे हो। हाँ, मेरे प्रभु।

चौकस रहो की कोई तुम्हें उस तब ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना आहरे न बना ले, जो मनुष्य की परम्पराओं और संसार की आदी शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसार नहीं। क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करती है। और तुम उसी में भर पूर हो गये हो, जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणी है। उसी में तुम्हारा ऐसा खत्ना हुआ है जो हाथ से नहीं होता अर्थात् मसीह का खत्ना जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है और उसी के साथ बप्तिस्म में गाढ़े गये और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके जिसने उस को मरे हुआ में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। (कुल २: ८ - १२)।

मार्क कई आएंगे जो तुम से यह कहेंगे की यह करो, वह करो। परन्तु धोखा मत खाना। मसीहत मुझ में है और केवल मुझ में। यह न्याय और सिध्दांत नहीं हैं। यह यंत्र कला या अध्यात्म विध्या नहीं। यह एक व्यक्ति है: मैं। वह मैं हूँ जो तुम्हें प्रेम कर रहा हूँ। तुम्हारे द्वारा सारे संसार को प्रेम करता हूँ। यही मसीहत है। कई लोग कुछ और कहेंगे। परन्तु यह कुछ और नहीं। मैं हूँ जो तुम्हें प्रेम करता हूँ। मैं हूँ जो उन्हें प्रेम करता हूँ। यही मसीहत है। धोखा मत खाना।

हाँ, मेरे प्रभु।

और तुम्हारे हृदय के विषय। यदी उसे सहासता की आवश्यकता है, तो मैं हूँ। यदी वहां से बुराई को हटाना है तो खत्ना करने के लिए मैं हूँ। कोई मनुष्य के मन को चंगा नहीं कर सकता। केवल मैं कर सकता हूँ। हृदय परमेश्वर का है। वह मेरा है, प्रभुओं के प्रभु के यही कहना है।

इसीलिए खाने पीने या पर्व या नये चाँद या जल के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे क्योंकि यह सब आने वाली बातों की छाया है। पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं। कोई मनुष्य आत्महीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करा के तुम्हें दौड के प्रतिफल से वनचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर आप फूलता है और

उस शिरोमणी को पकड़े नहीं रहता जिस से सारी देह जोड़ों और पट्टों के द्वारा पालन पोषण पा कर और एक साथ गट कर परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है। जब की तुम मसीह के साथ संसार की आदी शिक्षा की ओर से मर गये हो। तो फिर क्यों उन के समान जो संसार के हैं जीवन बिताते हो। तुम ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो की यह न छू न, उसे न चखना और उसे हाथ न लगाना। (यह सब वस्तुएँ काम में लाते लाते नष्ट हो जाती हैं) क्योंकि यह मनुष्य की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार है। इन विधियों में गढ़ी हुई भक्ति की रीती और आत्म हीनता और शारीरिक योग्य भयास के भव से ज्ञान के नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ लाभ नहीं होता। (कुल २: १६ - २३)।

मार्क, मैंने यह चेतावनी इस कारण लिखी है की मैं जानता हू की कई मसीहत का इस स्तर तक बहिष्कार करेंगे, चाहे यह वह नहीं है जो मैंने बनाया है। यह मनुष्य ने बनाया है। यह सच्ची मसीहत का प्रतिरूप है। यह नकली है। यह न्यायों और व्यवस्था से भरी हुई है, यह मत खाना, यह मत छूना। यह केवल ऊपरी तल है और मैं हृदय से मतलब रखता हूँ। हाँ, तल भी मुख्य है, परन्तु यह मन का कार्य का ऊपरी रूप है। यदी तल को ठीक करना है तो हृदय की आवश्यकता नहीं। हृदय को चंगा करने के लिए तल को भी चंगा करना पड़ता है। इसलिए हम तल की ओर ध्यान नहीं देते। इसलिए नहीं की यह मुख्य नहीं है। यह मुख्य है। यह उस वस्तु का जो और भी गहरी वस्तु है उसका सह भाग है - यानी मानव हृदय का। इसलिए मैं और तुम हृदय पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। हृदय को कैसे चंगा करें और मुक्त करें। मनुष्य के हृदय से मेरी शक्ति, क्योंकि ऐसा करने से हम सब कार्य कर सकेंगे। देखो, मैंने कह दिया है, अब इसे पूरा करूँगा। प्रभुओं का प्रभु यही कहता है।

पृथ्वि पर की नहीं परन्तु स्वर्गिय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ क्योंकि तुम तो मर गये और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब तुम भी उस के साथ महीसा सहित प्रगट किये जाओगे। (कुल ३: २ - ४)।

अब, मार्क, हम अपना दिमाग उन वस्तुओं पर लगाते हैं जो ऊपरी हैं, यानी आत्मिक वस्तुओं पर। हम पहले की बातों पर ध्यान नहीं देंगे। हम आत्मिक ताकतों पर और सिधांतों पर और दूतों और शैतानों पर और विश्वास से मेरे राज्य की उन्नति पर ध्यान लगाएँगे। इन्हीं बातों को हम पढ़ेंगे। इन्हीं पर हम विवाद करेंगे। इसी पर हम उपदेश देंगे। यही हम पढ़ाएँगे। ऐसा करने से हम लोगों के मनो को चंगा करेंगे। ऐसा करने से हम सेसार के राज्यों को चंगा करेंगे। क्या यह सब मेरे हाथों में नहीं है? हाँ, मेरे बेटे, यह है। इसलिए हम उन को चंगा करेंगे, क्योंकि हम अपना दिमाग आत्मिक वस्तुओं पर लगाएँगे। मार्क, मेरी आत्मा पर उपदेश दो और मेरी आत्मा के बारे में सिखाओ। यह तुम्हारा काम है। यह तुम्हारी जीवन रेखा है। मेरी आत्मा से हट कर कोई जीवन नहीं। मेरी आत्मा के पास आओ मेरे हेटे, और तुम बदल जाओगे। आओ और मैं कहता हूँ आओ।

अब यदी आप कुलसीयों के बाकी के भागों को देखोगे तो तुम्हें वहाँ के न्याय एकदम फरक दिखेंगे। अब यह वह न्याय नहीं रहे जिन्हें आप अपनी शक्ति से मानते हैं। अब वे आज्ञाएँ बन गयी हैं और मैं उन्हें अपनी सामर्थ्य से मानता हूँ, क्योंकि मैं अपना जीवन तेरे द्वारा जी रहा हूँ। अब वे मेरे आदेश हैं जिन्हें मेरी शक्ति के द्वारा मगना जाता है। तुम केवल वह हो, जिस में कोई और बह रहा है। परन्तु तुम सामान्य नहीं हो। मैंने तुम्हें पंचिला कर दिया है। और मैंने तुम्हें खास बना दिया है। तुम्हारे जैसा कोई नहीं। मेरे हर बच्चे को मैंने विशेष रूप में अपने हाथों से ढाला है। इसलिए, तुम में से हर एक मेरे लिए खास है। हर एक जन मेरा है। जा, मेरे बेटे, शांति से जा।"

हाँ, मेरे प्रभु।

अध्याय बारह के कुछ विशेष विचार :

- नये नियम की मसीहत का केंद्र प्रभु यीशु मसीह में बढता अपनापन है।
- जब नये नियम मसीहत का केंद्र समझ में आ जाता है, तो पूरा नया नियम एक नया अर्थ लगता है।
- नये नियम की आज्ञाओं को मसीह में हमारे जीवन के मध्यनजर देखना है।
- मसीह इन आज्ञाओं को हमारे द्वारा पूरा करता है। हम उन्हें नहीं पूरा कर रहे। हम उन्हें नहीं पूरा कर सकते क्योंकि वे अलौकिक हैं और हम हमारे शारीरिक रूप में सामान्य हैं।
- जब हम नया नियम पढ़ें तो हमें चाहिए की हम परमेश्वर को बात करने दें। हमें आत्मिक दैवी प्रकाशण के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, ताकी हमारी मन की आँखें उज्ज्वलित हों... ताकी हम जान सकें (इफि १:१७, १८)।
- इस अध्याय में यदी कुछ और विचार प को मुख्य लगते हैं, तो उन्हें लिख लीजीए।

विचार करें और विवाद करें :

- उपर्युक्त बाईबल की पढ़ाई के उद्धारण के बारे में आप की क्या राय है? यदी आप ने ध्यान दिया है, तो हम ने गध्य से प्रारम्भ किया था। उसके बाद हम परमेश्वर से जो की इस गध्य का उत्पादक हो, उसके साथ बात चीत करने लगते हैं। क्या यही बाईबल का अध्यन है (इफि १:१७, १८)? क्या आपने ऐसा कभी अपने बाईबल अध्यन के वक्त किया है? क्यों न इस का प्रारम्भ नीचे दिये गये वचनों से करें?
- नये नियम के कुछ और वचनों को पढ कर देखीए की इस पुस्तक की सच्चाईयों के तैहत क्या यह बिलकुल नयी नहीं लगती है। गलतीयों ३, ४, ५; इफिसियों १-५; फिलिप्पियों १-४, पढ कर देखीए। ध्यान लगाने का जो तरीका इस पुस्तक में बताया गया है और उपर पहले क्रम में बताया गया है, उसे अपना कर देखीए। देखीए की यह अनुभव आपके लिए कैसा होता है। आप एक या दो स्पताह का समय अधिक ले सकते हैं, ताकी आप के समूह का पह व्यक्ति अपने घर जा कर ऊपर बताए गये अनुसार इस अध्याय का अध्यन पवित्रशास्त्र के मध्य नजर कर सकता है। फिर वापस आ कर जो परमेश्वर ने आप लोगों को बताया है, उसे सब के साथ बांटीए।
- बाईबल के वचन का अध्यन एक समह के साथ करें, परमेश्वर को उस वचन के बारे में बात करने दें। आप कोई भी वचन सुन सकते हैं। एक तरीका यह हो सकता है की आप उन शिष्यों के साथ जुड जाईए, जो पेंटीकोस्ट के दिन ऊपर के कमरे में रुके हुए थे। एक समूह के रूप में आप शायद उस ऐतिहासिक कहानी को दुबारा पढना चाहेंगे (प्रेरितों १: ४ - १३; प्रेरितों १: २१ - २: ४)। फिर एक घेरे में बैठ जाईए, हाथ जोड लीजीए और एक साथ कहानी को पढीए और हर व्यक्ति अपना अनुभव को बाटे, जो वे अपने मन में मसीह को मिलने पर अनुभव कर रहे हैं। हर व्यक्ति अपना अनुभव बताने के लिए एक या दो मिन्ट ले और अपने दाहिने बैठे व्यक्ति का हाथ हलके से दबाए, ताकी उस व्यक्ति के लिए, शुरू करने का इशारा है। आप जो अनुभव कर रहें है उसे बताभए, चाहे वह परमेश्वर के साथ आपका वारतालाप हो या दृष्य हों या आप का डर हो या विश्वास या आशा।
- **पत्राचार** - "प्रभु, मुझे बताईए की बाईबल का अध्यन कैसे किया जाए। जो मैं करता आ रहा हूँ क्या वह सही है? क्या और कोई तरीका है जिस से यह और भी तीवन हो सकता है? यदी हां, तो कैसे? आपने जो कहा, उस के लिए धन्यवाद हो।"

इन प्रश्नों के ऊत्तर में जो प्रभु ने आप को बताया है, उसे लिख लीजीए। इसे कक्षा में बांटने के लिए तैयार हो कर आईए।

13. एक नवीन अध्यात्मविध्या सम्बंधि डिब्बा या दैवी मुकाबले का अनुभव?

आखिरकार मैंने कहानी का यह भाग खत्म हुआ। हम ने सात सचों को पहचाना है।

सच # १ - परमेश्वर सर्वस्व है और सब में है

सच # २ - मैं एक बर्तन हूँ

सच # ३ - अब मैं जीवित नहीं हूँ

सच # ४ - मसीह मेरा जीवन है

सच # ५ - मैं न्याय के लिए समर्पित हूँ

सच # ६ - मैं आत्मा के द्वारा जीवित हूँ

सच # ७ - मैं इस विश्वास में जीवित हूँ की परमेश्वर इमानुएल है।

शायद हमें इन सचों के पास एक अध्यात्म विध्या बनानी चाहिए। मरी पुरानी अध्यात्म विध्या को मैं कीड़े की अध्यात्म विध्या कहता हूँ। आप को यह पता है की मनुष्य एक कीड़ा है। और मैं इसकी पूरती पवित्रशास्त्र से उदहारण दे कर करूंगा: "ऐ कीड़े याकूब।" हमें इस नयी अध्यात्म विध्या को संघ जीवन या बदला हुआ जीवन कह सकते हैं। आप क्या समझते हैं?

क्या मैं सच में एक नयी अध्यात्म विध्या बनाना चाहता हूँ? जीवन अध्यात्म विध्या से भरा हुए नहीं है। शायद यह एक नदी है, एक धारा है, एक बहाव है। मुझे शायद इन सचों को ठोस रूप में किसी अध्यात्म विध्या से नहीं बांदना चाहिए। जो हमारे पास यहां है, वह पवित्रात्मा में एक नया अनुभव है (या शायद एक गहराया हुआ अनुभव)।

और जो प्रभु की संगती में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।
(१ कुरिंथियों ६: १७)।

इसलिए यह कहने के बजाए की हमारे पास एक नयी अध्यात्म विध्या है, हम यह कहेंगे की हम ने परमेश्वर के साथ मुकाबला करना सीख लिया है। और हम अधिक गहरे रूप में उसके साथ रहते हैं। यह ठीक है, है न ?

इस पुस्तक को समाप्त करने के लिए और इस बात पर दबाव डालने के लिए की यह एक नयी अध्यात्म विध्या नहीं है, परन्तु एक गहरा रिश्ता है, मैं समझता हूँ की मैं तुम्हारे सामने अपने पत्राचार के कुछ अंश रखूँगा। यह केवल इन सचों पर नहीं है, क्योंकि जब परमेश्वर और मैं बैठ कर बातें करते हैं, तो हम कई बातों के बारे में बात करते हैं। जीवन हमेशा इन सात सचों के डिब्बे में नहीं रहती। जीवन बस है। तो मेरे दैवी मुकाबलों को आप के साथ बांटने दो।

१०-३०-८९

शुभ दिवस यीशु। आज आप मुझ से क्या बात करना चाहेंगे?

मार्क, मैं चाहूँगा की जीवन के इस समय में प्रति दिन तुम मेरे पास आओ। कितना बदलाव है। कितना कुछ हो रहा है की मैं चाहूँगा की तुम हर दिन मेरे पास आ कर नया वचन सुनो ताकी तुम बचे रहो और पटरी पर टिके रहो।

ठीक है प्रभु, ऐसा करने के लिए मुझे आप का अनुग्रह चाहिए।

अब, आज के विषय। जब तुम दौड़ने गये थे, तो तुमने मुझे सुना। मैंने यह समय तुम्हें दिया है की तुम अपना कार्यालय खोलो और अपनी पुस्तकों को लिखो और छपवाओ। फिक्र मत कर। मैं दूँगा। अब वह समय है की इन कार्यों को पूरा किया जाए। तराजू में अभी बहुत कुछ बाकी है। सुस्त न बनो, परन्तु जान लो की परमेश्वर की इच्छा क्या है और उसे पूरा करो। बाकी सब अपनी जगह पर ठीक हो जाएगा। परमेश्वर की मुक्ति को देखो।

और क्या?

मार्क अपनी पत्नि से प्रेम कर.... अपनी पत्नि और बच्चों से प्रेम कर। धन्यवाद हो प्रभु।

११-१-८९

मैं एक सवण देख कर उठा:

मैं पहाड़ी स्थान में दौड़ रहा था। तेज हवा चल रही थी, जिस कारण मैं हवा में उड़ रहा था। फिर हवा बंद हो गयी। रास्ता सकरा हो गया। मैं घुटनों के बल चलने लगा। फिर मैं डरने लगा। मैं रुक गया और भयभीत हो गया। कोई मेरे पीछे आया, कूद कर पहाड़ी के टुकड़े को पकड़ कर मेरे ऊपर से हो कर कूद गया और कुछ सूखी घास को गिरा गया। फिर वह कूद गया। वह इतनी गहराई में कूदा की उस का बचना मुश्किल था। वह आराम से नीचे गया और फिर उच्चक के ऊपर आया और मुझे भी उत्तेजित किया की मैं भी ऐसा ही करूँ। मैं डर के मारे रेंगने लगा और पीछे हटने लगा। उसने मेरे नीचे की घास को खींच दिया और मैं मैं नीचे की ओर लुडकने लगा। मरा मन डर से भर गया। और फिर मैं आराम से नीचे गिरा, बिना मुझे कहीं चोट लगाए हुए। मैंने कर लिया।

पत्रचार का अर्थ:

मार्क डर के मारे तुम एक ही स्थान पर रुक गयो थे। डर को डाँट और अनजान की ओर लपक पड़। मैं तुम्हे सम्भाल लूँगा। मैं तुम्हारे गया था की तुम्हारे लिए रास्ता बनाऊँ। हाँ, प्रभु। क्या कोई विश्व कार्य मुझे करना है?

हां, अपनी पत्नि और बच्चों से प्रेम कर। उन्हें तुम्हारे दिमाग और हृदय की आवश्यकता है।

११-२५-८९

प्रभु, आर्थिक व्यवस्था के क्या?

मार्क, क्या मैंने अब तक तुम्हारा ध्यान नहीं रखा? क्या मैं तुम्हारा ध्यान नहीं रख सकता? तुम क्यों फिकर करते हो? जब मैं आकाश के पंछियों का ध्यान रख सकता हूँ, तो क्या मैं तुम्हारा ध्यान नहीं रखूँगा?

प्रभु, आज तक मैंने जो भी किया वह सब बेकार था।

तुम सही हो मेरे बेटे, क्योंकि तुम डर के साथ काम कर रहे हो। क्या तुम यह नहीं जानते की मनुष्य के रास्ते परमेश्वर के रास्ते नहीं हैं? अपनी योजना मत बना मेरे लिए इंतजार कर। कल के विषय उत्सुक मत हो, क्योंकि कल अपने साथ अपनी परेशानी ले कर आएगा। हर दिन अपनी स्वयं की परेशानी ले कर आता है। आज की आवश्यकताओं पर ध्यान दो। आज के बुलावे पर ध्यान दो।

ठीक है, प्रभु, आज के लिए क्या पुकार है?

अपनी पुस्तक को समाप्त कर। सफलता पाओ। अपने कार्यालय को स्थापित कर। यही आज का कार्य है। अपने परिवार से प्यार कर और इतना कष्ट उठाना छोड़। क्या तुम्हारा मेहनत उठाना कुछ काम में आया है? नहीं, कुछ भी नहीं। मैं फिर कहता हूँ की कुछ भी नहीं। रुक कर प्रभु की मुक्ति को देख। मैं कहता हूँ की रुको और परमेश्वर की मुक्ति को देखो।

११-११-८९

शुभ दिवस, यीसु। मुझे कुछ नहीं पता की आज के लिए आपने क्या मुख्य कार्य सोच रखा है। बताईए की मुझे क्या करना है।

यब से मुख्य काम यह है की तुम अपने परिवार के लिए एक क्रिसमस ट्री लाओ और उसे उन की मदद से सजाओ। यह पैटी के लिए बहुत मुख्य है। इसलिए, यह तुम्हारे लिए भी मुख्य है। यह एक महन पारिवारिक कार्य है। इसे मुख्य बनाईए।
हाँ, प्रभु।

१२-१२-८९

शुभ दिवस, प्रभु। कृप्या मेरे और पैटी के ऊपर नये जीवन की साँस फूँकीए। हमें आज आपकी चंगाई की शक्ति चाहिए।

हाँ, मार्क। मुझे पता है। अब क्योंकि तुम ने मांगा है, मैं तुम्हें दूँगा।

प्रभु, हमारे जीवन उन लोघों और वस्तुओं को लाईए जिन की योजना आपने बनाई है। मैं लाऊँगा, मेरे बेटे। परमेश्वर की मुक्ति को देखना।

प्रभु, क्या जीवन भर के कार्यों के बारे में अभी तैयारी करना असामयिक होगा? नहीं मेरे बेटे, तुम प्रारम्भ कर सकते हो।

१२-७-८९

मार्क, मुझ से पूछे बिना तुम इन रास्तों पर क्यों दौड़ पड़ते हो? क्या तुम इसे पहत्वपूर्ण निर्णय नहीं समझते हो? क्या इस विषय में तुम मेरी राय सुनना नहीं चाहते?

हां, प्रभु, मैं समझता हूँ की तुम सही हो। आप मुझ से क्या कहना चाहते हैं?

सब से पहले तो सह मेरा विचार नहीं है। यह विचार तुम्हें आया पर मेरी ओर से नहीं। इसलिए, इस से तुम्हें कुछ लाभ नहीं होगा। मैं तुम्हारा सोत्र रहूँगा। मैं तुम्हें दूँगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अलौकिक पिरीप्ति के लिए, अपने शारीरिक हाथ पर भरोसा मत कर। परमेश्वर स्वयं तुम्हारी आवश्यकता को पूरा करेगा। परमेश्वर ही है जो महिमा पाएगा।

क्या तुम्हें यह पता नहीं की तुम और हम, दोनो मिलकर एक कहानी बना रहे हैं। यह एक मुख्य कहानी है जो स्थापित हो रही है। इसलिए मैं इस पर दृष्टि लगाए हुए हूँ। मैं इसे पटरी से नहीं उतरने दूँगा। आज तुम इस की कीर्ति ले लेना, परन्तु मैं यह नहीं चाहता। मैं तुम्हारा देने वाला बनना चाहता हूँ। रूको और परमेश्वर की मुक्ति को देखो। तुम्हें अपने परिवार या रहन सहन को आपत्ति में डालने की आवश्यकता नहीं। मैं अलौकिक रूप में तुम्हें दूँगा। तुम्हें इस संय इस उधार के पीछे जाने की आवश्यकता वहीं।

ठीक है, प्रभु.

केवल वही कार्य करो जो मैंने तुम्हारे सामने रखा है।
ठीक है, प्रभु।

२-२०-९०

मार्क, आज कुछ मुख्य निर्णय लिए जाने हैं, जो तुम्हारे जीवन के भविष्य पर महत्वपूर्ण रीती से असर करेंगे। आज का दिन प्रार्थना और आराधना का है। आज के दिन तुम मेरे लिए होंठों के फल के रूप में बलीदान करोगे। यह लिखने का दिन नहीं है। आज पढ़ाई का दिन नहीं है। आज प्रार्थना का दिन है, ताकी मैं लोगों के मनों में पहाड़ों को हिला सकूँ, ताकी मैं महान और अधभुत कार्यों को कर सकूँ। आज का दिन प्रार्थना का है, ...के लिए और के लिए। इन सब को तुम्हारी प्रार्थना की आवश्यकता है। आज का दिन मेरे सम्मुख प्रार्थना और उपवास का है। आज मेरे मुख को महान रूप में देखो, मेरे बेटे, और देखो की मैं तुम्हारे बदले में कितने चमत्कारी कार्य करता हूँ।

वही करो जो आवश्यक हो। बाकी सब किसी और दिन के लिए छोड़ दो। परमेश्वर की मुक्ति को रूक कर देखो।

हां, प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ की आप मुझे ताकत दो और रास्ता दिखाओ। मैं दूंगा मेरे बेटे, मेरे पास आओ, मैं दूंगा।

२-३०-९०

मार्क, तुम्हें यह बात साफ हो जानी चाहिए की शैतान तुम पर हमला कर रहा है। उसका मुकाबला करो और वह तुम से दूर भागेगा। मुझ में स्थिर रहो और मैं तुम्हें सम्भाले रहूँगा।

मुझे ताकत दो, मेरे प्रभु।

मार्क, आज मैं तुम्हारी मदद करूँगा। आज का दिन लिखने और कार्य करने के लिए, अभिषिक्त किया गया है। उस में और मुझ में आब्रदित हो। कार्य करने जाओ। कई कार्य हैं जो आज हम लोग करेंगे।

जीवन चलते रहता है। हर दिन परमेश्वर के साथ साहसिक कार्य का दिन है। हर दिन विश्वास का दिन है जब मैं अनजान रास्तों पर चलता हूँ, अपने हृदय के बहा पर विश्वास रख कर। हां, यह जीवन संकट भरा है। हां, मैं कभी कभी गलतूयां भी करता हूँ। परन्तु, अब तक जो मैंने पहचाना है, उन सब में सह सब से अच्छा तरीका है जीवन बिताने का। मैं यही कह सकता हूँ की, बाईबल के भविष्यवक्ता भी इसी रीती से जीवन बिताते थे। यही तरीका है,

परमेश्वर की दैवी शक्ति को अपने मनों के द्वारा बाहर निकालने का। मैं चाहता हूँ की आप भी ऐसा ही करें। यदी आप गिर जाते हैं, तो मैं चाहता हूँ की आप भी वही करें जो मैं करता हूँ। वापस उठीए और कहीए, "परमेश्वर, क्या हम दुबारा कोशिश करें?" यदी हम एक दो पीडी तक परमेश्वर के साथ ऐसे ही चलें तो हम परमेश्वर की चाल में परीपूर्ण हो जाएंगे। इस बीच हमें यह पहचानना है की हम कहाँ हैं और वहीं से शुरू करना चाहिए। मुझे और कोई रास्ता नहीं पता।

स्वभाव से अलौकिक के रास्ते पर चलते समय, परमेश्वर की विशेष आशीश तुम पर हो।

अध्याय तेरह के मुख्य विचार

- इस पुस्तक का यह मकसद नहीं की एक नयी अध्यात्म विध्या स्थापित करे।
- जीवन को अध्यात्म विध्या नहीं बनाना है परन्तु, एक सामान्य जीवन।
- इस पुस्तक का यह मकसद है की हम परमेश्वर के साथ एक गहरा अनुभव कर सके, एक नयी अध्यात्म विध्या नहीं।
- हमें अपने जीवन को परमेश्वर में आगे बढते देना है।
- मेरे लिए, जो भी मैंने कहा है वह मेरे पत्राचार और दैवी सुकाबले का नतीजा है। मेरे लिए यही जीवन है। इस किताब की सच्चाईयों को मैं इसी तरह जीता हूँ। मैं यही चाहता हूँ की आप भी अपना जीवन इस पुस्तक की सच्चाईयों के प्रकार से जीए।

विचार करीए और विवाद करीए :

- हम नये भीतरी दृष्ट्यों को नयी अध्यात्म विध्या में क्यों बदला चाहते हैं? क्या यह बुद्धिमानी है? क्या यह आवश्यक है? परमेश्वर के साथ अनुभव को नयी अध्यात्म विध्या में बदलने में क्या कोई हानी है? यदी हाँ, तो वह हानी क्या है?

- अध्यात्म विध्या सिर पर केंद्रित है या हृदय पर? क्या यह अध्यात्म विध्या जीवन है या जीवन के ऊपर? क्या मसीहों को अपने जीवन में परमेश्वर के अनुभव पर ध्यान केंद्रित करना होगा या परमेश्वर पर कोई अध्यात्म विध्या पर? मसीह होने के नाते आप ने अपनी सारी शक्ति को कहां पर खर्च किया है?
- अध्यात्म विध्या कलीसीया को जोड़ता है या तोड़ता है? क्या हम किसी वस्तु की परिक्षा उसके फल से कर सकते हैं? यदी अध्यात्म विध्या कलीसीया को तोड़ती है, तो क्या हम यह कह सकते हैं की दबाव डालना बुरा है? या यह कहना सही होगा की मेरे पास सही अध्यात्म विध्या है और बाकी २३०० मसीही समस्याएँ गलत हैं? आप क्या समझते हैं?
- क्या यीशु ने अध्यात्म विध्या पर दबाव डाला था या उन्होंने परमेश्वर की शक्ति को जीवन के अनुभव के साथ जोड़ा था? क्या वे अध्यात्म विध्या को अपने वचन से हटा देना चाहते थे, "लेकिन मैं तुम से कहता हूँ...."? मसीह की ओर लोगों को क्या आकर्षित करता था?
- **पत्राचार** - अपने पत्राचार के पन्ने के उपर निम्न प्रश्नों को लिख लीजिए, "प्रभु, क्या इस पुस्तक के सच के बारे में आप मुझ से बात करेंगे, और वे अध्यात्म विध्या से यह कैसे जुड़े हुए हैं? क्या अध्यात्म विध्या का कोई मूल्य है? यदी हाँ, तो वह क्या है? क्या अध्यात्म विध्या में खतरा है? यदी हाँ, तो वह क्या है?" जो जवाब वह बता रहा है, उसे लिख लीजिए। अपने छोटे समूह के साथ बांटने के लिए, तैयार हो कर आईए।

परिशिष्ट अ

आप परमेश्वर की आवाज सुन सकते हैं

यह युग, ज्ञान और हेतूवादी, विश्लेषण सम्बंधी विचारों से इतने जुड़ गये हैं की, यदी हम उन से कहें की हम परमेश्वर की आवाज सुन सकते हैं, तो वे हमारी हंसी उड़ाते हैं। परन्तु, हमें कई कारणवश हंसी नहीं उड़ानी चाहिए। पहला, सारी बाईबल में हम देखते हैं की आदमीयों और औरतों ने परमेश्वर की आवाज को सुना है। यह भी की आज के युग में भी कई जाने माने आदमी व औरतें हैं जो परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं। अंत में, हम सब के अंदर परमेश्वर के साथ बात चीत करने और उस की आवाज को सुन ने की एक भीख है।

एक बाईबल विश्वासी, पुणर जन्म प्राप्त मसीह होने के नाते मैं परमेश्वर की आवाज सुनने के लिए, कई वर्षों तक संघर्ष करता रहा। मैंने प्रार्थना करी, उपवास रखा, बाईबल पढी और भीतर एक आवाज को सुनने की कोशिश करने लगा, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। एक भीतरी आवाज थी जो मैं सुन सकता था। फिर परमेश्वर ने मुझे एर वर्ष के लिए अलग कर दिया की मैं परमेश्वर की आवाज सुनने के क्षेत्र मैं पढाई और अनुभव करूँ। इस समय परमेश्वर ने मुझे चार चाबियाँ दीं, ताकी मैं प्रार्थना का दो तरफा रास्ता खोल सकूँ। मैंने यह बात पहचानी की यह न सिर्फ मेरे लिए, परन्तु हर मसीह जो उन का प्रयोग करता है, ये उनके काम आती हैं। ९९ प्रतिशत लोग, जिन्हें मैंने इन का प्रयोग करना बताया है, वे परमेश्वर के साथ दो तरफा रास्ता स्थापित कर पाए हैं, जिस के कारण उन के मसीही जीवन में अधिक नजदीकी आई और उन के जीवन बदल गए। यही आप के साथ भी हो सकता है, यदी आप परमेश्वर को खोजते हैं, इन चार चाबीयों की मदद से। ये सब हबक्कूक २: १,२ में मिलती हैं। मैं चाहता हूँ की आगे बडने से पहले आप इस वचन को पढलें।

चाबी # १ :-

परमेश्वर की आवाज हमारे हृदयों में स्वैच्छिक विचारों की तरह लगती है। इसलिए जब मैं परमेश्वर की ओर ध्यान लगाता हूँ, तो मैं स्वैच्छिता की ओर ध्यान लगा रहा हूँ।

बाईबल कहती है, "परमेश्वर ने मुझे जवाब दिया और कहा..." (हबक २:२)। हबक्कूक परमेश्वर की आवाज को पहचानता था। बाईबल उसे हलकी स्थिर आवाज बताती है। मैंने हमेशा भीतरी सुनाई पडने वाली आवाज को सुनने की कोशिश करी है, और कई बार परमेश्वर इस तरह बात करता है। परन्तु मैंने यह पाया है की, हम में से अधिकतर लोगों के लिए, अधिकतर समय, परमेश्वर की आवाज स्वैच्छिक विचार, दर्शन, अहसास या प्रभाव के

रूप में आती है। उदहारण के लिए, क्या हम में से किसी को रास्ते पर जाते समय अचानक यह खयाल आया की वह किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करे? यह परमेश्वर की आवाज है जो हमें उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को कह रही है। मेरा प्रश्न यह है, "गाड़ी चलाते में आप को परमेश्वर की आवाज किस रूप में मिली? क्या वह भीतरी, सुनाई देने वाली आवाज थी या वह कोई स्वैच्छिक विचार था जो तुम्हारे दिमाग को जाग्रित कर के चला गया? कई लोग यही कहेंगे की परमेश्वर की आवाज उन्हें स्वैच्छिक विचार के रूप में मिली।

तो मैंने सोचा, "शायद जब मैं परमेश्वर की आवाज को सुनना चाहता हूँ, तो मुझे स्वैच्छिक विचार के बहाव की ओर ध्यान देना चाहिए। शायद जो आत्मा के स्तर की बात चीत है वह स्वैच्छिक, प्रभाव, अहसास और दर्शन के रूप में प्राप्त होती है।" कई प्रयोत्नों के बाद और हजारों के लोगों की बात चीत से यह पता चला की ऐसा ही होता है।

बाईबल भी इस बात की पूर्ती कई प्रकार से करती है। इब्रानी शब्द पागा का प्रयोग आपस में बात चीत के लिए प्रयोग किया गया है, यह अचानक मुकाबला है या अचानक मुलाकात। इसलिए, यदी परमेश्वर हमारे मनो में लोगों को लाता है ताकी हम उन के लिए प्रार्थना कर सकें, तो वह पागा के माध्यम से यह करता है, एक अचानक विचार जो हमारे विचार धारा के बीच में आ जाता है। इसलिए जब मैं परमेश्वर की ओर ध्यान लगाता हूँ, तो मैं अचानक मुकाबले की ओर या स्वैच्छिक विचार की ओर ध्यान लगाता हूँ। जब मैं परमेश्वर के सामने प्रार्थना में ध्यान लगाता हूँ, तो मैंने पाया है की जो स्वैच्छिक विचार मैं पाता हूँ, वह यकीनन परमेश्वर की ओर से है।

चाबी # २ :-

मुझे अपने विचारों और भावों को शांत करना सीखना है, ताकी मैं परमेश्वर के विचारों और भावों को पहचान सकूँ।

हबक्कूक ने कहा, "मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और गुम्मत पर चढकर ठहरा रहूँगा..." (हब २:१)। हबक्कीक को यह पता था की परमेश्वर की शांत, भीतरी, स्वैच्छिक विचारों, को सुन ने के लिएउसे पहले शांत जगाह पर जाना होगा और अपने विचारों और भावों को शांत करना होगा। भजन संहिता ४६:१० प्रोत्साहित करती है की हम, "चुप हो जाओ, और जान लो की मैं ही परमेश्वर हूँ।" हम में से हर एक की आत्मा में एक भीतरी स्वैच्छिक बहाव है जिस का अनुभव हम तब कर सकते हैं, जब अपने शरीर और दिमाग को शांत करेंगे।

मैंने अपने आप को शांत करने के कई रास्ते खोज निकाले हैं, ताकी मैं परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव को पहचान सकूँ। आराधना के गीत से परमेश्वर को प्रेम करना एक महत्वपूर्ण तरीका है। जब मैं शांत हो जाता हूँ (विचारों, इच्छा और भावनाओं में) और परमेश्वर के सामने उपस्थित रहता हूँ, तब दैवी बहाव प्राप्त होता है। जब कोई विचार आते हैं, जिन्हें मैं भूल चुका हूँ, तो मैं उन्हें लिख लेता हूँ। यदी दोष या हीन भावना के विचार आते हैं तो, मैं पश्चताप करता हूँ, मेमने के लहू से धुलता हूँ और उसकी धार्मिकता का चोगा पहनता हूँ, तो मैं परमेश्वर के सामने अपने आप को बेदाग पाता हूँ।

जब मैं अपनी दृष्टि यीशु पर लगाता हूँ, उसकी उपस्थिती में शांत हो जाता हूँ और उस से अपने मन की बातें बाँटता हूँ, तो दो तरफा बात चीत शुरू हो जाती है। परमेश्वर के सिंहासन से स्वैच्छिक विचार सीधे मेरी ओर बह कर आता है और मैं राजाओं के राजा के साथ बात चीत करते हुए पाता हूँ।

यदी आप को परमेश्वर के शुद्ध वचन पाना है तो यह मुख्य होगा की तुम अपने आप को शांत करो और सही ध्यान लगाओ। यदी आप शांत नहीं हैं, तो आप अपने खुद के विचार प्राप्त करेंगे। यदी आप अपना ध्यान यीशु पर नहीं लगाएँगे तो आप को अशुद्ध विचार प्राप्त होंगे। शुद्ध बहाव पाने के लिए आप को पहले शांत होना होगा और दूसरी बात अपनी दृष्टि को यीशु पर लगाना होगा।

चाबी # ३ :-

जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तो मैं अपनी दृष्टि यीशु पर लगाता हूँ, आत्मा में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वपन और दर्शन देखता हूँ।

हम इस सिद्धांत को पिछले परिच्छेद में बता चुके हैं, परन्तु हमें इसे और आगे बडाना है। हबक्कूक ने कहा, "मैं ठहर कर देखता रहूँगा," और परमेश्वर ने कहा, "दर्शन को लिख ले" (हब २:१,२)। यह बात जान कर अचम्बा होता है की, प्रार्थना करते समय हबक्कूक दर्शन की तलाश में था। वह अपने हृदय की आँखों को खोलने जा रहा था, और आत्मा की दुनिया में देखने वाला था की परमेश्वर क्या बताना चाहता है।

मैंने यह कभी नहीं सोचा की अपने मन की आँखें खोल कर दर्शन देखूँ। जितना मैं इस के बारे में सोचता था उतना मैं जनते गया की परमेश्वर यही चाहता है। उसने मुझे मन में आँखें दी हैं। उन का प्रयोग न तो व्यभीचार के लिए और ना ही असफलता को देखने के लिए करना चाहिए। उन का प्रयोग आत्मिक दुनिया में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की हरकतों को देखने के लिए करना चाहिए। मैं विश्वास करता हूँ की मेरे चारों ओर आत्मिक दुनिया की हल चल है। यह दुनिया दूतों, शैतानों, पवित्रात्मा, विश्वव्यापी परमेश्वर और उसका विश्वव्यापी पुत्र यीशु से भरी हुई है। कोई कारण नहीं है की मैं इसे न देखूँ।

देखने के लिए सब से मुख्य पूर्वकांक्षित यह है की हमें देखना है। दानियल अपने दिमाग में दर्शन देख रहा था और उस ने कहा, "मैं देख रहा था ... मैं देखते रहा... मैं देखते रहा" (दानि ७: १, ९, १३)। जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो मैं यीशु को देखता हूँ जो मेरे साथ उपस्थित है, और मैं उसे मेरे साथ बात करते हुए देखता हूँ, उसके हृदय में जो बातें हैं उसे बताते और करते हुए देखता हूँ। कई मसीही यदी उसे खोजेंगे तो पाएँगे। यीशु इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ। यह इतना ही आसान है। जिस तरह आप स्वैच्छिक विचार प्राप्त करते हैं, उसी तरह स्वैच्छिक भीतरी दर्शन भी प्राप्त करेंगे। आप यीशु को अपने साथ एक आरामदेह स्थिती में देख सकते हैं। यह इतनी आसानी से होता है की आप शक करने लग जाते हैं की यह शायद आप के विचार हैं, परन्तु यदी आप आगे बढ़ते गये तो आप को विश्वास हो जाएगा की यह विचार सर्वशक्तिमान परमेश्वर में स्थापित है।

परमेश्वर ने स्वयं को अपने वाचा के लोगों को स्वपन और दर्शन द्वारा बताया। उस ने ऐसा उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक किया और कहा की, क्योंकि पवित्रात्मा प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में उण्डेला गया, हमें लगातार स्वपनों और दर्शनों को पाते रहना चाहिए (प्रेरित २:१-४)। यीशु जो हमारा प्रमुख उदहारण है, उसने इस योग्यता को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ सम्पर्क रख कर बताया। उसने कहा की वह आप कुछ नहीं करता, परन्तु वही जो वह अपने पिता को करते देखता है (यूहन्ना ५:१९, २०, ३०)। जीने का कितना बढ़िया तरीका है।

क्या हम उस दैवी तरीके से जी सकते हैं, जैसे यीशु जी रहे थे? मैं समझता हूँ की हाँ। यीशु मसीह की मृत्यु और पुणरुत्थान का एक कारण यह भी था की मंदिर का पर्दा जो लोगों को परमेश्वर से अलग करता था, वह ऊपर से नीचे तक फट गया ताकी हम सीधे परमेश्वर की उपस्थिती में जा सकें और हमे आदेश है की हम करीब जाएँ (इब्रा १०: १९ - २२)। अब समय है की जो कलीसीया का है उसे कलीसीया को लौटा दें।

हेतूवाद स्वभाव के कारण और हेतूवाद सभ्यता में रहने के कारण, कुछ लोगो को इस पुस्तक के सचों को समझने में कुछ समय लग सकता है। उन के इस बात की मदद इसी उत्पादक द्वारा लिखित पुस्तक परमेश्वर से बातचीत , में मिल सकती है।

चाबी # ४ :-

पत्राचार, हमारी प्रार्थनाओं को और परमेश्वर के जवाबों को लिखने से परमेश्वर की आवाज को सुनने में महान स्वतंत्रता का अनुभव होता है।

परमेश्वर ने हबक्कूक से कहा, "दर्शन की बातें लिख दे, वरन् पट्टियों पर साफ साफ लिख दे..." (हब २:२)। यह बात मेरे दिमाग में कभी नहीं आई की मैं हबक्कूक की तरह अपनी प्रार्थना और परमेश्वर के जवाबों को लिखूँ। असल में यह परमेश्वर ने आज्ञा दी हुई है। यदी आप इस बात के लिए वचन को टटोलें तो सैकड़ों अध्याय हैं (भजन संहिता, कई भविष्यवक्ता, प्रकाशितवाक्य) जहां इस बात को बताया गया है। क्यों फिर मैंने इस बारे में नहीं सोचा? क्यों मैंने कोई उपदेश इस पर नहीं सुना?

मैंने इस क्रम को पत्राचार कहने की सोची और मैं इस के साथ अनुभव करने लगा। जब मैं पत्राचार करने लगा तो लम्बे समय तक परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव में बहता रहा। मुझे इसका प्रिक्षण करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि यह मुझे परमेश्वर की ओर से प्राप्त कर रहा हूँ। मुझे पता है की जब बहाव समाप्त होगा तब मैं इस का परिक्षण करूँगा की यब पवित्र वचन से है या नहीं।

जब आप पत्राचार करेंगे तो पहले शक आप को रोकेगा, परन्तु इसे हटा दीजिए और अपने आप को यह बात याद दिलाईए की यह बाईबल से सम्बंधित है और यह की परमेश्वर उपस्थित है और अपने बच्चों के साथ बात कर रहा है। जब हम अपने परिश्रम को छोड़ कर परमेश्वर के विक्षाम में प्रवेश करते हैं तो बहाव बिना रूकावट के बहने लगता है (इब्र ४: १०)। इसलिए, मुसकुराहट के साथ कलम कागज ले कर बैठीए और अपना ध्यान परमेश्वर की और स्तुती और आराधना के द्वारा लगाईए, और उसके चेहरे को खोजीए। जो बहाव आप को मिलता है उस पर शक मत करीए, बस लिखते जाईए। जब बाद में आप अपना पत्राचार पढ़ेंगे तो आप जानेंगे की आप सच में परमेश्वर के साथ बात चीत कर रहे थे।

कुछ अंतिम टिप्पनीयाँ। कोई इस को तब तक न करे जब तक उसने कमसे कम नया नियम न पढ़ ली हो (उत्तम यह होगा की पूरी बाईबल पढ़ लीजिए)। न तो इसे बिना किसी आत्मिक नेत्रत्व के करीए। हर कार्य पर कुछ कार्य करने से पहले उसे पत्राचार में बदलीए। यह मुख्य रीप में बताया जा रहा है की इस पुस्तक की कला को अपनाने से पहले इसी उत्पादक द्वारा लिखित पुस्तकें, परमेश्वर से बंधुत्व और परमेश्वर से बातचीत को पढ़ लें। हबक्कीक का अनुभव आप को मिले।